■ वर्ष 43, अंक 6, अगस्त 2020

■ मूल्य 20 रुपये

साथी स्वाति स्मृति अंक

साथी स्वाति को प्रेरित करने वाली दो रचनाएँ

संकोचेर बिह्वलता निजेर अपोमान
संकटेर कल्पनाते होयो ना मृयमान

मुक्तो करो भय,
आपोना-माझे शक्ति धरो निजेरे करो जय

दुर्बलेरे रोक्खा करो, दुर्जनेरे हानो
निजेरे दीन निःसहाय जेनो कभु ना जानो
दुर्बलेर रोक्खा करो, दुर्जनेरे हानो,

मुक्तो करो भय,
निजेरे पारे करिते भार ना रेखो संशय

धर्मो जबे शंखोरबे कोरिबे आहवान
नीरोब हए नम्र हए पान करिओ प्राण

मुक्तो करो भय,
दुरुहो काजे निजेरे दीयो कोठिन पोरिचय

–रवीन्द्रनाथ ठाकुर

हीनता का आर्त-भाव खुद का है अपमान।
संकट की कल्पना से, मत हो मृत-समान।

छोड़ दो तुम भय,
अपने भीतर शक्ति धरो, खुद पे करो जय।

दुर्बल की रक्षा करो, दुष्ट को हनो।
खुद को दीन-निस्सहाय कभी न मानो।

छोड़ दो तुम भय,
अपने बल पे कर सकोगे, ना रखो संशय।

धर्म जब पुकारे तुम्हें, करे आह्वान।
नीरव-विनत भाव से देना अपने प्राण।

छोड़ दो तुम भय,
काम कठिन, शक्ति का तुम देना परिचय।

हिंदी पद्यानुवाद - प्रियंकर पालीवाल,
हिंदी अनुवाद मूल बांग्ला धुन पर गेय है।

E-mail : priyankarpaliwal@gmail.com

पढिए गीता
पढ़िए गीता
बनिए सीता
फिर इन सबमें लगा पलीता
किसी मूर्ख की हो परिणीता
निज घरबार बसाइये।

होय कंटीली
आंखें गीली
लकड़ी सीली,तबियत ढीली
घर की सबसे बड़ी पतीली
भरकर भात पसाइये।

–रघुवीर सहाय

1952

इस अंक में

राजनैतिक-सामाजिक साथियों की नज़र में...

सच्चिदानन्द सिन्हा, रामचन्द्र राही, कमल बनर्जी, चन्द्रभूषण चौधरी, जोशी जेकब, फादर आनन्द, अफलातून, रंजीत कुमार राय, स्मिता, विनोद पय्याडा, जगनारायण महतो, चौधरी राजेंद्र, नवीन, रामदयाल, रामभरोसे, डॉली दफ्तरी, शिवेंद्र मौर्य, लालबहादुर राम, प्रेम सिंह, जसवीर अरोड़ा, नंदलाल मास्टर, अमित भटनागर, रंजना राय, कृष्णा मोहन्ती, सुभाष गताडे

3-49

शिक्षाधिकार आन्दोलन के साथियों के नज़र में...

प्रिंस गजेन्द्र बाबू, मधु प्रसाद, सुरजीत थोकचोम, विकास गुप्ता, लाल्टू,

49-56

महिला आन्दोलन के साथियों की नज़र में...

मुनिजा रफीक ख़ान, मंजू देवी, कमर जहाँ, रुनु, अलका निगम, अंजलि सिन्हा, राबर्टा क्लिपर,

56-70

शिक्षा जगत के साथी, गुरु व छात्र-छात्राओं की नज़र में..

जेम्स नॉर्मन बार्ड्स्ली, मुदुल मोदी, विद्यानन्द नान्जुन्दैया, राम रामस्वामी, प्रज्ञा दास, विशाखा भट्टाचार्या, अंजुम महताब, शिखा सिंह, मैरी करासको, स्मिता मिश्रा, निष्कल तिवारी, प्रियंका कुमारी, आलोक मिश्रा, के.के. ओझा, मनोज कुमार यादव, मयंक रश्मि, एंजेला गुप्ता, अनु वेणु गोपाल,

70-83

डॉ. स्वाति की कलम से...

लूनाववड़ा की अनाम बहन के नाम,
शिवपती की त्रासदी
लक्ष्मण रेखा के पार

84-88

सामयिक वार्ता

अगस्त 2020, वर्ष 43 : 6

संस्थापक संपादक : किशन पटनायक
संपादक : अफलातून

संपादन सहयोग
प्रो. बलवीर जैन, अरविन्द मोहन, हरिमोहन, राजेन्द्र राजन, सत्येन्द्र रंजन, प्रियदर्शन, अरुण त्रिपाठी, प्रो. महेश विक्रम, लोलार्क द्विवेदी, संजय गौतम, चंचल मुखर्जी, कमल बनर्जी, संजय भारती

परामर्श मंडल
सच्चिदानंद सिन्हा, प्रो. कश्मीर उप्पल, स्मिता
आवरण चित्र : शिउली वनजा
रूप सज्जा : गौरी शंकर

कार्यालय : 20ए, समसपुर जागीर, पांडवनगर, दिल्ली-110091
ईमेल : varta3@gmail.com

सदस्यता शुल्क :

एक प्रति	:	20 रुपए
वार्षिक शुल्क	:	200 रुपए
संस्थागत वार्षिक शुल्क	:	300 रुपए
छह साला शुल्क	:	1000 रुपए
आजीवन शुल्क	:	3000 रुपए

खाता नाम - सामयिक वार्ता
या Samayik Varta
बैंक ऑफ बड़ौदा (Bank of Baroda)
शाखा - सोनारपुरा, वाराणसी
Sonarpura, Varanasi (U.P.)
खाता संख्या **40170100005458**
IFSC Code : BARB0SONARP
(यहाँ दूसरे B के बाद जीरो है, ओ नहीं S के बाद O (ओ) है।)
MICR CODE : 221012030
इस खाते में पैसा जमा करने तथा ग्राहक के पते की सूचना ई-मेल अथवा मोबाइल-
08765811730/ 08004085923

संपादकीय

लयबद्ध संगीत और प्रतिबद्धता

वर्षों पहले, स्वातिजी जब बीएचयू में पढ़ाती थीं,मैं उनके यहां रुका था।शाम के समय रसोई घर में स्वातिजी खाना पका रही थीं और मैं बगल के एक कमरे में बैठा था।रसोई घर से मधुर संगीत का स्वर आ रहा था।स्वातिजी धीमी आवाज में गा रही थीं।जब वह अपना रसोई घर का काम खतम करके आईं तो मैंने कहा कि आप तो बहुत ही अच्छा गाती हैं। तब स्वातिजी ने बतलाया कि उनकी रुचि तो संगीत में बचपन से ही थी और स्कूल में उनके संगीत शिक्षक उनकी प्रशंसा करते थे और प्रोत्साहित करते। ''उन्हें पूरा भरोसा था कि मेट्रिक की परीक्षा के लिए मैं संगीत को ही चुनूंगी। लेकिन मैंने कैरियर के प्रचलित मानकों को ध्यान में रखते हुए विज्ञान को चुना। इससे मेरे संगीत शिक्षक इतने मर्माहत हुए कि उन्होंने मुझसे बोलना तक बंद कर दिया। मैंने संगीत की शिक्षा तो नहीं ली लेकिन संगीत में रुचि सदा बनी रही।'' **खण्डित लय के साथ संगीत नहीं चल सकता और स्वातिजी के स्वभाव में कुछ था जो राजनीति में भी प्रतिबद्धता की अखंडता को कायम रखता था। विशेषकर महिलाओं के अधिकार के सवाल पर वे किसी तरह का समझौता करने को तैयार नहीं होती थीं और उन्मुक्त प्रेम की राह में नारियों पर लगाए गए बंधनों को सदा तिरस्कार के भाव से देखतीं।**

वे बी एच यू में विज्ञान की शिक्षिका थीं जो काफी समय और एकाग्रता की मांग करता था। इसके बावजूद वे समाजवादी जन परिषद के कार्यक्रमों में हिस्सा लेतीं और अपना काफी समय लगातीं। हाल के दिनों में सासाराम के पार्टी सम्मेलन में भी उन्होंने अपना पूरा समय दिया था। उनकी उपस्थिति ने साथियों का मनोबल बढ़ाने में काफी सहायता की थी।

जब देश की राजनीति में गिरावट का दौर है और समाजवादी आंदोलन भी एक संकट काल से गुजर रहा है वैसे समय में उनका हमारे बीच से जाना बहुत बड़ी क्षति है। फिर भी उनकी याद हमारे संकल्प को दृढ़ करने का काम करेगी।

- सच्चिदानंद सिन्हा

(सामयिक वार्ता के इस अंक में स्वाति के 50 वर्ष पहले के छात्र-जीवन के मित्र, 41 वर्ष और बाद की छात्राएं, शोध छात्र और छात्राएं, मुफ्त व समान शिक्षा के लिए चलने वाले आंदोलन के साथी, सांप्रदायिकता विरोधी आंदोलन के साथी, महिला आंदोलन की साथी, शोध के गुरु व सहकर्मी, मित्र व दल के साथियों व अन्य आत्मीयों के स्मृति-लेख दिए गए हैं। स्वाति की लिखी कुछ टिप्पणियां भी प्रकाशित हैं।)

उलटी हो गईं सब तदबीरें, कुछ न दवा ने काम किया

बेहोशी की हालत में शिउली वनजा और इकबाल अभिमन्यु ने जब अस्पताल से एंबुलेंस बुलाई उसके एक दिन पहले स्वाति रांची में हुए समाजवादी जन परिषद के राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लेकर दिल्ली लौटी थीं। दिल्ली से बनारस आम चुनाव में वोट देने आई थीं फिर दिल्ली लौटी। इन सब यात्राओं में तबीयत ढीली थी किंतु बीमारी का अनुमान न था। मल्टीपल मायलोमा, रक्त कैंसर का जो प्रकार स्वातिजी को हुआ था उसकी पहली खतरनाक विशेषता यह है कि आम तौर पर तीसरे स्टेज में ही बीमारी का पता चलता है और तब इलाज शुरु हो पाता है। स्वाति को भी तीसरे स्टेज में पता चल पाया था। ऋजु पहली बार आया तब उसने बीमारी से संबंधित शोध पत्र इंटरनेट से निकाले। मेरी बहन डॉ संघमित्रा ने भी इस बीमारी के बारे में जानकारी देने वाले शोध पत्र पढ़े तथा उन्हें लेकर आई। स्वाति ने कुछ शोध पत्रों को सरसरी तौर पर देखा। 1979 में काशी विश्वविद्यालय में नौकरी शुरु करने के बाद सामूहिक स्वास्थ्य बीमा के लिए अंशदान देती आई थी तथा अवकाश प्राप्ति के बाद मृत्यु पर्यंत विश्वविद्यालय की स्वास्थ्य बीमा का लाभ हम दोनों को मिला हुआ था। इस बाबत उनका स्पष्ट कहना था कि मैंने ईमानदारी से विश्वविद्यालय की सेवा की है इसलिए इलाज में कोताही नहीं होनी चाहिए। शुरुआत में ही चिकित्सकों ने यह बता दिया था कि बीमारी लाइलाज है किंतु नियंत्रण में होने पर जीवन बेहतर रहता है। पूरी बीमारी में चिकित्सा प्रक्रिया में स्वाति का पूर्ण सहयोगी रवैया रहता था। हम दोनों को यह भरोसा था कि वे लंबा समय सामान्य सक्रियता की स्थिति में आ जाएंगी।

इलाज के शुरुआत में ही वे करीब दो दिन तक बेहोश रहीं। बेहोशी से निकलीं तो दवाइयां और चिकित्सक बदले गये। मुख्य दवा को कुछ समय पहले ही अमेरिका में इस्तेमाल की इजाजत मिली थी। इस दवा का खर्च यदि सरकार से न मिले तो भारतवर्ष में बिरले ही इसका इस्तेमाल कर सकते हैं। एक समाजवादी कार्यकर्ता की चिकित्सा की चर्चा हो रही है इसलिए कैंसर के पूंजीवाद को भी पाठकों को जान लेना चाहिए। इस दवा की एक सूई की कीमत 1 लाख 71 हजार रुपए थी तथा इसकी कंपनी का नाम जेंसन है। बच्चों के साबुन,तेल,शैंपू,पाउडर बनाने वाली कंपनी जॉनसन एंड जॉनसन की ही दवा बनाने वाली इकाई जेंसन है। अमेरिका में चले मुकदमे में यह साबित हुआ है कि इस कंपनी के पाउडर के इस्तेमाल से कैंसर होता है। यह सिद्ध होने के बाद कंपनी ने अमेरिकी नागरिकों को अरबों डॉलर का मुआवजा भरा है। इस प्रकार कैंसर की भीषण मंहगी दवाई के मुनाफे से अपने दूसरे उत्पाद से हुए कैंसर का मुआवजा दिया जा रहा है।

अवकाशप्राप्ति के बाद आवासीय फ्लैट खरीदने के बाद तत्काल और लगातार इस इलाज का धन देना दिक्कत खड़ी कर सकता था परंतु मित्रों के सहयोग से कभी भी दवा छूटी नहीं।

इस बीमारी का असर गुर्दों पर तथा अस्थि मज्जा पर पडता है। स्वातिजी को जब भर्ती किया गया तब ही गुर्दे काम नहीं कर रहे थे। उस मंहगी दवा के चार महीने चलने के बाद उन्हें सामान्य मात्रा में पेशाब होने लगी तथा करीब तीन माह तक डायलिसिस की जरूरत नहीं पडी। दिसंबर के अंत में हम लोग बनारस आ गए। सभी जांचों के बाद डॉक्टरों ने कहा था कि कैंसर नियंत्रण में है। स्वाति को दो छोटे ऑपरेशनों की आवश्यकता थी जिसे डॉक्टर टालते रहे। कोविड19 की तालबंदी शुरु होने के बाद अस्पताल में डॉक्टरों ने आना बंद कर दिया। गहन चिकित्सा कक्ष में भी गैर कोविड मरीजों के लिए कोई भी बिस्तर आज तक (साढे चार माह हो गए) उपलब्ध नहीं है। पूर्वी उत्तर प्रदेश के इस सबसे बडे अस्पताल का बहिरंग विभाग (ओ पी डी) भी आज तक बंद है। स्वातिजी जिस रोज गुजरीं हम डायलिसिस के लिए अस्पताल में थे। उनका रक्त चाप गिरने लगा तब ड्यूटी पर मौजूद रेसिडेंट डॉक्टर ने कहा कि ऐसी स्थिति में हम इन्हें गहन चिकित्सा इकाई में ले जाते परंतु वह सिर्फ कोविड19 मरीजों के लिए खुला है। 2 मई को साढे आठ बजे स्वाति की सांस थम गई।

स्वाति बेगम अख्तर की मुरीद थीं। अपने मीठे गले से वे उनकी गजलें गाती थीं। मीर तकी मीर की यह ग़ज़ल भी उन्हें पसंद थी। गजल प्रासंगिक हो गई थी, 'उलटी हो गईं सब तदबीरें, कुछ न दवा ने काम किया। देखा इस बीमारी ए दिल ने, आखिर काम तमाम किया।'

हमारी बेटी प्योली अगली शाम तक सड़क मार्ग से नोएडा से बनारस पहुंच रही थी। ट्रॉमा सेंटर की मोर्च्युरी में शून्य से 30 डिग्री कम तापमान पर पार्थिव शरीर को रखा गया। ऋजु अमेरिका के बॉस्टन शहर में कैंसर वैज्ञानिक है। भारतीय दूतावास ने उसे बता दिया कि व्यावसायिक उड़ानें नहीं हैं। प्योली के पहुंचने पर पार्थिव शरीर को अपनी हाउसिंग सोसाइटी में लेकर आए। अंतिम यात्रा की शुरुआत साथी स्त्रियों ने कंधा दे कर की। नारे लगे - साथी तेरे सपनों को,हम मंजिल तक पहुंचाएंगे,नारी के सहभाग बिना हर बदलाव अधूरा है,जब तक भूखा इंसान रहेगा-धरती पर तूफान रहेगा,कमाने वाला खाएगा-लूटने वाला जाएगा- नया जमाना आएगा,नया जमाना कौन लाएगा-हम लाएँगे, इंकलाब जिंदाबाद,डॉ स्वाति अमर रहें।

पार्टी के झंडे की पृष्ठभूमि वाले एक बैनर को सबसे ऊपर लगाया गया था। मुखाग्नि बेटी प्योली ने दी। अरथी सजाते वक्त उषाजी ने कहा सिंदूर लगाना है। प्योली ने उनसे पूछा,'अम्मा को सिंदूर लगाए कभी देखा है?' बिन्दी और चूड़ी थी। घाट पर पार्टी बैनर हटाने के बाद खादी की हरी साड़ी ओढाई गई। मेरी मामी स्व. सुमित्रा चौधरी के हाथ कते सूत की यह साड़ी थी। अंतिम यात्रा के लिए शासन ने 20 लोगों की इजाजत दी थी। यात्रा में हम बीस ही थे किंतु घाट पर 16 अन्य साथी भी मौजूद थे। सजप के अलावा बनारस के सामाजिक सरोकारों के संगठन तथा वाम दलों के साथी शरीक थे।

हरिशचंद्र घाट पर अंत्येष्ठी के बाद केदार घाट से हम लौटे। यह केदार और गौरी का साथ-साथ दक्षिण भारतीय मंदिर है। स्वाति आस्तिक थीं और इस मंदिर में उन्हें शांति और सुकून मिलता था। तालाबंदी में मंदिर बंद था। घाट की सीढियों पर हम सबने केदार-गौरी और स्वाति का स्मरण किया। —अफलातून

नई राजनैतिक संस्कृति की सौम्य कार्यकर्ता - स्वाति

अफलातून

अमेरिका में शोध करते हुए वियतनाम युद्ध विरोधी कार्यक्रम, बांग्लादेश मुक्ति संघर्ष समर्थन तथा भारत पर थोपे गये आंतरिक अपातकाल के विरुद्ध कार्यक्रमों में साथी स्वाति ने शिरकत की थी। यदि इन्हें नजरअंदाज न किया जाए तो उनका राजनैतिक सफ़र आधी सदी से अधिक का था। स्वाति इस शुरुआती दौर में सर्वाधिक प्रभावित ओमप्रकाश दीपक से हुईं। उनका स्नेह पाया। समाजवाद की लोहियावादी व्याख्या यहीं से जज्ब करने की चेष्टा की। दीपकजी ने हिंदी में विज्ञान-लेखन करने के लिए उनसे कहा था। तत्काल इसे पूरा नहीं कर पाईं परंतु बाद में सामयिक वार्ता में छोटी टिप्पणियां लिखी। काशी विश्वविद्यालय में हिंदी में विज्ञान के लिए समर्पित समूह विज्ञान परिषद, प्रयाग से भी सक्रियता से जुड़ गई थीं। बाद में विज्ञान परिषद के एक द्विवार्षिक सम्मेलन में 'विज्ञान के नए क्षितिज पर' हिंदी में शोध-पत्र प्रस्तुत किया। पढ़ाने के दरमियान समझाने के लिए हिंदी में भी बोलने को अपनाने में संकोच छोड़ दिया था। संकोच इसलिए कि परीक्षा अंग्रेजी में होती है।

स्कूली पढ़ाई पूरी करते ही उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर दी जानी वाली विज्ञान प्रतिभा छात्रवृत्ति मिलनी शुरु हो गई। यह छात्रवृत्ति शोध के स्तर तक मिलती है यदि तब तक की पढ़ाई में सतत परिणाम अच्छे आए हों। आई. आई . टी. मुंबई से एम.एससी के बाद स्वाति शोध कार्य टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च (टी आई एफ आर) में करना चाहती थी,विदेश में नहीं। यह संस्थान अपने उच्च स्तरीय शोध के लिए न सिर्फ भारत में अपितु दुनिया भर में जाना जाता है। आई आई टी के एक अध्यापक ने टी आई एफ आर में शोध के लिए आवश्यक सिफारिशी पत्र नहीं दिया। टी आई एफ आर के प्रति स्वाति के मन में बहुत सम्मान और आकर्षण था। उनके पितृतुल्य बड़े भाई (साथी स्मिता के पिताजी) जब तक कोलाबा में रहते थे और स्वाति उनके पास आई हुई होती थीं तब टी आई एफ आर के पुस्तकालय अवश्य जाती थीं। यह संस्थान कोलाबा के बहुत निकट है।

1979 में भारत लौटने के बाद उन्होंने रुड़की विश्वविद्यालय में अस्थाय़ी पद पर पढ़ाना शुरु किया। यहां उनके शोध के क्षेत्र में काम करने वाला एक समूह भी था परंतु भौतिकी में शोध करने से उनका नाता टूटना था और महामना की तपोभूमि में खास तौर पर छात्राओं की विज्ञान शिक्षा, समता संगठन और काशी से नाता जुड़ना था। मूल रूप से काशी विश्वविद्यालय के महिला महाविद्यालय में बी एससी भौतिकी आनर्स पढाने के अलावा उन्होंने एम एससी भौतिकी 10 वर्ष तथा एम एससी बायोइन्फॉर्मैटिक्स 4 वर्ष पढ़ाया। महिला महाविद्यालय की विज्ञान शिक्षिकाएं शोध करा सकें, वहां की छात्राएं कंप्यूटर साइंस और बायोइन्फोर्मैटिक्स पढ़ सकें इसमें मुख्य पहलकदमी स्वाति की थी।

विश्वविद्यालय में प्राथमिक दायित्व पढ़ाना था। मुझे बहुत खुशी है कि पढाने के बारे में उनसे पढ़ने वाले कुछ छात्र-छात्राओं की स्मृतियां इस अंक में जुटा सका हूं। किसी समाजवादी शिक्षक की चर्चा करते वक्त हमें कुछ बुनियादी बातों को ध्यान में रखना चाहिए। शिक्षा केन्द्रों की अपनी एक दुनिया है, और वे व्यापक दुनिया का हिस्सा भी हैं। व्यवस्था की यथास्थिति को बरकरार रखने के लिए, इस छोटी दुनिया से ही कुछ छंटे हुए लोग निकलते हैं। व्यापक तौर पर प्रचलित राजनीति, सामाजिक मूल्य, भ्रष्टाचार, मानवाधिकारों की स्थिति और सत्ता – सन्तुलन का प्रतिबिम्ब इस छोटी दुनिया में भी दिखाई देता है। आभिजात्य वर्ग के निर्माण के लिए छँटनी के कई स्तर यहाँ सिर्फ परीक्षा द्वारा नहीं बने हैं। जाति, वर्ग, लिंग, क्षेत्र व भाषा के भेदों को भी दमन के आधार व स्तरीकरण के लिए इस्तेमाल किया जाता है। बाजार में मांग के अनुपात में भी प्रशासन इस छोटी-सी दुनिया के भीतर अलग-अलग स्तर का दमन करता है। स्वाति इन दोनों दुनिया में समाजवादी सोच के साथ सक्रिय रहीं। इस लेख तथा अंक में दोनों दुनिया में स्वाति की सक्रियता और योगदान की चर्चा साथ-साथ चलेगी।

विश्वविद्यालय से जुड़े कुछ 'पुराने समाजवादियों' के साथ मिलकर स्वाति की तरह के 'नये समाजवादियों' ने 'समाजवादी अध्ययन केंद्र' की स्थापना की। अध्ययन केंद्र द्वारा 'मार्क्सवाद और समाजवाद' जैसे विषयों पर गोष्ठी-श्रृंखला भी चलाई जाती वहीं 'पुराने समाजवादी' जनेश्वर मिश्र जैसे लोगों के भाषण कराने से भी नहीं चूकते थे। इन पुराने लोगों को आगे चलकर चंद्रशेखर, मुलायम सिंह,अन्ना हजारे और केजरीवाल जैसे नेताओं में भी समाजवाद का भविष्य दिखा। 'समता संभावना' नाम से एक अच्छी वैचारिक पत्रिका भी अध्ययन केंद्र द्वारा प्रकाशित हुई। निबंध प्रतियोगिता भी आयोजित हुई। वैचारिक गोष्ठियों में प्रौद्योगिकी संस्थान में पढ़ने वाले छात्रों के एक मार्क्सवादी समूह से जुड़े कुछ छात्र 'मार्क्सवाद और समाजवाद' वाली गोष्ठी-श्रृखंला में शुरु-शुरु में आ रहे थे। इन लोगों ने चर्चा में हिस्सा भी लेना शुरु किया। लाजमी तौर पर ये लोग लौट कर इन चर्चाओं के बारे में अपने वरिष्ठ साथियों को बताते थे। जल्द ही इस समूह के छात्रों का अध्ययन केंद्र की गोष्ठी में आना बंद करा दिया गया।

1977 में केंद्र में बनी पहली गैर कांग्रेसी सरकार के गिरने के बाद बंगलुरु में लोहियावादियों के युद्धरत मधु लिमये और राजनारायण धड़ों से अलग समाजवादियों ने एक नया राजनैतिक संगठन बनाने के लिए 1980 में पहल की। सम्मेलन का मेजबान संगठन लोहियावादी किसान नेता प्रोफेसर एम डी नांजुंदस्वामी के नेतृत्व में गठित कर्नाटक राज्य रैयत संघ था। इस सम्मेलन में समता संगठन का गठन हुआ। रैयत संघ इसमें शामिल नहीं हुआ। रैयत संघ का कहना था कि हम राज्य स्तर पर राजनैतिक समन्वय करेंगे। उनकी रणनीति को सफलता भी मिली जब कर्नाटक दलित संघर्ष समिति और रैय्यत संघ ने मिलकर विधान सभा चुनाव में अच्छी सफलता हासिल की। स्वाति रैयत संघ के समता संगठन में शामिल न होने के पीछे अन्य वजह भी देखती थीं। बंगलुरु सम्मेलन में उत्तर भारत से गये कुछ 'पुराने समाजवादी' भोजन के समय आयोजन से जुड़े कार्यकर्ताओं से बहुत अशिष्ट तरीके से,झिड़क कर इशारेबाजी करते थे। भाषा और भोजन के फर्क से ज्यादा जाति-स्वभाव या सामंती संस्कार न छोड़ पाना ऐसे बर्ताव का कारण था। स्वाति का यह मानना था।

'सात क्रांतियों' और इतनी ही तरह की गैरबराबरियों के संदर्भ में आचरण संबंधी एक बहुत सहज,सरल बात स्वाति हमेशा ध्यान में रखने के लिए कहती थीं। 'गैर बराबरियों के जिन आयामों में हम शोषक की स्थिति में होते हैं वहां हम शोषण नहीं देख पाते हैं। शोषण के उन्हीं स्वरूप को देख पाते हैं जिन रूपों में हम शोषित होते हैं। ' मसलन उत्तर प्रदेश,बिहार की सोशलिस्ट पार्टी जितने उत्साह से अंग्रेजी हटाओ आंदोलन को अपनाती थी उतना उत्साह स्त्री-पुरुष समता के कार्यक्रमों में नहीं दिखता था। पार्टी की कमीटियों, चुनाव लड़ने के टिकटों तथा पार्टी के ओहदे देने में 'साठ सैंकडे' में औरत साथी नहीं दिखती थीं। इस बात को

अपने जीवन में सहज ढंग से आत्मसात करने की वजह से स्वाति नई राजनैतिक संस्कृति की नेता बन पायीं। ऐसे मौके ऐतिहासिक साबित होते हैं जब सिद्धांतों को अमल करने की कसौटी पर खरा उतरना होता है। 1989 में मंडल कमीशन की सिफारिशों को लागू करने की घोषणा के साथ ही सामाजिक यथास्थिति में कुछ उथल पुथल होनी थी। देश के पूंजीपतियों की संस्थाएं फिक्की, एसोकेम भी यह नहीं चाहती थी कि ये सिफारिशें लागू हों। बोट क्लब में आरक्षण के खिलाफ रैली हुई। इस रैली में महेंद्र सिंह टिकैत के साथ 'समाजवादी अध्ययन के केंद्र' की टीम के 'पुराने समाजवादी' भी शरीक हुए। साथी सुनील ने काशी विश्वविद्यालय के ग्रंथालय में मंडल आयोग की सिफारिशों को पढ़ा तथा परिसर के निकट नरिया स्थित गणेश वर्णी जैन छात्रावास में उसे छात्रों के समक्ष पहली बार समझा कर प्रस्तुत किया। स्वाति इन कार्यक्रमों में तथा बनारस शहर में आरक्षण के पक्ष में होने वाले कार्यक्रमों में भाग लेती थीं। बनारस में मंशाराम एडवोकेट, श्रीप्रकाश मौर्य,जगन्नाथ कुशवाहा जैसे बुद्धिजीवियों के साथ काशी विश्वविद्यालय की अध्यापक के नाते आंदोलन को अनुभव भरा सहारा देती थीं।

विश्वविद्यालय परिसर में भ्रष्टाचार की दो घटनाओं का जिक्र करना बहुत जरूरी है। 1981 की बी एससी परीक्षा परिणाम में जिस छात्रा वीणा शर्मा को प्रथम स्थान पाकर स्वर्ण पदक देने की घोषणा की गई थी उससे 90 अंक अधिक पाने वाली छात्रा प्रज्ञा सिंह का नाम मेरिट लिस्ट से गायब था। वीणा के पिता विश्वविद्यालय के परीक्षा विभाग के अधिकारी थे तथा एक नियम की गलत व्याख्या करके उन्होंने प्रज्ञा का नाम गायब करा दिया था। प्रज्ञा के पिता की मृत्यु हो चुकी थी तथा उसकी माताजी ने अपनी कड़ी मेहनत से तीनों बच्चों को पढ़ाया था। आज तीनों बच्चे प्रतिष्ठित संस्थानों में वैज्ञानिक हैं। बहरहाल,स्वातिजी को विश्वविद्याल के परीक्षा विभाग की इस कारस्तानी पर आश्चर्य था। वे वीणा और प्रज्ञा दोनों की शिक्षक थीं। परीक्षा से संबधित सर्वोच्च समिति 'परीक्षा समन्वय बोर्ड' सदस्य सभी संकायों के संकाय प्रमुख होते थे। उनसे न्याय की गुहार लगाई गई। दरख्वास्त का मसविदा स्वाति ने तैयार किया। प्रज्ञा को छिना हुआ पदक वापस मिला।

भारत सरकार द्वारा 1987 -88 मे महिला सशक्तीकरण की एक बडी परियोजना (सामाख्या) शुरू करने जा रही थी। महिला आंदोलन से जुड़ी प्रतिष्ठित संस्था 'जागोरी' भी केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय के जरिए इस योजना से जुड़ी थी। स्वाति जागोरी के कामकाज के तरीके से प्रभावित थीं। केंद्रीय शिक्षा सचिव अनिल बोर्डिया ने काशी विश्वविद्यालय के कुलसचिव के जरिए स्वाति को इस परियोजना के शुरु होने के पहले की बैठक में निमंत्रित किया। इस अंक में जागोरी और सामाख्या से जुड़ी स्वाति की बांधवी रुनु का लेख है। रुनु लिखती हैं कि स्वाति सामाख्या से क्यों नहीं जुड़ीं,पता नहीं। जागोरी के साथियों को पूरी उम्मीद थी कि वे शामिल होंगी। स्वाति शिक्षा मंत्रालय द्वारा बुलाई गई बैठक में शामिल हुईं। विश्विद्यालय ने उन्हें 'ड्यूटी-लीव' दी। बैठक में स्वाति को 'सामाख्या' के बारे में दस्तावेज दिए गए। मंत्रालय का कहना था कि वे चाहें तो विश्वविद्यालय के वेतन पर ही उन्हें 'सामाख्या' में कोई बड़ी जिम्मेदारी दी जाएगी। बनारस लौट कर स्वाति ने 'सामाख्या' के बारे में दिए गए दस्तावेज पढ़े। प्रदेश के किन जिलों में यह परियोजना चलेगी इसे तय करने में एक प्राथमिकता को देख कर स्वाति चौकन्नी हो गई। यह कहा गया था कि जिन जिलों में किसी योरपीय देश की संडास बनाने की परियोजना चल रही होगी उस जिले में महिला सशक्तीकरण की 'सामाख्या' परियोजना चलाने में प्राथमिकता दी जाएगी। विदेशी मदद से चलने वाली परियोजना के बारे में समता संगठन में चर्चा चली थी तथा 1982 में ही ऐसी परियोजना से न जुड़ना का फैसला संगठन के बनारस में हुए राष्ट्रीय सम्मेलन में हो चुका था। इस प्रकार का स्पष्ट नीतिगत और वैधानिक निर्णय लेने वाला समता संग़ठन पहला राजनैतिक संगठन था। इस निर्णय के कारण समता संगठन से कुछ लोग अलग हो गये थे। स्वाति ने शिक्षा मंत्रालय को समता संगठन का निर्णय समझाते हुए परियोजना से न जुड़ने के निर्णय बता दिया।

अपने कॉलेज की प्रवेश समिति में वे बरसों संयोजक रहीं। इसके बाद विश्वविद्यालय स्तरीय 'प्रवेश समन्वय समिति' की सदस्य रहीं। 'अद्यतन जाति प्रमाणपत्र' मांगे जाने पर वे नौकरशाही से सवाल करतीं कि क्या समय के साथ जाति बदल जाती है? इसी प्रकार खुली स्पर्धा वाली सीटों पर जब आरक्षित वर्गों के बच्चे चुन कर आते तब उनकी गिनती उनके लिए निर्धारित कोटा में नहीं होनी चाहिए लेकिन इससे उलट उनकी गिनती कोटा के अंतर्गत कर लेने की कोशिश प्रशासन और शिक्षकों में मौजूद शातिर तत्वों द्वारा की जाती थी। ऐसे मौकों पर स्वातिजी यह इत्मिनान से समझाती थी कि ऐसा करना गैर आरक्षित वर्गों को 50 फीसदी सीटें आरक्षित कर देना होगा,जो सामाजिक न्याय तथा

संवैधानिक प्रावधानों के विरुद्ध होगा। विश्वविद्यालय स्तरीय समिति में प्रोफेसर आर सी यादव से ऐसे मामलों में उन्हें पूर्ण समर्थन मिलता था।

विश्वविद्यालय द्वारा प्रवेश परीक्षा की शुरुआत किए जाते वक्त स्वातिजी ने छात्रों द्वारा आयोजित सेमिनार में यह तार्किक ढंग से समझाया था कि इस बदलाव से विज्ञान संकाय में पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा पश्चिमी बिहार के किसान घर के बच्चों का दाखिला रुकेगा तथा उनका स्थान केंद्रीय बोर्ड के पाठ्यक्रम वाले,कोचिंग करने वाले झारखण्ड,बिहार के औद्योगिक शहरों के छात्र लेंगे। आंदोलनकारी छात्रों को स्नातकोत्तर दाखिले से मतलब था वे स्नातक प्रवेश परीक्षा के बारे में गंभीर नहीं थे। फलस्वरूप विश्वविद्यालय के विज्ञान संकाय में पूर्वांचल के किसान-घर के बच्चों का स्थान झारखंड-बंगाल के औद्योगिक शहरों के बच्चों ने ले लिया है।

आज कल उत्तर प्रदेश में 69,000 शिक्षकों की भर्ती के लिए आयोजित परीक्षा में प्रशासन में मौजूद भ्रष्ट तत्वों की मिली भगत से प्रश्न-पत्र बेचने का बड़ा घोटाला चर्चा में है। विद्यार्थी युवजन सभा के हमारे साथी इस भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठा रहे हैं। यह परीक्षा रद्द नहीं हुई तो लाखों शिक्षित बेरोजगार युवजनों के साथ अन्याय होगा। ऐसे मामलों में प्रशासन में मौजूद भ्रष्ट तत्व चंद प्रश्नों के 'आउट' होने की बात कबूल लेते हैं और उतने प्रश्नों को निरस्त कर परिणाम का ऐलान कर देते हैं। कायदतन तो परिणाम के ऐलान के बाद भी परिणाम के अन्य वर्षों के परिणामों से तुलना करते हुए सांख्यिकीय विश्लेषण से साबित किया जा सकता है कि पूरा पर्चा आउट हुआ था अथवा नहीं। पर्चा पहले से पाए हुए परीक्षार्थी परिणाम निकलने के बाद रद्द किए जाने पर अदालत की शरण में अवश्य जाते हैं। काशी हिंदू विश्वविद्यालय से जुड़े चिकित्सा विज्ञान संस्थान में एम बी बी एस के दाखिले के लिए होने वाले प्री-मेडिकल टेस्ट में भी एक बार पूरा पर्चा कुछ प्रभावशाली लोगों को परीक्षा के पहले ही मिल गया था। परीक्षा होने के तुरंत बाद शिकायतें हुइ तो 5 प्रश्न रद्द कर दिए गए। पूरी परीक्षा रद्द होने के आसार नजर नहीं आ रहे थे। ऐसे में कंप्यूटर सेंटर में परिणाम तैयार करने के लिए जिम्मेदार वैज्ञानिक ने देखा कि ऐसा परिणाम बिना पूर्ण परचा के 'आउट' हुए बगैर नहीं आ सकता था। उस वैज्ञानिक के हाथ में परिणाम रद्द करने का अधिकार न था तथा वह यदि शिकायत की पहल करता तो प्रशासन में मौजूद पर्चा बाहर कराने वाले तत्व उसे अनसुना कर देते। उस वैज्ञानिक ने अपनी मित्र के माध्यम से परिणाम घोषित होने के पूर्व उसके बारे में स्वाति तक सूचना पहुंचाई। उन्हें भरोसा था कि स्वाति भ्रष्टाचार के इस मामले से निबटने में कोई कसर नहीं छोडेंगी। उक्त परिणाम के अनुसार एक प्रोफेसर की दो बेटियों ने पी.एम.टी. में पहला और दूसरा स्थान पाया था। जबकि यह दोनों बहनें बी.एससी. में सामान्य तौर पर प्रवेश नहीं पा रही थी। 30-32 सीटों के लिए होनी वाली अखिल भारतीय परीक्षा में सिर्फ बनारस के आसपास के विद्यार्थी सफल होने जा रहे थे। परिणाम की ऐसी कई विशिष्टताओं को 'आज' तथा 'स्वतंत्र भारत' से जुडे दो समाजवादी पत्रकार साथियों सुशील त्रिपाठी व तुलसीदास मिश्रा ने छाप दिया। अगले दिन विश्वविद्यालय की कार्यकारिणी की बैठक आहूत थी। बैठक में इन दोनों अखबारों में छपी खबरों पर विचार हुआ तथा कार्यकारिणी के सदस्यों ने कंप्यूटर सेंटर जाकर उसकी हकीकत जांची। तथ्यों की पुष्टि हुई। कंप्यूटर के मैग्नेटिक टेप आदि सील किए गए तथा प्री मेडिकल टेस्ट रद्द कर दिया गया।

विश्वविद्यालयों में मठाधीश अध्यापक स्वार्थ सिद्धि के लिए अपनी जाति के अध्यापकों और छात्र नेताओं का इस्तेमाल करते हैं। ऐसे लोग विश्वविद्यालय समुदाय के व्यापक हित के लिए कभी सामने नहीं आते। विश्वविद्यालय प्रशासन की चापलूसी करने के मौके तलाशते रहते हैं। ऐसे में स्वातिजी की अनूठी स्थिति से अवगत कराने के लिए कुछ प्रसंग बताना जरूरी है। विश्वविद्यालय में करीब दो हजार दैनिक वेतन भोगी कर्मचारी बीस-बीस सालों से मामूली वेतन पर कार्यरत रहे हैं। इन लोगों ने लंबे संघर्ष के बाद स्थायी नौकरी पाने के लिए विश्वविद्यालय की कार्यकारिणी से नीति बनवा ली। प्रशासन में मौजूद भ्रष्ट तत्वों का नौकरी दिलाने का गलत जरिया इस नीति को लागू करने से बंद हो जाता। इन दैनिक वेतन भोगी कर्मचारियों की लड़ाई में सजप सहयोगी थी। आंदोलन के दरमियान तेलुगुभाषी कुलपति से दैनिक वेतनभोगी कर्मचारियों की वार्ता की नौबत आई तब किसी भी प्रशासनिक अधिकारी द्वारा अनुवाद करने को कर्मचारियों ने इंकार कर दिया। कुलपति ने पूछा कि किसके अनुवाद पर आप लोग भरोसा करेंगे? दैनिक वेतन भोगी कर्मचारियों ने स्वाति का नाम दिया। इस दायित्व को निभाने से ज्यादातर अध्यापक बचना चाहते। बाद में इसी कुलपति ने स्वाति को बुलाकर दैनिक वेतनभोगी कर्मचारियों के हित में मेरे काम करने को लेकर शिकायत की। स्वाति ने स्पष्ट तौर पर कहा कि वे मुझे निष्क्रिय होने के लिए कत्तई नहीं कह सकतीं।

समता संगठन के दौर में हम लोगों ने यह ध्यान दिया कि उत्तर प्रदेश बिहार के समाजवादी डॉ लोहिया द्वारा दिए गए वोट,फावडा,जेल के सूत्र में से रचनात्मक कार्य के प्रतीक फावडे को बिल्कुल नजरंदाज करते हैं। महाराष्ट्र, गुजरात और दक्षिण भारत में रचनात्मक कार्यों की स्वस्थ परंपरा रही है। जिस आदर्श समाज और व्यवस्था का हम सपना संजोते हैं उसका अक्स अपने समूह के सदस्यों के आचरण में हो तथा रचनात्मक कार्यों में झलकना चाहिए। इस तरह के कामों एवं आचरण से गैर हथियारबंद संघर्ष की शक्ति का निर्माण होता है। सजप गोरखपुर के वरिष्ट साथी अश्विनी कुमार बताते थे कि उनकी पत्नी पार्टी के सम्मेलन में उनके साथ गई थीं तब डॉ लोहिया ने उनसे पूछा कि अश्विनी तुम्हें मारता तो नहीं है?आचार संहिता में पत्नी के साथ मारपीट,स्त्री पर जाने वाली गालियों का प्रयोग,दहेज लेना तथा देना पर रोक के अलावा नर-नारी समता से जुड़ी एक और शर्त स्वाति की सलाह पर जोड़ी गई थी। प्रत्येक सक्रिय पुरुष साथी कम से कम एक श्रमसाध्य घरेलू काम करेगा। जसस के दौर में जब महाराष्ट्र के समता आंदोलन और युक्रांद के साथियों के परिवारों में जाने के मौके मिले तब यह घरेलू काम वाली शर्त बिना प्रयास पहले से सहज ढंग से पूरी होती दिखती थी। स्वाति इस बात का जिक्र उत्तर प्रदेश और बिहार के साथियों के बीच हमेशा करती थीं। छित्तूपुर के जिन दलित पिछडे बच्चों को पेड़ के नीचे पढ़ाने स्वाति और मैं जाते थे उन्हें पचास मीटर दूर स्थित सरकारी प्राथमिक पाठशाला के शिक्षक ने दाखिला देने से इंकार कर दिया था। हम लोगों की खेल, कविता,और पढाई साथ-साथ का यह असर हुआ कि अगले सत्र में सरकारी शिक्षक ने उन बच्चों को घर से बुला कर दाखिला दिया।

दस साल तक चुनाव न लड़ कर बुनियादी इकाइयां बनाने की बात समता संगठन ने तय की थी। इस मियाद के बाद प्रयोग के तौर पर बिहार में दिनारा तथा म प्र में पिपरिया में विधान सभा का चुनाव लड़ा गया तथा संबलपुर लोक सभा का। स्वाति ने दिनारा क्षेत्र के एक परिवार में औरतों से मतदान के पहले पूछा कि वे वोट देने तो जाएंगी,न?जवाब मिला कि हमारा वोट तो 'गार्जन' (गार्जियन) ही डालते हैं। इस जमीनी हकीकत से रू ब रू होंना स्वाति के लिए चौंकाने वाला था। वे बहुत दिनों तक विचलित रहीं। औरतों के वोट देने के लिए घर से न निकलने की परंपरा को समझने का नतीजा यह हुआ कि जब स्थानीय निकाय चुनाव में आरक्षण लागू होने के बाद साथी रामजनम की पत्नी मिनता चुनाव लड़ीं और स्वाति को प्रचार के लिए बुलाया गया तब स्वाति ने यह शर्त रखी कि मिनता मेरे साथ प्रचार के लिए निकलेंगी तब ही मैं प्रचार और सभा में भाग लूंगी। मिनता के साथ प्रचार से लौटते वक्त उनसे पूछा भी कि घर से निकल कर प्रचार करना कैसा लगा? मिनता ने कहा बहुत अच्छा। इसी प्रकार नगर निगम के चुनाव में साथी काशीनाथ की पत्नी अमिता दल की प्रत्याशी थीं और उन्होंने भी प्रचार,सभा में हिस्सा लिया।

स्त्री-उत्पीड़न की बड़ी घटनाओं के प्रतिवाद में कई बार स्वतःस्फूर्त बहुत भारी गुस्सा उबल पड़ता है। शुरुआती गुस्से के बाद जब न्याय प्राप्ति की लंबी लड़ाई चलती है तब सिर्फ राज्य की मशीनरी के भरोसे नहीं रहा जा सकता है। नारी संगठन यदि मुस्तैद न रहें तो न्याय के मोर्चे पर अंजाम तक पहुंचना कठिन हो जाता है। हर कदम पर उत्पीड़क को बचाने के लिए उसके सहानुभूतिक तत्पर रहते हैं। विश्वविद्यालय के छात्र स्वास्थ्य केंद्र में नियुक्त डॉ नरेंद्र तिवारी ने अपनी पत्नी वीणा तिवारी की हत्या कर दी थी। पूरा परिसर उद्वेलित हो उठा था। महिला शिक्षिकाएं,शिक्षकों की पत्नियां,छात्र – छात्राएं सडक पर आ गए थे। कुलपति निवास का प्राङण प्रदर्शनकारियों से भर गया था। हत्यारे की गिरफ्तारी के बाद तात्कालिक गुस्सा कम हो गया और इसके साथ ही हत्यारे के सहानुभूतिक सक्रिय हो उठे। ऐसी स्थिति में नारी एकता भी सचेत और सक्रिय हो उठी थी। हत्यारे का सहानुभूतिक पूर्वी प्रदेश का कुख्यात माफिया हरिशंकर तिवारी था। बाद में यह कई बार विधायक रहा तथा कई पार्टियों की सरकारों में मंत्री। सबसे पहले मुझे धमकाने की कोशिश की गई। फिर गवाह अदालत तक न पहुंचें इसकी कोशिश हुई। नारी एकता यहीं से सक्रिय हो गई। विश्वविद्यालय के सुरक्षा तंत्र से यह कहा गया कि सभी गवाहों को परिसर से कचहरी तक विश्वविद्यालय के वाहन से ले जाया जाएगा तथा विश्वविद्यालय के सुरक्षाकर्मी भी साथ होंगे। इस मामले में न्याय प्राप्ति में एक और बात बहुत मजबूती देने वाली थी। वह यह था कि वीणा के पिता ने भी अपना वकील खड़ा किया। सत्र न्यायालय से फांसी की सजा हो गई। हत्यारे डॉक्टर ने जेल में तब तक प्रतीक्षा की जब तक उच्च न्यायालय में हरिशंकर तिवारी के पांव छूने वाले जज की पीठ नहीं लगी। उच्च न्यायालय ने इसे पूरी तरह बरी कर दिया गया। नारी एकता और खास तौर पर स्वातिजी ने दो स्तर पर न्याय प्राप्ति के प्रयास किए। नारी एकता द्वारा एक हस्ताक्षर अभियान चलाया गया तथा इसमें उत्तर प्रदेश शासन के विधि सचिव से कहा गया कि

वे उच्च न्यायालय के फैसले के खिलाफ सर्वोच्च न्यायालय में अपील करे। चूंकि हर अपराध राज्य के विरुद्ध माना जाता है तथा मुकदमा भी 'राज्य बनाम अपराधी' का चलता है। इसके साथ ही स्वातिजी ने समता संगठन से जुड़े सर्वोच्च न्यायालय के वरिष्ठ वकील साथी रामभूषण मल्होत्रा से पूरा मामला बताया। इस मामले में सर्वोच्च न्यायालय में नारी एकता भी एक पक्ष बना। सर्वोच्च न्यायालय मे उच्च न्यायालय के गलत फैसले की समीक्षा हुई तथा अपराधी को आजीवन कैद की सजा हुई।

चरम नारी उत्पीडन के दो मामले बता रहा हूं जहां स्वाति ने कारगर कार्रवाई की सार्थक पहल की परंतु आखिरी तौर पर नकारात्मक नतीजे आए। यह दोनों मामले सबक लेने लायक हैं। पूर्वी उत्तर प्रदेश के मऊ शहर में एक शराबखाने के विरुद्ध महिलाओं ने सशक्त शांतिपूर्ण आंदोलन छेड़ा था। यहां प्रशासन और पुलिस ने गोलीचालन किया जिसमें एक महिला की मृत्यु हुई। स्वाति की पहलकदमी पर एक जांच की गई जिसकी रिपोर्ट राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग को दी गई। आयोग ने प्रकरण को गंभीरता से लिया तथा आयोग की अपनी टीम मऊ जांच के लिए आई। इसके पहले स्वाति ने दमन से प्रभावित महिलाओं से चर्चा की ताकि बयान दर्ज कराने में संकोच न करें तथा निर्भीक होकर बयान दर्ज करायें। आयोग के जांचकर्ताओं द्वारा महिलाओं का बयान लेते वक्त भी स्वाति मौजूद रहीं। इसके बावजूद आयोग की रिपोर्ट में पुलिस अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई की सिफारिश नहीं की गई। न्याय न होने की वजह मानवाधिकार आयोग के जांच अधिकारी तथा मऊ के पुलिस अधीक्षक दोनों कर्नाटक के थे।

दूसरा मामला रोहतास के संगठन की सक्रिय दलित महिला साथी श्रीमती उगना देवी का था। उगना राजनैतिक सक्रियता के अलावा सब्जी बेचती थी। गांव के दबंगों ने उनसे बलात्कार किया। स्वाति ने इस घटना के प्रतिकार का कार्यक्रम तय करते वक्त कहा कि देश में जहां भी हमारी इकाइयां हैं वहां 'उगना देवी सम्मान दिवस' मनाया जाए। बलात्कार का शिकार औरत अपमान का पात्र नहीं होनी चाहिए यह इस कार्यक्रम के पीछे मुख्य उद्देश्य था। इसके साथ ही दोषियों की गिरफ्तारी की मांग थी। इस इलाके में यह अपने तरह का पहला कार्यक्रम था जिसे संगठन उत्साह के साथ स्वीकार किया तथा पालन किया। सासाराम की सभा में साथी उगना देवी मौजूद रही,बोलीं तथा क्रांति गीत गाया। दोषियों की गिरफ्तारी भी हुई। इतना सब होने के बाद संगठन के एक जिम्मेदार साथी ने उगना देवी पर दबाव डालकर मुकदमा वापस करवा दिया। स्त्री के साथ न्याय की लड़ाई के लिए संगठन के भीतर भी कैसी कमजोरियां हो सकती हैं यह समझ में आया।

यहां मैं वाराणसी के नारी संरक्षण गृह में हुए यौन-शोषण के बारे में नहीं लिख रहा हूं। साझा संस्कृति मंच के फादर आनंद तथा डॉ. मुनीजा ने अपने स्मृति लेख में इसकी चर्चा की है।

विश्वविद्यालय और विश्वविद्यालय से जुड़े बड़े अस्पताल के कारण बिहार के पड़ोसी जिले के कार्यकर्ता स्वाति के घर आया करते थे। इनमें से कुछ साथी परीक्षा में नंबर बढ़वाने के लिए भी आते थे,निसंकोच। ऐसे लोगों को स्वाति साफ तौर पर इंकार करते हुए बता देती थीं कि यह किस प्रकार अन्यायपूर्ण होगा। हांलाकि संगठन के क्षेत्र के कई विद्यार्थियों को किताबें खरीदने के लिए वे मदद करती थीं। अस्पताल में आने वाले मरीजों के साथ स्वाति और चंचल ही जाते थे। मूत्र रोग का इलाज कराने आए एक मरीज को पेशाब की बाहरी थैली लटकाए स्वातिजी के घर पहुंचते मैंने देखा है। निजी रहन –सहन के मामले में संगठन के साथी कैसे अविवेकी हो सकते हैं इसके प्रसंग भी आते थे। एक बार स्वाति के घर रात्रि भोजन में अंडा,टोस्ट और सूप था। स्वाति के घर आए हुए साथी ने उसे खाया किंतु साथ में यह भी कहा कि बिना रोटी-चावल खाये हमें नहीं लगता कि भोजन किया। निजी रहन-सहन में विवेक का इस्तेमाल किया। एक बार साथी किशन पटनायक स्वाति के घर आए हुए थे तथा उन्होंने कलाहांडी में भूखमरी की चर्चा की थी। इसके बाद से उनके यहां बासमति चावल आना बंद हो गया।

एक बार उनकी एक सहकर्मी अध्यापिका ने कहा कि, 'स्वाति समाजवादी है तो ये स्पेशल साड़ियां क्यों पहनती है?' स्वाति विदेश से लौटने के बाद सिर्फ हैंडलूम या खादी की साड़ियां, सलवार कुर्ता पहनती थी। सिथेटिक वस्त्र नहीं खरीदे। बारिश के मौसम में पहनने के लिए एक दो सिंथेटिक साडियां जरूर होती जो रिश्तेदारों से मिली होतीं। ओडिशा, बंगाल,महाराष्ट्र,मध्य प्रदेश,केरल तथा आंध्र प्रदेश की हैंडलूम की साडियां तथा गुजरात के प्राकृतिक रंगों के खादी और हैंडलूम के कपड़े तथा कच्छी शॉल उन्हें पसंद थे। इन हाथ से बने वस्त्रों की एक विशिष्टता उन बुनकरों, रंगरेजों का अद्भुत सौंदर्यबोध होता है। वे कहती थी, 'मैंने चार चकिया वाहन नहीं खरीदा,गहनों का शौक छोड़ दिया लेकिन इन हैन्डलूम की साडियों और सलवार कुर्ता का शौक छोड़ न सकीं।

बेटी और बहु को खुदके और मेरे घर से आए पैतृक गहनों को देने के बाद वे कांचन-मुक्त हो गई थी। 37 - 38 वर्षों की हमारे दांपत्य के दरमियान एक मंगल-सूत्र जरूर खरीदा था जिसमें लटकाने के लिए क्या हो यह मुझे पसंद करने के लिए कहा था। मैंने चुना था मटर के दाने बराबर एक सोने का नन्हा-सा हृदय।

स्वाति काशी विश्वविद्यालय अध्यापक संघ की उपाध्यक्ष चुनी गयी थीं। उपाध्यक्ष के तीन पद होते हैं उनमें सर्वाधिक वोट पा कर जीती थी। शिक्षकों के अन्य विश्वविद्यालयों में शोध-शिक्षण के लिए भेजने के लिए नियम बनाने,अनुमति देने संबंधी डेप्युटेशन समिति की सदस्य थी। अध्यापक संघ की पदाधिकारी रहते हुए लंबे समय से अस्थायी तौर पर पढा रहे शिक्षकों की स्थायी बहाली के लिए स्वाति प्रयतनरत थीं और सफल भी हुई। जिस समूह के साथ वे अध्यापक संघ का चुनाव लड़ी थीं उनसे वे किसी दीर्घकालिक राजनैतिक साथ की उम्मीद नहीं करती थीं। इसलिए उपाध्यक्ष रहने के बाद उन्होंने महामंत्री या अध्यक्ष का चुनाव नहीं लड़ा बल्कि अध्यापक संघ में महिला महाविद्यालय की संकाय प्रतिनिधि बनने में उन्होंने संकोच नहीं किया।

जिस भी स्तर पर स्वाति जिम्मेदारी लेती थीं उसे निभाने के लिए प्राणपण से जुट जाती थी। जिम्मेदारी दल की हो अथवा शिक्षाधिकार मंच की। जिम्मेदारी पूरा करने में बिना बुनियादी सिद्धांतों से समझौता किए वे प्रयास करतीं की भिन्न मतों के लोग हों तब भी कोई निष्क्रिय न रहे।

मुझे लगता है कि चाहे अपनी हो, अपनों की हो अथवा समाज की-अव्यवस्था,विकार और विश्रृंखलता में स्वाति तरतीब लाने में कामयाब होती थीं धैर्य, बुनियादी यकीन और मेधा के बूते। इन तीनों गुणों से वह सरोबार थी। सत्याग्रह में वह प्रभावी होती थी सौम्य, सौम्यतर, सौम्यतम होकर। यह उनके लिए स्वाभाविक था।

जय क्रांति। जिंदाबाद।

स्वाति और सीप के मोती

नवीन

समता संगठन से समाजवादी जनपरिषद की यात्रा मे जो थोड़े लोग बचे हैं उनमें स्वातिजी मुख्य थीं। भौतिकी की प्राध्यपिका सिर्फ अपने विषय तक महदूद न थीं। राजनीति विज्ञान, संगीत व साहित्य के क्षेत्र में भी उनकी गहरी पकड़ थी।

1980 में वाराणसी में समता युवजन सभा की तीन दिवसीय बैठक थी उस बैठक के बाद स्वातिजी ने हम सबों को अपने घर खाने पर बुलाया था। वहीं उनके पुत्र ऋजु को पहली बार देखा था। उन दिनों वह किशोरावस्था में भी नहीं था मगर उसकी बात 'मैं तो पैदाईशी सोशलिस्ट हूँ' अभी तक स्मरण में है।

समता संगठन व सजप के प्रत्येक कार्यक्रमों मे वह मन-प्राण से भाग लेती थीं। मेरे घर भी वह एक बार 1992 में अफलू भाई, प्योली व चंचल भाई के साथ आई थीं। मेरी लड़कियों को गोद में लेकर दुलार भी की थीं। 2013 में सजप की राष्ट्रीय समिति की एक बैठक मेरे निवास पर भी हुई थी। स्वाति जी ने बड़ी लड़की की तालीम की जानकारी ली और उन्होंने राय दी थी कि वह कानून की पढ़ाई करे, उस बातचीत में निशा शिविरकर जी भी मौजूद थीं।

स्वातिजी नारी आंदोलन और शिक्षा बचाओ आंदोलन से भी ताउम्र जुड़ी रहीं। पिछले साल जब मैं दिल्ली गया तो राजेन्द्र राजन जी के साथ उनसे मिलने अस्पताल गया था। आई.सी.यू. में थीं। फलतः मुलाकात न हो पायी। भाई अफलू व प्योली मिले थे। स्वातिजी को कैंसर ने अपनी गिरफ्त में ले लिया था। स्वातिजी उपस्थिति से हम सब प्रेरित होते थे।

स्वातिजी बंगाली परिवार से थीं। बंग्ला के महान कथाशिल्पी सुनील गंगोपाध्याय ने अपनी आत्मकथा 'अधूरा सफर' में स्वाति का एक दूसरा अर्थ खडग भी बताया है। बंगाल में अनुशीलन व युगांतर से जुड़े क्रांतिकारी सशस्त्र क्रांति में विश्वास रखते थे। जिस तरह स्वाति नक्षत्र में वर्षा होने से सीप में मोती का निर्माण होता है उसी तरह से स्वातिजी ने कई मोती-माणिक्य निर्मित किए। खडग वाली राजनीति में स्वाति को तनिक भी विश्वास न था। स्वातिजी के निधन से अफलातून, ऋजु व प्योली व इमारा के साथ हम सब उनके चाहने वाले सहकर्मी, साथी भी अत्यन्त दुखी व शोकाकुल हैं। उनकी आत्मा को शांति मिले, ऐसी हम सवों की प्रार्थना है।

डॉ. स्वाति नहीं रहीं!

गैरबराबरी और अन्याय के खिलाफ़ उनका जुझारू जज़्बा हमेशा आह्वान देता रहेगा!!

समाजवादी जन परिषद (सजप) की उपाध्यक्ष और अखिल भारत शिक्षा अधिकार मंच (अभाशिअमं) के सचिव-मंडल की सदस्य डॉ. स्वाति का 2 मई 2020 को शाम 8:30 बजे वाराणसी के बीएचयू अस्पताल में निधन हो गया। गुर्दों को बुरी तरह नाकाम करने वाली लेकिन बहुत ही कम पाए जाने वाली मल्टिपल माईलोमा नामक प्लाज़्मा कोशिकाओं की कैंसर की बीमारी से बहादुरी से जूझते हुए उनकी साँस छूटी। तक़रीबन एक साल तक के इस तकलीफ़देह दौर में उन्हीं की तरह अरसे से जाने-माने समाजवादी कार्यकर्ता, उनके पति श्री अफ़लातून, दिल्ली से वाराणसी तक कई अस्पतालों में उनकी आखिरी साँसों तक हर पल उनके संग जुड़े रहे।

तालीम और विज्ञान-कर्म

21 अप्रैल 1948 को ग्वालियर, मध्य प्रदेश के बंगाली परिवार में जन्मी डॉ. स्वाति ने 1967 में कमला राजा गर्ल्स स्नातकोत्तर कॉलेज, ग्वालियर से स्वर्णपदक के साथ बीएससी (फ़िज़िक्स) पास की। 1969 में उन्होंने मुंबई के आईआईटी-बॉम्बे से फ़िज़िक्स में एमएससी और 1974-75 में अमरीका की यूनिवर्सिटी ऑफ़ पिट्सबर्ग से एटॉमिक फ़िज़िक्स में पीएचडी की। पिट्सबर्ग विश्वविद्यालय की शोध छात्रा रहते हुए वियतनाम युद्ध के विरुद्ध, बांग्लादेश मुक्ति संग्राम के समर्थन में तथा भारत में आंतरिक आपात्काल के खिलाफ़ चलने वाले अभियानों में सक्रिय हिस्सेदारी की।

पश्चिम के विश्वविद्यालयों से पीएचडी करने वाले अपने समकालीन ज़्यादातर युवा हिंदुस्तानियों से अलग डॉ. स्वाति अपने मुल्क वापस लौटकर समाजवादी समाज बनाने के लिए अवाम की जद्दोजहद में शामिल होने को बेचैन थीं। अमरीका के लुभावने अध्यापन और शोध के मौके छोड़कर, पीएचडी के बाद ही वे भारत लौट आईं और कुछ वक्त तक रुड़की विश्वविद्यालय में पढ़ाती रहीं। 1979 में डॉ. स्वाति की नियुक्ति फ़िज़िक्स में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय (बीएचयू) के महिला महाविद्यालय में हो गई। यहाँ वे 30 सालों से भी ज़्यादा अरसे तक अध्यापन और शोध का काम करती रहीं और 2013 में एसोसिएट प्रोफ़ेसर के पद से रिटायर हुईं।

1980से ही डॉ. स्वाति ज़मीनी सामाजिक-राजनीतिक काम में पूरी संजीदगी से सक्रिय रहीं, लेकिन उन्होंने विज्ञान के प्रति अपना लगाव नहीं छोड़ा और 2004 में बायोइन्फ़ॉर्मेटिक्स के बिल्कुल नए क्षेत्र में शोध करना शुरू किया। अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में 35 शोध परचे प्रकाशित करने के अलावा बीएचयू में बायोइन्फॉर्मेटिक्स का विभाग शुरू करने में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने कई पीएचडी छात्रों को तैयार किया, जिन्होंने आगे चल कर शोध में नाम कमाया। सजप और अभाशिअमं दोनों संगठनों में वरिष्ठ पदाधिकारी की दोहरी ज़िम्मेदारियां संभालने के बावजूद सूक्ष्मजीवियों के आरएनए में संरचनात्मक बदलावों पर उनका एक परचा अभी पिछले साल ही प्रकाशित हुआ है। वे जेएनयू और आईआईआईटी हैदराबाद में विज़िटिंग प्रोफेसर भी रहीं।

उच्च शिक्षा में हिंदी में विज्ञान के शिक्षण के लिए भी वे सक्रिय रहीं। न सिर्फ कक्षा में पढ़ाते वक्त लेकिन शोध स्तर पर भी उन्होंने हिंदी में विज्ञान लेखन किया। 'विप्लव' (अंग्रेजी में 'केऑस') पर उनका परिचयात्मक शोधपत्र बहुत पसंद किया गया था।

सियासी शिरकत

गौरतलब है कि डॉ. स्वाति जब अमेरिका से लौटी थीं, वह आपात्काल के बाद का सियासी सरगर्मियों का दौर था। वे जल्द ही उस दौर के सक्रिय समाजवादी आंदोलन के संपर्क में आईं। जब 1980 में उत्पीड़ित वर्गों और जातियों का ज़मीनी आंदोलन खड़ा करने के लिए किशन पटनायक, रामइकबाल बरसी, सच्चिदानंद सिन्हा जैसे समाजवादी नेता और कई छात्र कार्यकर्ता जुटे, तो समता संगठन नामक उस समूह के संस्थापक सदस्यों में डॉ. स्वाति शामिल थीं। इस गुट के सदस्य

बतौर उन्होंने देश के विभिन्न हिस्सों में, खास तौर पर आदिवासियों, दलितों, किसानों और मज़दूरों के साथ काम किया। जब सुनील और राजनारायण जैसे ज़मीनी कार्यकर्ताओं को होशंगाबाद (मध्य प्रदेश) जेल में भेजा गया तो उन्होंने गाँव-गाँव जाकर लोगों को प्रतिरोध हेतु एकजुट करने के लिए विश्वविद्यालय की नौकरी से लंबी छुट्टी ले ली।

वाराणसी में आंदोलन को ज़रूरी स्त्रीवादी मोड़ देते हुए उन्होंने 'नारी एकता' का गठन करने में भूमिका निभाई, जिसमें सभी वर्गों और जातियों से स्त्रियाँ शामिल हुईं और स्त्री क़ैदी, घरेलू हिंसा, दहेज पीड़ित व स्त्रियों के दीगर मुद्दों को लेकर आवाज़ उठाई गई। वाराणसी के सुंदर बगिया व छित्तूपुर इलाकों के वंचित बच्चों को पढ़ाने के लिए भी उन्होंने वक्त निकाला।

समाजवादी अध्यापक गुट के सदस्य के रूप में वे बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के आंदोलनों में शरीक रहीं और बीएचयू के अध्यापक संगठन की उपाध्यक्ष चुनी गईं। उस दौर में बीएचयू के महिला महाविद्यालय की विज्ञान की शिक्षिकाओं को न तो विश्वविद्यालय के विज्ञान के विभागों में नियुक्त किया जाता था और न ही उन्हें शोध की सुविधाएं दी जाती थीं, हालांकि महिला महाविद्यालय बीएचयू का अभिन्न हिस्सा था। इसी के चलते महिला शिक्षिकाओं की प्रोन्नति के दरवाजे भी बंद थे। डॉ. स्वाति ने इस जेंडर-आधारित भेदभाव के खिलाफ़ संगठित आवाज़ उठाई। अंततः कई साल चली जद्दोजहद के बाद इस मुद्दे पर विश्वविद्यालय कार्यकारिणी को उक्त भेदभाव की नीति को खत्म करने का फ़ैसला लेना पड़ा और महिला महाविद्यालय की विज्ञान शिक्षिकाओं के लिए शोध करने और समतामूलक प्रोन्नति दोनों के दरवाजे खुल गए।

जब 1995 में समता संगठन और दूसरे संगठनों ने मिलकर देश में आर्थिक विकेंद्रीकरण, वैकल्पिक समाजवादी विकास का मॉडल और समतामूलक समाज बनाने के लिए प्रतिबद्ध राजनीतिक दल – समाजवादी जन परिषद (सजप) – का गठन किया, तो डॉ. स्वाति पार्टी के सचिव-मंडल की सदस्य बनीं और राज्य तथा राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर बतौर व्अहम शख्स़ियत काम करती रहीं। लगातार अध्ययन और चिंतन में जुटी रहकर उन्होंने राजनीति में स्त्रियों के मुद्दों पर सवाल उठाए और इस पर पार्टी के मुखपत्रों – सामयिक वार्ता और समता इरा – में लेख लिखे। देश में चल रहे जनविज्ञान आंदोलनों में भी उनकी बड़ी भागीदारी थी। मुनाफ़ाखोरी, जुल्म और गुलामगिरी बढ़ाने के पूँजीवादी हथकंडों में इस्तेमाल होने के बजाए विज्ञान की जनता की भलाई के लिए क्या भूमिका हो सकती है, इस सवाल पर उनकी गहरी समझ थी।

दिसंबर 1992 में बाबरी मस्जिद विध्वंस के 2-3 साल पहले से ही देशभर में सांप्रदायिक तनाव बढ़ रहा था। इसी सिलसिले में वाराणसी में 'सद्भाव अभियान' तथा 'साझा संस्कृति मंच' की स्थापना करने की पहलकदमी में डॉ. स्वाति की खास भूमिका थी। उसके बाद भी उन्होंने अपनी काफ़ी ऊर्जा सांप्रदायिक विभाजनकारी ताकतों का प्रतिरोध करने में लगाई।

मार्च 2006 में शुरू हुए वाराणसी के नज़दीक मेहदीगंज में कोका कोला बॉटलिंग प्लांट विरोधी आंदोलन के दौरान सक्रिय भूमिका के कारण कंपनी ने जिन पांच कार्यकर्ताओं पर प्लांट के 500 मीटर से करीब न आने के लिए न्यायपालिका से निषेधात्मक आदेश जारी करवाया था उनमें एक डॉ. स्वाति भी थीं।

शिक्षा आंदोलन में योगदान

जून 2009 में गठित अखिल भारत शिक्षा अधिकार मंच (अभाशिअमं) के संस्थापक सदस्य-संगठनों में समाजवादी जन परिषद (सजप) शामिल था। शुरूआती दौर में अभाशिअम के अध्यक्ष मंडल में सजप के प्रतिनिधि, जेएनयू से पढ़े और आदिवासियों व अन्य वंचित तबकों के साथ काम कर रहे, श्री सुनील थे। लेकिन बगैर किसी पद के डॉ. स्वाति ने अभाशिअम के कार्यक्रमों, खास तौर पर 2010 में संसद मार्च व प्रदर्शन के लिए कई राज्यों से लोगों को लामबंद करने में अहम भूमिका निभाई। अप्रैल 2014 में सुनीलभाई के असमय निधन के बाद अभाशिअम ने डॉ. स्वाति और अफ़लातून दोनों को सजप के प्रतिनिधि बतौर राष्ट्रीय कार्यकारिणी में शामिल होने का न्यौता दिया। फरवरी 2018 में डॉ. स्वाति अभाशिअम के सचिव-मंडल में आ गईं। तब से वे सचिव मंडल का एक मजबूत स्तंभ बनी रहीं हैं। उन्होंने हर प्रस्तावित विचार, कार्ययोजना और फ़ैसले को अपने आलोचनात्मक नज़रिए की कसौटी पर कसा और उसे बेहतर व ज़्यादा कारगर बनवाया।

डॉ. स्वाति की दूरदर्शिता और जनाधार को

लामबंद करने की उनकी नेतृत्व क्षमता की वजह से 'केजी से पीजी' तक बराबरी और सामाजिक न्याय-आधारित समान शिक्षा व्यवस्था और पूरी तौरपर मुफ़्त शिक्षा के अभाशिअम के देशव्यापी आंदोलन के नए आयाम उभरे हैं। उन्होंने देश के विभिन्न हिस्सों में सजप की इकाइयों को अपने-अपने इलाकों में अभाशिअम की मुख्य माँग यानी 'केजी से बारहवीं कक्षा तक 'समान स्कूल व्यवस्था' के समर्थन में आगे बढ़ने को तैयार किया है। लगातार हुए दो घटना-क्रमों ने डॉ0 स्वाति के सचिव मंडल में शामिल होने से पहले ही शिक्षा आंदोलन में उनकी बढ़ती हुई भूमिका को निखरने में मदद दी। पहली, यह कि भारत सरकार द्वारा देश की उच्च शिक्षा को डब्ल्यूटीओ–गैट्स (WTO-GATS) के हवाले किए जाने की पहलकदमी वापस लेने के लिए अगस्त, 2015 में अभाशिअम ने देशव्यापी जन-आंदोलन खड़ा करने का आह्वान किया। इस मुद्दे का महत्व समझकर उन्होंने वाराणसी में एक डब्ल्यूटीओ-विरोधी सम्मेलन का आयोजन किया, जिसमें बड़ी तादाद में लोगों ने हिस्सा लिया। दूसरी, यह कि अप्रैल, 2016 में अभाशिअमं ने इलाहाबाद हाई कोर्ट के ऐतिहासिक आदेश (अगस्त, 2015) को देशभर में लागू करने की मांग को लेकर राष्ट्रीय असेंबली का आयोजन किया। उक्त आदेश के मुताबिक, उत्तर प्रदेश सरकार के खजाने से किसी भी तरह का माली लाभ (तनख़्वाह, मानदेय, भत्ता, ठेके का भुगतान, सलाहकार फीस या कुछ और भी) लेने वालों के लिए यह अनिवार्य होगा कि वे अपने बच्चों को सरकारी स्कूलों में पढ़ने को भेजें, चाहे उनका सामाजिक-आर्थिक रुतबा कैसा भी हो। डॉ. स्वाति ने देश के विभिन्न हिस्सों से, खास तौर पर उत्तर प्रदेश से, राष्ट्रीय असेंबली में शामिल होने के लिए लोगों को एकजुट किया। इसी तरह फरवरी 2019 की हुंकार रैली के लिए उन्होंने दूरदराज के आदिवासी इलाकों तक से लोगों की भागीदारी सुनिश्चित की।

भाषा और समाज

डॉ. स्वाति, अंग्रेज़ी और हिन्दी में समान रूप से काम करती थीं और बांग्ला में भी धाराप्रवाह बोलती थीं। दो साल पहले नागालैंड में उसकी 16 ज़ुबानों को बचाने और आगे बढ़ाने के मकसद से अभाशिअमं की पहल पर हुए सेमिनार में हिस्सा लेने के बाद उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि 'जब तक समाज में वर्ग (या जाति) का बँटवारा रहेगा, भाषाएँ भी वर्गों और जातियों में बँटी रहेंगी!' इसलिए उनका मत था कि भारतीय समाज को समाजवादी और मानवीय खाके में नए सिरे से गढ़ने के लिए वैकल्पिक शिक्षाशास्त्र ज़रूरी है। जब 2017 में उत्तर प्रदेश सरकार ने हिन्दी माध्यम में चल रहे 5000 प्राथमिक स्कूलों को इंग्लिश-मीडियम में तब्दील करने का बेतुका फ़ैसला लिया तो डॉ. स्वाति की मादरी ज़ुबान के माध्यम से तालीम की प्रतिबद्धता को बड़ी चुनौती मिली। इस फ़ैसले की वजह से बच्चों की बड़ी तादाद में शिक्षा से होने वाली बेदखली के खिलाफ़ आंदोलन खड़ा करने के अलावा उनके पास कोई विकल्प न बचा था।

ऐतिहासिक संदर्भ और हमारा संकल्प

डॉ. स्वाति के निधन से सजप और अभाशिअम दोनों संगठनों में एक बड़ा शून्य बन गया है, जिसे भर पाना मुश्किल होगा। बदकिस्मती से यह ऐसे वक्त हुआ है जब मुल्क आज़ादी के बाद के सबसे मुश्किल सियासी दौर से गुज़र रहा है। ऐसे वक्त डॉ. स्वाति जैसी दूरदर्शी व प्रतिबद्ध शख्सियत का होना देश के लिए निहायत ज़रूरी था।

हमें इस अनोखी बात पर गौर करना चाहिए कि एक शख्सियत ने विज्ञान और वैज्ञानिक सोच की राह पर चलते हुए सक्रिय राजनीति और समाज में बराबरी और इंसाफ के लिए ज़मीनी जद्दोजहद में भी सक्रिय हिस्सा लिया। जब इतिहास में ऐसी मिसालें ढूँढी जाएँगी, तो इस अनोखे किरदार के एक उम्दा प्रतिनिधि बतौर डॉ. स्वाति को उनकी यह ऐतिहासिक जगह देने से कोई इंकार नहीं कर पाएगा !

तक़रीबन एक साल की अवधि में ही अभाशिअम ने अपने दो स्तंभ खो दिए हैं – डॉ. मेहर इंजीनियर और डॉ. स्वाति - दोनों ही पेशे से वैज्ञानिक थे। दोनों ने हमारे शिक्षायी आंदोलन में अपनी खास भागीदीरी निभाई। आइए, हम उनके अभी बाक़ी रह गए एजेंडे पर काम करते रहने की शपथ लें और उन दोनों को सलाम कहें!

– अखिल भारत शिक्षाा अधिकार मंच
(अभाशिअमं)/ 7 मई 2020

स्मृति शेष

सद्भाव अभियान के वे दिन और डॉ. स्वाति का योगदान

रामचन्द्र राही

उन दिनों भाजपा नेता लालकृष्ण अडवाणी की 'मंदिर वहीं बनायेंगे - राम रथ यात्रा' चल रही थी और देश के माहौल में साम्प्रदायिक तनाव पैदा करने, बढ़ाने और फैलाने की कोशिशें चरम पर थीं। हम वाराणसी में रहते थे और लगातार यह आवाजें जोर-शोर से बुलंद की जा रही थी कि अयोध्या के बाद काशी! वाराणसी की एक तहजीब है जिसमें भगवान शिव हैं, तो उनके साथ ही काल भैरव हैं। कबीर हैं, तुलसी हैं, अघोर पंथ से लेकर शैव, शाक्त आदि सभी के पीठ हैं और तीखे मतवादों, द्वन्द्वों, बहसों, के बावजूद गंगा-जमुनी संस्कृति की धारा भी अविरल बहती आ रही है काशी में युगों से।

हम चिंतित थे कि इस अविरल प्रवाह को साम्प्रदायिकता के इस, समाज को विकृत करने, बांटने वाले, जहरीले प्रभाव और उसके विनाशक परिणामों से कैसे बचाया जाय।

हम यानी गांधी-विचार में निष्ठा रखने वाले कुछ लोग, समाजवादी समूह के साथी और धुर साम्यवादी संगठन के कुछ कामरेड्स तथा लगभग सभी प्रमुख धर्मो के समाजसेवी मित्र। हम बार-बार विचार-विमर्श के लिए बैठते और सोचते कि क्या किया जाय, कैसे किया जाय, ताकि काशी की गंगा-जमुनी संस्कृति साम्प्रदायिक सोच से विकृत नहीं होने पाये। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की डॉ. स्वाति भी अपने समाजवादी समूह के साथ इस चिंतन-मंथन में सक्रिय रूप से शामिल थी। आखिर कई बार के गहन चिंतन-मंथन के बाद हमने तय किया कि वाराणसी में साम्प्रदायिक सद्भाव अभियान चलाया जाय।

यह अभियान किसी संस्था-संगठन का रूप न ले बल्कि, सीधे जनता से खुला संवाद करने का एक मंच हो। यह अभियान एक सामूहिक अभिक्रम के रूप में लोगों के सामने आये। इसका कोई एक नेता न हो, किसी 'वाद' तक इसे सीमित न किया जाय। सभी साथी अपने-अपने क्षेत्रों में बारी-बारी से सद्भाव-सभाएँ आयोजित करें और एक सर्वधर्म समविचारी समूह के रूप में हम लोगों से साम्प्रदायिकता के सवालों पर संवाद करें! इस अभियान की पूरी व्यूह-रचना तैयार करने, उसे क्रियान्वित करने, गतिशील बनाये रखने में डॉ. स्वाति का सक्रिय योगदान था। हर कदम पर वे साथ होती थीं और किसी भी चुनौती का सामना तत्परता से करने को तैयार रहती थीं। वे समाजवादी विचाधारा की थी अतः संघर्षशील तो थी ही, लेकिन उससे भी बड़ी बात थी कि उनमें सामूहिक नेतृत्व विकसित करने की प्रतिबद्धता एवं कुशलता थी। विभिन्न विचार-धाराओं के प्रति प्रतिबद्ध साथियों की, सद्भाव अभियान के लिए वाराणसी में एक टीम खड़ी कर लेना आसान नहीं था, तब जबकि सभी अपने-अपने विचार-समूहों के परिपक्व और अनुभवी लोग थे। लेकिन एक अनुभवी प्राध्यापक के रूप में डॉ. स्वाति का योगदान इस कार्य को मूर्त रूप देने में अभिनंदनीय था।

सद्भाव अभियान पूरे वाराणसी में चला। लम्बे समय तक चला और सफल रहा। बाबरी मस्जिद-विध्वंस के बाद देश में जगह-जगह दंगे हुए, मारकाट-आगजनी हुई, लेकिन वाराणसी, जिसे अयोध्या के बाद साम्प्रदायिक तत्वों से दूसरे नम्बर पर रखा था, साम्प्रदायिक दंगों की उस भड़काई गयी आग से बचा रहा, केवल नगर के एक बाहरी हिस्से लोहता को छोड़ कर, जहाँ हम तब तक पहुँच नहीं पाये थे।

सदभाव अभियान का वह सिलसिला वाराणसी में बदलती परिस्थिति के अनुसार आज भी अपनी नये साझा सांस्कृतिक मंच के रूप में सक्रिय है। साम्प्रदायिक सद्भाव कायम रखने, विकट और उलझे सामाजिक प्रश्नों पर अपने सरल-सुलझे उत्तरों के साथ साझा संस्कृति मंच अपनी सेवावृत्ति और सांस्कृतिक आयोजनों के माध्यम से काशी की साझी विरासत को संभाले हुए है। डॉ. स्वाति इन अयोजनों में अंतिम समय तक सक्रिय रहीं। अब वे नहीं हैं। उनकी यादें शेष हैं। आशा है साझा संस्कृति मंच उनके जाने से पैदा हुई रिक्तता को भरते हुए निरंतर अपनी आगे की मंजिलें तय करता रहेगा। यात्री बदलते हैं, यात्रा चलती रहती है। यही तो जीवन का क्रम है।

—वरिष्ठ गांधीजन

स्वाति-वैज्ञानिक दृष्टि और जमीनी सक्रियता की सार्थक समन्वय

चन्द्रभूषण चौधरी

स्वाति अति तीक्ष्ण बुद्धि की व्यक्ति थी। किशोरावस्था में नेशनल सायन्स टैलेन्ट मे चयनित हो आई.आई.टी. मुम्बई मे भौतिकी के कठिन विषय में एम.एससी. करने तक वह पढ़ाई में बहुत आगे रहीं और अमेरिका के पिटसबर्ग विश्वविद्यालय से भौतिकी मे पीएच.डी. की डिग्री हासिल की। बंगला, हिन्दी और अंग्रेजी तीन भाषाओं में लिखने बोलने की उनकी अधिकारिक क्षमता थी।

बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में भौतिकी के आजीवन शिक्षण के अन्तिम वर्षों में उन्होंने अन्य संस्थानों में रहकर एक बिलकुल नये वैज्ञानिक विषय Bioinformatics में शिक्षण लिया। बनारस में उन्होंने कई शोधार्थियों को भौतिकी और बायोइन्फर्मिटिक्स विषयों में पीएच.डी. के लिए निर्देश भी किया।

दूसरी ओर आम वंचित जनता के लिए उनका प्रेम युवावस्था में ही उन्हें समाजवाद की धारा में ले आया। क्रमशः दो संगठन 'समता संगठन' और परवर्ती 'समाजवादी जन परिषद' की राजनीति उनके सदस्यों से कठोर और अलाभकारी त्याग की माँग करती थी।

स्वाति ने राजनीति कर्म के लिए इन्ही दो संगठनों की कठिन धारा को अपनाया।

वंचित जनता के बीच काम करने वाले अधिकांश कार्यकर्ता यह महसूस करते हैं कि भारत तथा कई अन्य गरीब देशों की सरकारें आधुनिक विज्ञान एव तकनीक को बहुसंख्य जनता के आर्थिक शोषण के हथियार के रूप में प्रोत्साहित करती हैं। उन विधाओं के शिक्षण और प्रयोग का आर्थिक लाभ केवल धनी उद्यमी और मध्य वर्ग की छोटी आबादी को ही होता है। ऐसे लाभुक बड़े शहरों मे ही एकत्र हो जाते हैं। सारे लाभ उन्ही के परिवारों में देश और विदेशों मे सीमित रह जाते हैं।

नतीजतन स्वदेश प्रेम से प्रेरित इन बहुतेरे जमीनी कार्यकर्ताओं के मन में आधुनिक ज्ञान, विज्ञान और तकनीक की लाभकारी संभावनाओं के प्रति विरोध, वितृष्णा और प्रतिक्रिया जम जाती है।

दूसरी ओर इन आधुनिक विधाओं में प्रशिक्षित मध्यवर्ग यह मान बैठता है कि भारत की अधिकांश जनता में आधुनिक होने क्षमता जन्मजात रूप से ही नहीं है। नतीजतन वैज्ञानिक, तकनीकी और अन्य विधाओं में शिक्षित तथा उन पेशों मे कार्यरत लोग जमीनी राजनीतिक कार्यकर्ताओं से जुड़ाव और संवाद नहीं बना पाते है। क्रांन्तिकारी राजनीति उसी ठोकर में अटक कर कुण्ठित और कुन्द हो जाती है।

स्वाति का जीवन इन दो विपरीत मनोवृतियों में सामंजस्य बनाने का सफल प्रयोग था।

स्वाति जीवन भर चार मोर्चों पर सधर्ष और साजन्जस्य करती रही—

1. विज्ञान की आधुनिक विधाओं मे अध्ययन, अध्यापन और शोध।

2. वंचित जनों के जमीनी राजनीतिक संघर्ष और उसमें बौद्धिक योगदान।

3. नारी मुक्ति के नये मानदण्डों के अनुरूप व्यक्तिगत जीवन शैली जो बनारस के रूढ़िवादी समाज मे कठोर हिंसक प्रतिक्रिया का दंश झेलती थी।

4. दो बच्चों सहित अपने परिवार का आर्थिक, मानसिक और श्रमसाध्य सम्भरण।

इन चारों आयामों मे सक्रियता और सन्तुलन बनाकर सत्तर साल का स्वाति का जीवन अन्य लोगों के लिए एक अनुकरणीय उदाहरण है। वह भविष्य में भी सैकड़ों हजारो स्त्री पुरूषों को अच्छे जीवन का रास्ता दिखाती रहेगी।

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष, समाजवादी जन परिषद

साथी स्वाति

फागराम

स्वातिजी समाजवादी जन परिषद की एक वरिष्ठ नेत्री थीं। मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिलें में संगठन को खड़ा करने में उनकी अहम भूमिका रही हैं। समता संगठन के समय में पिपरिया क्षेत्र में उन्होंने काफी काम किया। बाद में मध्य प्रदेश में जहां-जहां समाजवादी जन परिषद का कार्यक्रम होता - जैसे राष्ट्रीय सम्मेलन या चुनाव कार्यक्रम- वो उसमें शामिल होतीं। पार्टी के अंदर और बाहर,दोनों जगह वो महिलाओं के मुद्दों पर सवाल उठाती रहीं। उन्होंने लगातार महिलाओं के मुद्दों पर जागरूकता फैलाने का काम किया चाहे वो महिलाओं के साथ घरेलू कामकाज में गैरबराबरी का मुद्दा हो या घरेलू हिंसा का। स्वातिजी का होशंगाबाद जिले मे केसला आदिवासी विकास खंड से लंबा और गहरा जुड़ाव रहा। वो 1985 के बाद से इस क्षेत्र में किसान आदिवासी संगठन के बैनर तले हो रहे आदिवासियों और किसानों के आंदोलनों और जमीनी संघर्षों मे शामिल होती रही। तवा बांध से विस्थापित लोगों के हक की लड़ाई और दूसरी कई जल-जंगल जमीन पर अधिकारों की लड़ाइयों में उन्होंने शिरकत की।

स्वातिजी गीत काफी अच्छा गाती थीं। हमने उनको कई बार हिन्दी और बांगला दोनों भाषाओं में गीत गाते हुए सुना। रैली जुलूस के समय में गाया जाने वाला हमारे क्षेत्र का एक आंदोलन गीत उन्हें काफी पसंद था – लड़त जा रे, लड़त जा रे, हमरे जंगल वाले वीर, लड़त जा रे। शांति बाई जिन्होंने स्वर्गीय फुलाबाई के साथ मिलकर इस क्षेत्र में संगठन को खड़ा किया वो कहती है कि उन्हें स्वातिजी का हंसमुख चेहरा हमेशा याद रहेगा। और याद रहेगा उनका केसला आने पर चूल्हे पर बन रहीं गरम रोटी देख कर खुश हो जाना और उसको हाथ से उठा कर खड़े-खड़े ही खा लेना।

स्वातिजी की लंबी बीमारी में उनसे मेरी आखिरी मुलाकात दिल्ली में उनकी बेटी प्योली के घर में हुई थी। जब हमें यह पता चला कि वह कैंसर जैसी गंभीर बीमारी की वजह से हमें सदा के लिए छोड़ कर चली गई है तब यह खबर सुनकर बहुत दुख हुआ। हम परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि उनकी आत्मा को शांति मिलें। और हमें उनकी और हमारी समाजवादी विचारधारा के माध्यम से एक समतामूलक समाज बनाने की लड़ाई को लड़ते रहने की हिम्मत मिलें, ताकि हम अपने साथी और नेता स्वातिजी के सपनों को मंजिल तक पहुंचा सकें।

जिंदाबाद, जिंदाबाद साथी! स्वातिजी अमर रहे, अमर रहें!

समाजवादी जन परिषद मध्य प्रदेश के अन्य साथी– शांति बाई, गुलिया बाई, बिस्तोरी, अर्चना, लखन मालवीय, रावल सिंह, मोतीराम तेकाम, सदाराम, राजेन्द्र गड़वाल, बसंत तेकाम, गंगाबिसन, बारेलाल, गोपाल राठी, शिवलाल, जयसिंह, भूरेलाल मांझी, राजीव बामने।

(फागराम समाजवादी जनपरिषद के राष्ट्रीय सचिव हैं)

स्वाति जी, सिद्धांत पर अडिग निडर व्यक्ति

फादर आनन्द, आई.एम.एस.

वह बाबरी मस्जिद की शहादत के बाद का दौर था। डॉक्टर स्वाति जी से पहली मुलाकात संभवतः इन्हीं दिनों सद्भाव अभियान द्वारा लोहता में आयोजित मेलमिलाप कार्यक्रम में या अन्य किसी कार्यक्रम में हुई। लेकिन 1993 की गर्मी के दिनों में विश्व ज्योति गुरुकुल में आयोजित एक कार्यशाला में उनसे वार्तालाप हुआ। किशन पटनायक, योगेन्द्र यादव, सुनील जी जैसे सामाजिक संघर्ष और जल, जंगल, जमीन के जन आन्दोलनों में लगे विभिन्न साथी देश के अलग अलग प्रदेशों से इस कार्यशाला में आये हुए थे। मेरे लिए सामाजिक आन्दोलन से जुड़े साथियों से मिलने का यह पहला अनुभव था। स्वाति जी इस कार्यशाला में बढ़ चढ़कर हिस्सा ले रही थीं।

इसके बाद सन 2000 में साझा संस्कृति मंच (ससम) के गठन के दौरान लगातार मुलाकात होती रही। स्वाति जी का ससम की स्थापना में बहुत बड़ा योगदान रहा। 'समन्वय' के नाम से महिलाओं के अधिकारों को

लेकर पहले से ही आप सक्रिय थी। 'समन्वय' ससम का हिस्सा बन गया और ससम को सही दिशा निर्देश देने में स्वाति जी की बड़ी भूमिका थी। कभी कबीर कीर्ति मंदिर में, कभी संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्याल में, कभी मैत्री भवन में, कभी वी. एच. ए. आई. के कार्यालय में, जहाँ कहीं ससम की बैठक होती थी, आप की उपस्थिति ज़रूर रहती थी और आप अपनी बातों को बड़ी स्पष्टता और बेबाकी के साथ रखती थीं। मेरी समझ में यह बात आई कि खादी की सफ़ेद साडी से लिपटी हुई इस सादगी की प्रतिमूर्ति के अन्दर एक ऐसा हृदय है जो समाज के सबसे निचले स्तर पर रहनेवाले लोगों के लिए, विशेषकर मेहनतकश किसानों, मजदूरों, दलितों, आदिवासियों और महिलाओं के लिए हमेशा संवेदनशील है। यह संवेदना उनके साथ हुई हर बातचीत और मंच पर दिए गए उनके भाषणों में बिलकुल स्पष्ट झलकती थी।

साझा संस्कृति मंच ने अपने गठन के शुरुवाती दौर में ही वाराणसी शहर के शिवपुर क्षेत्र में स्थित नारी संरक्षण गृह (संवासिनी गृह) में घटित कुख्यात संवासिनी काण्ड को लेकर व्यापक आन्दोलन छेड़ा था। इस आन्दोलन को शुरू करने के पहले स्वाति जी अन्य महिला साथियों के साथ बनारस के डी आई जी से अनुमति लेकर महिला थाने में जाकर पीडित बालिका से मिलीं, संवासिनी गृह गईं, सम्बंधित लोगों से बातचीत की। इस तरह जुटाई गयी जानकारियों के आधार पर सारे रिपोर्ट तैयार किये और आन्दोलन शुरू हुआ, जो बनारस शहर के 12 चयनित स्थानों पर अलग अलग दिनों में नुक्कड़ सभाएं, प्रेस वार्ता, आमरण अनशन, फिर क्रमिक अनशन आदि रूपों में महीनों चला। इसका परिणाम यह हुआ कि आरोपित सरकारी अधिकारियों और कुछ धन्ना सेठों को भूमिगत होना पडा, उनके घर की कुर्की का आदेश हुआ और अंततोगत्वा उन्हें आत्म समर्पण करना पडा। इस आन्दोलन के पीछे स्वाति जी का बहुत बड़ा योगदान था, जो उनकी वैचारिक बुद्धिमता और सांगठनिक सूझबूझ का परिचायक था। आगे चलकर ससम के बहुत सारे कार्यक्रमों में चाहे वह इराक-अमेरिकी युद्ध के दौरान युद्ध के खिलाफ आन्दोलन हो, गांधियन इंस्टिट्यूट ऑफ़ स्टडीज की मुक्ति का आन्दोलन हो, कोका कोला के खिलाफ आन्दोलन हो या नारायण देसाई की गाँधी कथा का आयोजन हो, सब में स्वाति जी ने सहयोग किया, पूरा समर्थन दिया। विश्वविद्यालय में अपने पद की प्रतिष्ठा के बावजूद आन्दोलनों में भाग लेने में उन्हें किसी तरह का संकोच नहीं था। युद्ध, हिंसा, साम्राज्यवाद, आतंक, भ्रष्टाचार, महिलाओं पर हिंसा आदि बातें स्वाति जी को परेशान करती थी, और इन बातों के खिलाफ संघर्ष करने के लिए वे हमेशा आतुर थी।

सन 1999 में विश्व ज्योति जनसंचार समिति का पंजीकरण करने के पूर्व मैंने स्वाति जी से उसकी जनरल बॉडी के सदस्य बनने का आग्रह किया तो उन्होंने सहर्ष स्वीकृति दी। मुझे बड़ी ख़ुशी है कि वे न केवल वार्षिक बैठकों में आती थी, बल्कि बहुत से उपयोगी सुझाव देती थी। प्रेरणा कला मंच के नुक्कड़ नाटकों और गीतों को सुनकर तारीफ भी करती थी, और सुधार के लिए सुझाव देने में बिलकुल नहीं कतराती थी। एक बार साम्राज्यवाद के खिलाफ एक अभियान के दौरान विख्यात जन कवि एवं गायक ग़दर का एक गाना (देखो रे देखो भैया, अमेरिकावाला आता, ब्रिटेन जापान संग बन्दूक लेकर आता.....) हम लोग गा रहे थे, उस गाने में एक ऐसा शब्द था जो महिलाओं के लिए अपमान जनक शब्द हो सकता था। स्वाति जी ने इसे बदलकर नए शब्द का प्रयोग करने का सुझाव दिया और हमने तुरंत ही इसका अनुपालन किया। इसी तरह पुलिस अत्याचार पर मंचित नुक्कड़ नाटक में एक ऐसा दृश्य दिखाया गया जिसमे एक किरदार का वीभत्स या घिनौने रूप का अभिनय से कुछ दर्शकों का मनोरंजन हो सकता था, लेकिन कुछ लोगों को अरुचि हो सकती थी, लेकिन यह मुद्दे से भटकने वाली बात थी। स्वाति जी ने बिना किसी हिचक के इस बात से हम कलाकारों को अवगत कराया। यह उनकी हिम्मत और निडर स्वभाव से बढ़कर कला की समझ, बारीकी से समीक्षा करने की क्षमता तथा कलाकारों और हमारी संस्था के प्रति आत्मीयता और उत्तरदायित्व का भी सबूत था।

भौगोलिक दूरी और व्यस्तता के बावजूद वे संस्था की बैठकों में आती थी। कुछ वर्षों बाद उन्होंने मुझ से अनुरोध किया कि बैठक में भाग लेना मुश्किल हो रहा है, इसलिए उन्हें समिति की ज़िम्मेदारी से निवृत्त किया जाए। बार बार व्यक्तिगत तौर पर और बैठक में सामूहिक रूप से उनके अनुरोध सुनने के बाद उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली गयी, उसके बाद ही उन्होंने हमारी संस्था की बैठक में आना छोड़ दिया। साधारणतः अन्य लोग इस तरह की प्रार्थना नहीं करते, असुविधा होने पर बिना कोई सूचना दिए छोड़ देते हैं। इस से भिन्न स्वाति जी का सिद्धांत पूर्ण व्यवहार उनके व्यक्तित्व की विशेष खूबी थी जो उनका अनुशासन, लगन और कर्मठता का सबूत भी था। कभी

कभार कुछ मुद्दों पर मेरी उनसे गर्मागर्म बहस भी हुई, लेकिन बहस का सार यह था कि स्वाति जी अपने सिद्धांतों के लिए कोई समझौता करने के पक्ष में नहीं थी।

स्वाति जी के साथ हम लोगों का संपर्क मात्र आन्दोलनों से सम्बंधित औपचारिक संपर्क नहीं था। वे बडी ही आत्मीयता से विश्व विद्यालय परिसर में स्थित अपने आवास पर आमंत्रित करती थी, आतिथ्य सेवा का अवसर ढूंढती थी, अक्सर फोन पर भी कुशल मंगल पूछ लिया करती थी, पर्व त्यौहार में शुभकामनाओं का आदान प्रदान भी होता था। कुछ वर्ष पूर्व जब अफलातून जी अस्वस्थ हुए तो उसकी खबर भी उन्होंने स्वयं दी, और हमेशा अपडेट किया करती थी। लेकिन जब वे स्वयं बीमार हुई, उसके बाद उनसे कभी भेंट नहीं हो पायी, न कभी बातचीत हो पाई, और कोविड-19 की विशेष परिस्थिति में अंत्येष्टि में भी भाग नहीं ले पाया, इन बातों की आत्म ग्लानी मेरे अन्दर बनी रहेगी।

जन आन्दोलनों के क्षेत्र में हमारे लिए प्रेरणास्त्रोत इस महान योद्धा की आत्मा को अनंत शांति मिले। वे कभी कभार मुझसे कुछ बातों के लिए प्रार्थना का आग्रह करती थी, क्योंकि वे आस्तिक थी। मेरा विश्वास है कि वे जो भी रही हो, आज परमात्मा के पास है। स्वर्गीय स्वाति जी से मेरी प्रार्थंना है कि आप जहां कहीं भी हो, वहां से हमें मेहनतकश लोगों के पक्ष में निरंतर संघर्ष करने में प्रेरणा और आशीर्वाद देती रहें। सादर श्रद्धा सुमन और नमन!

निदेशक, विश्व ज्योति जनसंचार समिति
एवं साझा संस्कृति मंच के समन्वयक

डॉ स्वाति को नमन

गंगा प्रसाद

समाजवादी जन परिषद का जब भी कोई राष्ट्रीय या महत्वपूर्ण कार्यक्रम होगा, उसमें डॉ स्वाति की गैरमौजूदगी बेहद अखरेगी। नर-नारी समता, आदिवासियों-दलितों, महिलाओं, युवजनों के हित के मुद्दों और आंदोलन के बारे में जब भी चर्चा होगी, वे स्मरण हो आएंगी। वे सजप का नेतृत्व करने वाले नेताओं में एक थीं। नेता कार्यकर्ता उनसे प्रेरित होते रहे हैं। मेरी उनसे सजप के तीन कार्यक्रमों में मुलाकात हुई थी। पहली बार तीन-चार साल पहले रांची में मुलाकात हुई थी। उसके बाद दूसरी बार रांची में ही मुलाकात हुई थी। तीसरी मुलाकात दिल्ली में हुई। वे वहां सजप के कार्यक्रम में किसी तरह आईं थीं। वे काफी अस्वस्थ थीं और चलने-फिरने में असमर्थ थी। लेकिन कार्यकर्ताओं से मुलाकात करने से अपने को रोक नहीं पाईं। हम कार्यकर्ताओं को कुछ बोल नहीं पाई थीं, केवल देखती रहीं और आंखें भर आईं थीं। उस दिन का वह दृश्य आज भी आंखों के सामने उभर आता है। क्या पता था कि उनसे यह मुलाकात आखिरी मुलाकात होगी। अशोक (सेकसरिया) जी अकसर स्वाति जी के बारे में चर्चा किया करते थे। वे चर्चा क्या करते, प्रशंसा का पुल ही बांधते। बताते कि स्वाति जी कितनी बहादुर और सक्रिय हैं। उनसे जब भी सामयिक वार्ता, लोहिया विचार मंच, समता संगठन, समाजवादी जन परिषद और किशन जी से संबद्ध बातें होती तो स्वाति जी के बारे में जरूर जिक्र करते। वे स्वाति जी का लिखा जरूर पढ़ाते थे। 1986 के अप्रैल तक मैं कलकत्ता में था तो अशोक जी से एक-दो दिन पर मिलते-जुलते रहता था। तब तक उनकी वजह से स्वाति जी के प्रति मेरे मन में अपार सम्मान हो गया था। मैं विचार और मन से तो किशन (पटनायक) जी और उनके संगठन से जुड़ा था लेकिन सक्रिय नहीं था। आर्थिक हालात की वजह से पत्रकारिता और अखबार की नौकरी में उलझ कर रह गया था। नौकरी से रिटायर होने के बाद सजप से जुड़ा। यूं कहें, चंद्रभूषण चौधरी जी और अफलातून जी ने मुझे आगे किया और थोड़ा-बहुत सक्रिय होने की शुरुआत रांची के कार्यक्रम से हुई। जब स्वाति जी से मेरी पहली बार मुलाकात हुई, तो उन्होंने पूछा, 'कैसे हैं?' लगा कि मैं उनसे कोई पहली बार नहीं मिल रहा हूं, अरसे से मिलता रहा हूं। वे कितनी मिलनसार थीं ! कार्यक्रम के दौरान उन्होंने विस्तार से जानना चाहा कि मैं क्या-क्या कर रहा हूं। उनकी बातचीत के बाद में जरूर यह सोचने लगा कि अभी भी जितना वक्त है, संगठन के लिए कुछ न कुछ कर सकता हूं। इस सोच के पीछे स्वाति जी से मिली प्रेरणा ही है। मेरे जैसे अनेक कार्यकर्ता होंगे जिन्हें स्वाति जी से प्रेरणा मिली होगी। उन्होंने काफी कुछ लिखा है। अनगिनत सभाओं, बैठकों, कार्यक्रमों में हिस्सा लिया है उनके अनेक भाषण होंगे। उसे संग्रह कर प्रकाशित करें, आम कार्यकर्ताओं तक पहुंचाएं तो यह भी उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

स्वाति : मेरी प्रेरणास्त्रोत

स्मिता

मेरे घर के फोटो एलबम में मेरी और स्वातिजी की एक फोटो है जिसमें मैं छह महीने की हूँ और दस साल की स्वातिजी एक फ्राक पहने मुझे गोद में उठाए हुए गंभीर मुद्रा में बैठी हुई हैं। इस गंभीर मुद्रा का कारण शायद यह है कि उनको बोला गया है वो अब बुआ बन गई है और उनको अब मेरी देखभाल करनी है। यह काम उनके लिए काफी कठिन था क्योंकि मैं काफी शरारती और जिद्दी बच्ची थी। मेरे स्वभाव के विपरीत स्वातिजी बहिर्मुखी, प्रतिभाशाली, पढ़ाकू, शांत और हंसमुख थी। मुझे याद नहीं है पर स्वातिजी बताती थी कि मैंने बचपन में उनके बाल खींचे, चिकोटी मारी और उनको परेशान किया पर वो मुझे डांटती नहीं थी। वह मेरी गणित और अंग्रेजी की पहली शिक्षिका थी। उनकी विज्ञान में रुचि के कारण ही मैंने कॉलेज मे रसायन शास्त्र पढ़ने का निर्णय लिया। मेरी अंग्रेजी साहित्य में रुचि भी उनके प्रयासों से पैदा हुई। मुझे मेरे दसवें जन्मदिन पर उन्होंने अमेरिकन लेखिका लुईसा एम अल्कोट की लिटिल वुमन किताब श्रृंखला भेंट की थी। उनके और मेरे पिताजी के साथ मैंने भारतीय शास्त्रीय संगीत सुनना शुरू किया और बाद में जब भी मौका मिला सुनती रही। बचपन में, मैं हमेशा उनके पीछे-पीछे घूमती रहती थी। एक बार मैंने उनसे पूछा कि, 'वो कहाँ जा रही है?' तो उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा 'जहन्नुम'। मैं उसके बाद काफी दिन तक समझती रही कि 'जहन्नुम' एक वास्तविक जगह है और उनसे पूछती रही कि, 'जहन्नुम कहाँ है?'। स्वातिजी का अपना एक मजाकिया अंदाज था जो अक्सर उनके प्रिय लोगों को देखने को मिलता था।

मेरा बचपन ग्वालियर में बीता। मेरी माँ को ठीक से हिन्दी नहीं आती थी तो अक्सर स्वातिजी मुझे और मेरे भाई को लेकर डॉक्टर के क्लिनिक और बाजार जैसी कई जगहोंपर जाती थी। उनके साथ बहुत सारी यादें जुड़ी है। एक बार मेरे सिर में चोट लग गई थी और खून निकल रहा था, तब स्वातिजी मुझे क्लिनिक ले कर गई पट्टी करवाने के लिए जबकि उनको खुद खून देखने से चक्कर आता था। हमारे पड़ोसी मराठी भाषी थे और हम दोनों भाई-बहन स्वातिजी के साथ उनके यहाँ कुएं से पानी भरने जाते थे। पड़ोसियों का एक बड़ा सा झूला था उसपर हम लोग झूलते और स्वातिजी उनसे काफी अच्छी मराठी में बातें करती। स्वातिजी की भाषाओं पर बहुत अच्छी पकड़ थी। वो अक्सर मुझसे दुखी रहती कि मैं अपनी हिन्दी और बाँगला सुधारने के लिए पर्याप्त प्रयास नहीं कर रही हूँ। वाराणसी में उनके साथ चार साल के प्रवास के दौरान मैंने हिन्दी अपने से और बाँगला उनके एक सहकर्मी से लिखना-पढ़ना सीखा। यह उनके प्रोत्साहन का ही नतीजा था और वो मुझसे काफी खुश हुई। इसी प्रवास के दौरान, मैंने बनारस हिन्दू विश्व विद्यालय में भौतिक विज्ञान, समाज शास्त्र, स्वास्थ्य, पर्यावरण और समसामयिक विषयों पर कई सेमीनार और विचार गोष्ठियोंमें स्वातिजी के साथ भाग लिया। मेरे केसला आ जाने के बाद भी अक्सर हम लोग समसामयिक विषयों पर,स्वास्थ्य, विज्ञान और पर्यावरण में क्या हो रहा है इस पर चर्चा करते। स्वातिजी बहुत ही अनुशासित व्यक्ति थी। वो हर दिन नियम से भौतिक विज्ञान अपने लिए और अपने छात्रों को पढ़ाने के लिए पढ़ती थी। वर्तमान में राजनीति, विज्ञान, खगोल शास्त्र आदि में क्या चल रहा है इसके ऊपर खबर, नया शोध, यह सब उनके रोज पढ़ने में आता था।

सन् 1983 में, उनके प्रभाव से मैं समता संगठन में शामिल हुई और उन्होंने मेरा सुनील से परिचय करवाया। मेरे माता-पिता मेरी सुनील से शादी के खिलाफ थे और बाद में स्वातिजी के मनाने से राजी हो गए। मेरी बड़ी बुआ चित्रा बसु चौधरी (जो अभी जीवित है) उन्होंने और स्वातिजी ने मिलकर वाराणसी में मेरी और सुनील की शादी का भोज दिया।स्वातिजी वाराणसी में नारी एकता (महिलाओं के अधिकारों के लिए लड़ने वाला एक संगठन) के संस्थापक सदस्योंमें से एक थी। अस्सी के दशक के शुरुआती सालों में नारी एकता में काम करते हुए मैंने स्वातिजी से राजनैतिक और संगठनात्मक काम सीखा। उनके प्रोत्साहन से मैंने 1984 में ऑडिशा में बाल्को कंपनी की बाकसाइट खनन के खिलाफ चल रहे गंदमार्दन आंदोलन में जाकर काम करने का निर्णय लिया। इसी दौरान मुझे ऑडिशा में किशन पटनायक, छात्र युवा संघर्ष वाहिनी,सर्वोदयी नेता आलेक पात्रा और मनमोहन साहू आदि लोगों के साथ काम करने का मौका मिला।अपने समता संगठन के कार्यकाल में मैंने स्वातिजी के साथ मिलकर शिवपूजनजी के लिए बिहार में चुनाव प्रचार भी

किया। मुझे याद है लंबी-लंबी पैदल यात्राएं जिसमें हम लोग कई बार कमजोर हिलते हुए पुलों और पानी से भरी हुई नहरों के ऊपर चलतें।

सन् 1989 में जब सुनील और राजनारायण जेल गए थे तब स्वातिजी हम लोगों के जंगल के बीच में बने घर (लोहिया अकेदमी, बांसलाखेड़ा, मध्य प्रदेश) में हम लोगों के साथ रहने आई। वो वहाँ एक साल तक हमारे साथ रहीं। वहाँ रहते हुए उनको काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ा। वहाँ कोई पाखना नहीं था और शौच के लिए बाहर जाना पड़ता था। सोने के लिए खटिए भी कम थे तो उन्होंने मुझे और शिउली (जो उस समय 18 महीने की थी) को खाट दे दिया और खुद नीचे जमीन पर आँगन में सोई। उन्होंने अपने इस मध्य प्रदेश प्रवास के दौरान कई रैलियाँ आयोजित की, कलेक्टर से बात की, ब्रह्मदेव शर्मा और मेधा पाटेकर से मिली और जेल में फंसे हुए सुनील और राजनारायण को बाहर निकालने के लिए प्रशासन पर दबाव बनाया। इसी दौरान स्वातिजी और हम लोगों ने विरोध स्वरूप एक पैदल रैली निकाली केसला से होशंगाबाद तक। शिउली उस समय एक साल की थी और देवेन्द्र के कंधे पर बैठ कर होशंगाबाद तक गई। पहली रात हम लोग एक नहर के किनारे मंदिर में रुके और अगले दिन हमनें होशंगाबाद तक की यात्रा पूरी की। उसके बाद भी वो बार-बार अलग-अलग राजनैतिक कारणों से मध्य प्रदेश आती रही। कभी राजनैतिक कार्यक्रमों में हिस्सा लेने के लिए,तो कभी समाजवादी जन परिषद के चुनाव प्रतिनिधियों, शमीम मोदी, फागराम और सुनील के चुनाव प्रचार के लिए। हम लोगों ने 1990 में बांसलाखेड़ा छोड़कर कहीं और जाकर रहने का निर्णय किया। सुनील बैतूल जिले में भोरां के पास नदी के किनारे एक सुंदर पर अकेले बने घर में रहना चाहता था। स्वातिजी ने कहा कि वहाँ रहना (किसी बस्ती से दूर) मेरे और बच्चों के लिए व्यवहारिक रूप से सही नहीं होगा और हमें बस्ती के बीच में रहना चाहिए और इस तरह से हम लोग बांसलखेड़ा से भूमकापुरा रहने आ गए। वो हमारे भूमकापुरा वाले इस घर में (जहां हम चार साल तक रहे) हमारे साथ कुछ दिनों के लिए रहने आई। हमारे इस घर के सामने एक हैंडपंप था। वहाँ से पानी लाना होता था घर के काम के लिए और हैंड पंप पर जाकर ही लोग नहाते थे। यहाँ भी उनको खुले में नहाने, शौच जाने में दिक्कतें हुई पर उन्होंने कभी कोई शिकायत नहीं की।

स्वातिजी मेरी जिंदगी के सब संकट और बड़ी घटनाओं के समय में मेरे साथ थी। शिउली के जन्म के समय में वो मुंबई में मेरे साथ थी। बालू का जन्म तो वाराणसी में ही हुआ वहाँ भी वो अस्पताल में मेरे साथ थी। बालू के जन्म के समय मेरा ऑपरेशन होना था जो काफी जटिल और दिक्कतों वाला ऑपरेशन था। ऑपरेशन में देर हो रही थी तो उन्होंने डॉक्टर और नर्सों से बहस करके मेरा ऑपरेशन पहले करवाया। यदि ऑपरेशन में देर होती तो मेरी और बालू दोनों की जानें जा सकती थी और इस तरह स्वातिजी ने हम दोनों की जान बचाई। बालू के जन्म के बाद पहली रात वो पूरी रात बालू को गोद में लेकर बैठी रहीं।बनारस के सर सुंदरलाल सरकारी अस्पताल में बच्चों को लेटाने वाले झूले में कॉकरोच घूम रहे थे और उनको डर था कि बालू को कोई संक्रमण हो सकता है, वहाँ लेटाने से।

यह विडंबना है कि वो मुझे केन्सर हो जाने पर मैं उससे उबर पाऊँगी या नहीं यह सोच कर चिंतित थी और मेरी देखभाल के लिए दिल्ली आई। और अब वो मुझसे पहले हमें छोड़ कर चली गई हैं। मेरी बीमारी के इलाज के लिए 2019 की गर्मी के दो महीने जो हमने दिल्ली में साथ गुजारें वो अब खट्टी-मीठीयादें बन कर रह गए हैं। स्वातिजी का दुनिया को देखने का एक सकारात्मक नजरिया था। उन्होनें मुझे अक्सर मेरी नकारात्मक सोच से बाहर निकालकर उम्मीद की नज़रों से दुनिया को देखना सिखाया।उन्होंने मुझे जिंदगी को साहस और उत्साह के साथ जीना सिखाया और एक राजनैतिक- सामाजिक कार्यकर्ता बनाया।मैं आज जो कुछ भी उनके कारण हूँ,उनके बगैर मैं आज जो कुछ भी हूँ वो नहीं होती।

स्वातिजी और मैं पूरी जिंदगी एक दूसरे के साथ लगातार संपर्क में रहें जब वो अपनी पढ़ाई के लिए विदेश गई थी तब भी। यह संपर्क पहले चिट्ठियों के द्वारा और बाद में फोन के द्वारा बना रहा। फोन आ जाने के बाद वो मुझसे हर दिन फोन पर बात करती थी चाहे वो कितनी भी व्यस्त क्यों ना हों। मेरे मन में उनकी यादें उस समय से हैं जब से यादें बनती है एक बच्चें के मन में, शायद मैं जब तीन साल की थी तब से। और यह यादें उस समय तक है जब वो बहुत कमजोर हो गई थी इस बीमारीं में और फोन पर ठीक से बात नहीं कर पा रही थीं। अप्रैल 2020 में मेरी आखिरी बार उनसे फोन पर बात हुई। यह यादें एक जिंदगी भर की है। और अब उनके गुजर जाने के बाद मैं सोचती हूँ मेरी बची हुई जिंदगी गुजारने के लिए क्या यह यादें काफी होंगी?

(अनु. इकबाल अभिमन्यु, शिउली वनजा)

डॉ. स्वाति की अडिग राजनीतिक दिशा

जोशी जैकब

अपने राजनैतिक जीवन के एक बड़े हिस्से के दौरान डॉ स्वाति सजप की एक वरिष्ठ साथी और मित्र के रूप में मुझसे जुडी रहीं और उनसे सतत संवाद जारी रहा था। जब मैंने नवम्बर 1991 में पुणे के नज़दीक पारगांव में हुए जनांदोलन समन्वय समिति (जसस) के शिविर में भाग लिया, वहाँ वे एक आकर्षक व्यक्तित्व के रूप में उपस्थित थीं। शिविर में मेरी भागीदारी स्व किशन पटनायक के सीधे संपर्क के कारण संभव हो सकी, जो हमारे समता विद्यार्थी संगठन के शिविर में तिरुवनंतपुरम आए थे। मैंने जसस के पुणे शिविर में विद्यार्थी संगठन के प्रतिनिधि के रूप में ही भाग लिया। किशनजी जसस और उस शिविर के नेता थे, लेकिन नेतृत्व में भागीदारी के डॉ लोहिया के आग्रह को दृढ़ता से रखने के कारण एक महिला नेत्री के रूप में डॉ स्वाति की वहाँ उपस्थिति का एक विशेष महत्व था।

जसस जनांदोलनों का एक समन्वय था जिसमें मुख्य रूप से समाजवादी संगठन, जयप्रकाश-प्रेरित युवा आंदोलन की गैर-पार्टी धारा और स्वतः-स्फूर्त नव-सामाजिक आंदोलन जैसे कर्नाटक का डीएसएस (दलित संघर्ष समिति) और बंगाल का उत्तर बंग तपसीली जाति आदिवासी संगठन शामिल थे। इन संगठनों में डीएसएस की स्थापना कुछ समाजवादी नेताओं और बुद्धिजीवियों ने की थी जो अडिग लोहियावादी थे और अम्बेडकर को भी मानते थे क्योंकि उन्होंने सामाजिक गैर-बराबरी में आमूल परिवर्तन लाने में बाबासाहब के विशेष महत्व को पहचान लिया था। साथ ही उन्होंने ये पाया कि महात्मा गांधी भी एक ऐसे आर्थिक ढाँचे के निर्माण के लिए प्रासंगिक थे जो दलितों और समाज के अन्य वंचित तबकों के लिए फायदेमंद हो। डीएसएस की यह विशिष्ट समझदारी उस विचारधारा से आई जो उसके संस्थापकों ने डॉ लोहिया से हासिल की। उत्तर बंग तपशीली जाति और आदिवासी संगठन एक स्वतः-स्फूर्त उभार था लेकिन समाजवादी नेताओं ने, जिन्होंने मुख्यधारा की राजनैतिक पार्टियों की सीमाओं को समझ लिया था, उसे एक राजनैतिक दिशा देने में प्रेरक भूमिका निभाई।

1974 में जब समाजवादी पार्टी दो धड़ों में बँट गई, कुछ वरिष्ठ नेता दोनों ही समूहों से अलग रहे। स्वतंत्र रहकर उन्होंने लोहिया विचार मंच की स्थापना की, जिसमें ओम प्रकाश दीपक, इंदुमती केलकर, किशन पटनायक और राम इकबाल बरसी प्रमुख भूमिका में थे। कुछ आदर्शवादी नेता, जैसे प्रो. केशवराव जाधव, पार्टी से जुड़े रहते हुए भी विचार मंच का हिस्सा बने। दीपक जी की जल्द ही मृत्यु हो गई। चूंकि विचार मंच पूर्ण रूप से राजनैतिक लक्ष्यों की प्राप्ति के में असमर्थ था, किशनजी और उनके साथी नए विकल्पों की तलाश में थे। किशन पटनायक सही दिशा की पहचान रखने वाले एक उर्जावान नेता थे। उनके लिए सिर्फ अतीत पर टिके किसी संगठन से संतुष्ट होना सम्भव नहीं था। वे 1967 में समाजवादी युवजन सभा के अध्यक्ष रह चुके थे और बहुत से युवा समाजवादी उन्हीं जैसे विचार रखते थे। इसलिए 1980 में एक पूर्णतः राजनैतिक संगठन की स्थापना के उद्देश्य से किशन पटनायक के नेतृत्व में बैंगलोर में एक सम्मेलन रखा गया। प्रो. नंजुंदास्वामी, प्रो. रवि वर्मा कुमार जैसे युवा नेताओं ने भी इसमें भाग लिया। बिहार से रघुपति, शिवानंद तिवारी, पूर्व विधायक शिवपूजन सिंह और दिल्ली से विजय प्रताप आदि ने समता संगठन की स्थापना में हिस्सा लिया। वे युवा जो समता संगठन की शुरुआत से ही किशन जी के साथ खड़े रहे उनमें जसवीर सिंह, डॉ. सोमनाथ त्रिपाठी, अजय खरे, घनश्यामजी, गोपाल राठी, राजनारायण, सुनीलजी, डॉ स्वाति, लिंगराज प्रधान, योगेंद्र यादव, डॉ. चंद्रभूषण चौधरी, डॉ. करुणा झा, चंचल मुखर्जी, अफलातूनजी आदि प्रमुख हैं, जिनके कारण यह एक जीवंत संगठन बन सका। लेकिन विजय प्रताप के नेतृत्व में एक छोटे समूह ने (फोर्ड और रॉकफेलर और फोर्ड फाउंडेशन) विदेशी संस्थाओं से वित्तीय सहायता लेने की वकालत की। चूंकि ऐसी संस्थाओं द्वारा वित्तपोषित एनजीओ साम्राज्यवादी ताकतों की एक चाल हैं, किशन पटनायक और उनके साथियों ने यह प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया और रघुपति और विजय प्रताप जैसे कुछ युवा नेताओं ने संगठन छोड दिया।

डॉ. स्वाति, एक ऐसी साथी जो डॉ. लोहिया द्वारा स्थापित आदर्शों में दृढ़ विश्वास रखती थीं और सच्चिदानंद

सिन्हा और किशन पटनायक द्वारा जोड़े गए नव-समाजवादी मूल्यों और लक्ष्यों में प्रशिक्षित थी, समता संगठन के साथ खड़ी रहीं। वे समता युवजन सभा की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष चुनी गईं, एक ऐसे समय जब इस संगठन का दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में अच्छा जनाधार था। इस समूह ने फ्री थिंकर्स (मुक्त चिंतक) नामक संगठन के साथ मिलकर जेएनयू छात्रसंघ चुनाव में जीत हासिल की और कैम्पस के सबसे बड़े आंदोलन का नेतृत्व किया, जिसमें लगभग चार सौ छात्रों को लम्बे समय तक जेल में रखा गया था।

इस पृष्ठभूमि के कारण जसस में भी उनका एक प्रमुख स्थान था। जब मैं पुणे शिविर में जसस के नेताओं से मिला, मुझे लगा कि वे एक ऐसी नेता हैं जिन्हें केरल में पेश किया जा सकता है क्योंकि केरल के समाजवादी आंदोलन के आरम्भ से ही और लोहिया विचार वेदी में भी एक पुरुष-प्रधान महौल रहा था। केरल वापस लौटते के बाद मैंने स्व. पी वी कुरियन जी और जोस ज़कारिया जी से पूरे पुणे शिविर के बारे में बात की और स्वातिजी को लोहिया विचार वेदी के आसन्न राज्य सम्मेलन, जो तिरुवनंतपुरम में होना था, में मुख्य अतिथि के रूप में बुलाने का सुझाव दिया। सम्मेलन की आयोजन समिति की तरफ से दिए गए निमंत्रण पर वे लोहिया विचार वेदी के 1992-93 में हुए सम्मेलन में आईं। अफलातूनजी पुणे शिविर में नहीं आए थे लेकिन तिरुवनंतपुरम में वे स्वातिजी के साथ थे। सम्मेलन बहुत उबाऊ रहा क्योंकि, मुख्यधारा की पार्टियों के नेताओं ने बहुत समय नष्ट कर दिया। कार्यक्रम की समाप्ति के बाद डॉ. स्वाति, अफलातूनजी और उनकी बेटी प्योली मेरे घर आए। अब प्योली सुप्रीम कोर्ट की वकील और समाजवादी जन परिषद की एक सशक्त कार्यकर्ता है। हमारे वरिष्ठ साथी स्व. के. जे. जॉन, जिन्हें पुराने समाजवादी खेमे में अडुक्कम जॉनी के नाम से जाना जाता था, उस समय कोट्टायम जिले के पूर्वी हिस्से में एक पहाड़ी गांव में रह रहे थे। हम सभी उस सुंदर गांव में जॉनजी के घर मिलने गए थे। के. जे. जॉन अडुक्कम बाँध के निर्माण के खिलाफ बनी संघर्ष समिति के संयोजक थे। बांध के बनने पर जॉन जी को अपने घर के सामने पक्की सडक का फायदा मिलता, जो प्रस्तावित बांध के बाजू में था। वह पर्यटन से जुडा व्यवसाय करके बांध के निर्माण का फायदा उठा सकते थे। लेकिन चूंकि वे कृषि के प्रति समर्पित थे, एक व्यर्थ के बांध के लिये उपजाऊ खेती की जमीन को बर्बाद करने के बारे में सोचना भी उनके लिए सम्भव नहीं था। जॉन भाई के घर तक पहुंचने के लिए एक छोटी से चश्मे के ऊपर बना एक झूलता हुआ पुल पार करना पडता था, और पहाड़ की ढलान पर बना हुआ वह घर और घाटी का विहंगम नजारा बहुत सुंदर लगता था।

पार्टी की स्थापना की प्रक्रिया अनेक मीटिंगों, शिविरों और संघर्षों के ज़रिए जारी रही। जसस ने यह बहस जारी रखी की एक राजनैतिक पार्टी की स्थापना समाज में आमूलचूल परिवर्तन के लिए कितनी जरूरी या अनिवार्य है। छात्र युवा संघर्ष वाहिनी और जनमुक्ति संघर्ष वाहिनी ने, जिनका गैर-पार्टी राजनीति में एक वैचारिक विश्वास था, पार्टी बनाने का कड़ा विरोध जारी रखा। वाहिनी धारा को बोधगया मठ की जमीन को लोगों के बीच वितरित करने के लगभग एक दशक लम्बे आंदोलन में सफलता हाथ लगी थी और उसके नेताओं, जैसे कारू, विश्वनाथ बागी, कौशल गणेश, बिंदु सिंह आदि की बिहार और उत्तर भारत में अन्यत्र भी एक प्रभावशाली छवि थी। वाहिनी के इन नेताओं को धीरे धीरे पार्टी बनाने की आवश्यकता के पक्ष में राजी कर लिया गया। लेकिन किशन जी वाहिनी धारा में विभाजन नहीं करना चाह्ते थे। एक छोटा समूह, जो गैर-पार्टी संघर्ष के विचार पर कायम था, दोस्ताना संबंधों के बावजूद पार्टी निर्माण की प्रक्रिया से अलग रहा। अन्य साथियों के साथ साथ डॉ. स्वाति ने भी उस संवाद और बहस में अहम भूमिका निभाई जिसके जरिए सभी प्रतिभागी संगठन पार्टी बनाने को राजी हुए।

पारगांव शिविर के बाद 1992 में रांची, 1993 में पुणे, 1993 में जलपाईगुड़ी और दिसम्बर 1993 में नागपुर में जसस और पार्टी निर्माण की प्रक्रिया की प्रमुख बैठके हुईं। उन सभी लोगों और समूहों तक पहुंचने के लिए 'सम्पर्क समिति' का गठन किया गया जो व्यवस्था परिवर्तन के लिए एक क्रांतिकारी सोच के साथ समता, स्वतंत्रता और एक खुली लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए शांतिपूर्ण संघर्ष में विश्वास रखते थे। इस दौरान सोशलिस्ट पार्टी (लोहिया) सोशलिस्ट फ्रंट जिसमें महाराष्ट्र के करीब 30 समाजवादी समूह शामिल थे, सम्पर्क समिति का हिस्सा बने। एक उपसमिति के द्वारा 'समाजवादी नजरिया' नामक दस्तावेज तैयार करने के बाद हैदराबाद में एक अधिवेशन रखा गया। उस मसौदे को पारित करने की उस बैठक कई आखिरी दिन, डॉ. बालचंद्र मुंगेकर ने उसे एक मज़ाक कहकर सबको सकते में डाल दिया। अधिवेशन एक पशोपेश में फंस गया, कोई भी कुछ कहने से बच रहा था। फिर मैंने खड़े होकर कहा कि यह दस्तावेज एक लम्बी

और विस्तृत बहस के बाद तैयार किया गया था और पार्टी गठन की प्रक्रिया के लिए अलग अलग धाराओं के लोग इकट्ठा हुए थे, सिर्फ एक व्यक्ति, जो पूरी प्रक्रिया में शामिल नहीं हुए थे, आखिरी वक्त में आकर नजरिए को मज़ाक और अस्वीकार्य नहीं बता सकते। खड़े होने से पहले मैंने संजय मंगला गोपाल और स्वातिजी से पूछा कि क्या मैं यह बिंदु उठा सकता हूँ, और दोनों ने मेरा समर्थन किया। उसके बाद ही मैंने हस्तक्षेप किया, डॉ. मुंगेकर ने अपनी आपत्ति वापस ली और अधिवेशन ने अपने प्रयोजन को पूरा किया। अंततः पार्टी की गठन समिति ने वैचारिक प्रश्नों पर बात करने के लिए मार्च 1994 में दिल्ली में पांच दिन का शिविर रखा। यह एक सुंदर अनुभव था, जिसके दौरान वैचारिक एवम् रणनीतिक मुद्दों और नई राजनैतिक संस्कृति पर एक उत्तेजक, विस्तृत और गहरी बहस हुई। इस पूरे घटनाक्रम के दौरान स्वातिजी के साथ मेरा रिश्ता और गाढ़ा होता गया।

डॉ स्वाति हमारी वरिष्ठ साथी थीं और हमारी विचारधारा भी एक दूसरे के नज़दीक थी, इसलिए उनसे घनिष्ठता थी। यह घनिष्ठता उनके अफलातूनजी व प्योली के साथ कई बार हमारे घर रुकने से और प्रगाड़ हुई। बाद में मेरी पत्नी डॉ बीचु एक्स मल्य्ल के आ जाने से हमारे संबधों में और नजदीकी आयी। स्वातिजी की माध्यम से मेरी सुनीलजी, स्मिताजी, शिउली और इकबाल से घनिष्ठता भी बढ़ी। शुरुआत से ही डॉ स्वाति केसला, मध्य प्रदेश के आदिवासी बहुल इलाके में चल रहें कामों से जुड़ी रहीं। इसी तरह से वो वह बिहार के रोहतास जिले के सासाराम क्षेत्र में (जो पूर्व विधायक शिवपूजन सिंह का कार्यशेत्र था) चल रहे आन्दोलनों में भी शामिल होती रहीं। सासाराम इलाके में हमारे संगठन का आधार किसानो के बीच था। समता संगठन और उसके बाद समाजवादी जन परिषद के मूल विचारों में नर-नारी समता की बात थी। स्वातिजी इस विषय पर अक्सर पहल करती थी, और अडिग रहती थी, जिसके कारण यह पार्टी पुरुषों के वर्चस्व वाली पार्टी से एक ऐसी पार्टी बनी जहाँ कई महिला नेताएं हैं।

सन1999 में दो बार राष्ट्रीय सचिव रहने के बाद मैं केरल राज्य का पार्टी अध्यक्ष बना। उसके बाद केरल में सजप की कोट्टायम इकाई ही सक्रीय थी।सजप के केरल के एक प्रमुख पदाधिकारी ने इस्तीफा दे दिया था, जिससे राज्य में पार्टी को धक्का लगा था। संसद में किसानों के अपने बीजों पर अधिकार के खिलाफ एक बिल आया था उसके विरोध में हमने विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून को एक कार्यक्रम कोट्टायम में किया था। इस कार्यक्रम में स्वातिजी और सुनीलजी मुख्य वक्ता के रूप में आये थे। यह कार्यक्रम सफल रहा। एर्नाकुलम स्टेशन से दोनों जब अपनी वापसी की ट्रेन का इंतज़ार कर रहे थे, वहां उस साथी से उनकी भेंट हुई जिसने पार्टी से इस्तीफा दे दिया था। बाद में मुझे स्वातिजी ने बताया कि उस साथी ने उनसे मेरे खिलाफ कुछ बातें कहीं और यह कहा कि केरल में नेतृत्व की कमी है। स्वातिजी ने जो पार्टी के लिए लगातार श्रम कर रहे हैं उनके प्रति हमेशा अपनापन दिखाया। स्वातिजी बहुत पढ़ी लिखी थीं, उन्होंने अपनी पीएचडी संयुक्त राज्य अमेरिका से की थीं और वो विख्यात काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में पढ़ाती थीं। इसके बावजूद उनका साधारण कार्यकर्ताओं से जुड़ाव सराहनीय था। वह बेझिझक धरना, रैलियों, आंदोलनों और लडाइयों में शामिल होती थी और नारें लगाने में आगे रहती थी। वह पूरे देश के मुख्य कार्यकर्ताओं को जानती-पहचानती थी। पार्टी के अन्दर कभी-कभी किसी विवादित मुद्दे पर बहस होते समय मेरे प्रिय मित्र अफलातूनजी बहुत गुस्सा हो जाते थे। तब स्वातिजी असमंजस में होते हुए भी शिष्टाचार से जो पक्ष उनको सही लगता था उसका साथ देती थी। उन्होंने एक बार मुझे बताया था कि अफलातूनजी घर पर इतने गुस्से में बात नहीं करते हैं।जब में स्वातिजी को याद करता हूं, तो कई घटनायें और किस्सें मेरे मन में आते है।

स्वातिजी के जिंदगी में जो भी तूफान आए उन्होंने उसका साहस और दृढ़ता से सामना किया। उनकी विचारधारा बहुत ही स्पष्ट थी। अपनी विचारधारा और राजनैतिक दिशा से वह कभी भी नहीं डगमगाई। जब वह समता युवजन सभा और समता संगठन से जुड़ी तब बहुत सारे लोग अपना राजनैतिक करियर बनाने की चाह से स्थापित राजनैतिक पार्टियों जैसे जनता पार्टी और लोक दल से जुड़ रहे थे। लेकिन स्वातिजी ने अपने व्यक्तिगत फायदे के लिए कभी राजनीति नहीं की। उनके सिद्धान्त और उनकी दिशा तय थी और वो बिना कोई लाभ पाए सजप में बनी रही। उनका जीवन आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा देता रहेगा, ताकि वो सीख सकें कि जिंदगी के हर पहलू के मौलिक बदलाव और बराबरी- आर्थिक, सामाजिक,नर-नारी,आंचलिक व राजनैतिक बराबरी- के लिए समर्पित जीवन कैसा होता है।

(अनुवाद- इकबाल अभिमन्यु,
शिउली वनजा)

...जैसे कोई गीत अनगाया रह गया हो

विनोद पय्याडा

हम सभी स्वाति जी को एक राजनैतिक नेता के तौर पर जानते हैं। उन्हें समाजवाद के नए स्वरूप और संपूर्ण परिवर्तन के आंदोलन में गहरी आस्था थी। वे बेहद संजीदा और प्रतिबद्ध नेता थीं और हमें सही दिशा की ओर प्रेरित करती थीं। लेकिन इसके साथ उनके बारे में मेरे मन में कुछ भावनाएं हैं। वे बेहद स्नेहिल थीं और बड़ी बहन जैसा ख्याल रखती थीं।

स्वाति जी से मेरी पहली भेंट 1990 के दशक के शुरुआत में हुई थी, जब वे तिरुवनंतपुरम में लोहिया विचार वेदी के सम्मेलन में भाषण देने आई थीं। तब हम कुछ थोड़े-से कार्यकर्ताओं ने एक नए लोकतांत्रिक समाजवादी संगठन की पहल का समर्थन किया था। उस वजह से भी उनसे घनिष्ठ संबंध बने। फिर तो, समाजवादी जन परिषद के गठन के पहले और बाद उनसे कई बार मिलना हुआ। मुझे याद है कि उन्होंने हमेशा हम लोगों से करीबी संपर्क बनाए रखा और केरल के कामरेडों का खास ख्याल रखती थीं क्योंकि हम अपने कार्यक्रमों में भाषाई अल्पसंख्यक हुआ करते हैं। वे हमेशा यह ख्याल रखती थीं कि कार्यक्रमों की पूरी कार्यवाही का फौरन अनुवाद मुहैया हो। ज्यादातर मौकों पर अपनी व्यस्तताओं के बावजूद वे यह काम खुद किया करती थीं और चर्चा-बहस के बारे में मेरी राय जानने को उत्सुक रहा करती थी। दो या कुछ अधिक राष्ट्रीय सम्मेलनों में मुझे सामाजिक प्रस्ताव तैयार करने और पेश करने की जिम्मेदारी दी गई। स्वति जी ने इसे ठीक-ठीक तैयार करने में मेरी काफी मदद की। उस समय उन्होंने मुझे इस काम की याद दिलाने के लिए कई बार फोन किया। मैं उस स्नेह और संकल्प को भुला नहीं सकता। मैंने यह भी महसूस किया कि जब हम 2018 में राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक के लिए ससाराम और पिछले साल दिल्ली गए थे तो उन्होंने मेरी पत्नी पदमिनी को भी उतना ही प्यार दिया। उन्होंने मेरी पत्नी का परिचय संघमित्रा जी से भी कराया।

1990 के दशक के मध्य में वे वडकारा में हमारे पैतृक घर में रुकी थीं। वे रमेशजी की जगह कूठुपरंबा में एक जनसभा को संबोधित करने आई थीं। उन्होंने लंबा और जोश से भरा भाषण दिया। काफी लोग जुटे थे और बारिश होने के बावजूद लोग डटे रहे।

अक्सर हमारे मंचों पर वे रवींद्र संगीत गाया करती थीं और उनकी सुरीली आवाज दिल को छू जाती थी। उनके निधन की खबर सुनी तो लगा कि प्रेम और स्नेह का संगीत हमसे छिन गया, जैसे कोई गीत अनगाया रह गया हो। **(अनुवाद– हरिमोहन मिश्र)**

समाजवादी जज़्बे की पराकाष्ठा

जगनारायण महतो

स्वातिजी से साक्षात्कार पहली दफ़ा बनारस कैंट के प्लेटफार्म पर हुई। चश्मा पहने हुए थीं। पान, सादा या मीठा (?) खा रही थीं। बंगाली स्टाइल में नीला (!) पार (कोर) की साड़ी पहने हुई थीं। बहुत अच्छा लगा। बहुत अच्छा इसलिए और भी लगा कि यह वही शख्सियत थी, जिसने मेरे जानने वालों से मेरा फोन नंबर लेकर बात की, जब मैं पार्टी की दिल्ली शाखा के कार्यकारिणी सदस्य मनोनीत हुआ था। प्लेटफार्म पर खड़े –खड़े जब काफी समय बीत गया, और रेलगाड़ी नहीं आयी। पता चला कि गाड़ी काफी देर से आएगी। स्वाति जी ने कहा, 'चलिए! कहीं बैठा जाये!'। और चल दीं। मैं भी साथ चल दिया। जाकर 'सर्वोदय बुक स्टाल' में अन्दर चली गयीं। मैं प्रवेश पर ही रुक गया। घुसकर कहा, अरे! रुक क्यूँ गए? अन्दर आईये, ये, दुकान मालिक की ओर ऊँगली दिखाते हुए कहा, 'ये, अफलातून जी के बचपन के मित्र हैं।' मैं अन्दर जाकर उनके सामने बैठ गया। कुछ इधर-उधर कि बातें हो रही थी कि अचानक मेरी नज़र 'द्विखंडिता' पर गयी। मैं तस्लीमा नसरीन की 'लज्जा' पढ़ चुका था। इस पुस्तक को मैं खोज रहा था। हाँ! उतनी शिद्दत से नहीं। जब मिल गई तो सोचा कि ख़रीद ही लूँ। मांगकर भूमिका

पढने लगा। स्वातिजी ने पूछा, 'आपको तस्लीमा नसरीन की लेखन क्यूँ पसंद है?' मैंने कहा, 'देखिये! हिंदी, उर्दू में बहुत से लेखिका हैं, हुई हैं, जो प्रगतिशील हैं। पर कहीं न कहीं वो अपनी अभिव्यक्ति को पूरी आज़ादी नहीं दी जिससे वो बेरहम व्यवस्था कि नज़र में आ जायें। पर, तस्लीम नसरीन ने अपनी कलम को कुंद नहीं किया। नजीतन, उसे अपना वतन और हिंदुस्तान, दोनों ने जब स्थाई पनाह नहीं दिया तो वह स्वीडेन चली गयी। 'स्वातिजी भी नसरीन की भूरी भूरी प्रशंसा करती रहीं, ख़ासकर, उपन्यास 'लज्जा' के सन्दर्भ में। स्वातिजी को, यूँ कहिये किसी को भी अभी तक ये समझ में नहीं आया कि लज्जा के किस वाक्य या पैराग्राफ में भगवान, प्रभु ईश या खुदा की बुराई या निंदा (Blasphemy) है? ट्रेन आने का वक्त हो गया। सर्वोदय बुक स्टाल के मालिक भाई को सलाम करके हम दोनों अपने –अपने डब्बे की ओर प्रस्थान कर दिए। नीरस राजनीति –कम से कम मेरे लिए –को छोड़कर साहित्य में गहरी रूचि रखने वाले किसी भौतिक शास्त्री को देखकर अनायास हॉल 4 (आई आई टी कानपुर) का भौतिक शास्त्री पंकज शरण याद आ गया। बड़ा ही सुन्दर चित्र बनाता था (है)।

हम सब सासाराम जा रहे थे- समाजवादी जन परिषद्, राष्ट्रीय परिषद् के लिए, 2017 में। गाड़ी देर से चल रही थी। वाराणसी से खा-पीकर चला था। गाड़ी को सासाराम 8-9 बजे रात में पहुँच जाना था। पर, 8-9 तो रास्ते में ही बज गया। रात के खाने का क्या होगा ? सोंच ही रहा कि पराठा या पूरी (याद नहीं) सब्जी के साथ आ पहुंचा। स्वातिजी ने भेजवाया था। भारतीय रेल व्यवस्था से पूरी तरह वाकिफ़ होने से, यात्रा के दौरान आनेवाली समस्या का अंदाजा होगा। अगर ट्रेन में हमलोग खाना नहीं खाये होते तो, आधी रात में सासाराम में क्या हाल होता, उसका जिक्र कभी और। हर महिला मूलतः माँ होती हैं। स्वातिजी अपवाद नहीं थीं।

एक घटना और ! राजीव गाँधी कैंसर अस्पताल, दिल्ली में भर्ती थी। हालत गंभीर तो थी ही। होश शायद आ गया था। मैं अपनी आदतानुसार 8-10 सत्तू के पराठे बनवा लिए, हमें पूरी तमीज़ थी कि स्वातिजी तो क़तई नहीं खा पाएंगी फिर भी बिहारी कल्चर से मज़बूर था। हम बीमारी से 'शीघ्र स्वस्थ्य हो जाईये' कहने कुछ न कुछ खाने की चीज, फल हो तो बेहतर, ले ही जाते हैं। बहरहाल, मदन लाल हिन्द साहब से तय था ही। दोनों पहुँच गए। स्वातिजी से मिलने का सवाल ही नहीं था। अफलातून जी हम से मिले। उन्होंने विस्तार से स्वातिजी का हाल बताया। अस्पताल से बाहर निकल पटरी के दुकान पर चाय पिलाया। चलते समय मैंने परोठा पेश किया। मेरे पहले किसी और साथी ने ये काम कर दिया था। स्टॉक भरा था। लिहाज़ा, हमें परोठा वापस लाना पड़ा। हम दोनों दुखी मन लौट आये। जख्म तो तब भरा जब अफलातून जी ने एक दिन बताया –शायद व्हाट्स एप पर, कि स्वातिजी उनके इस हरकत से नाराज थीं। वो भावना समझने वाली समाजवादी थी।

इसी तरह स्वातिजी से मेरी मुलाकात रांची, दिल्ली, औरंगाबाद, वाराणसी में राष्ट्रीय कार्यकारिणी सभा या किसी और कार्यक्रम होती रही। मैंने पाया कि इस महिला का हर मुद्दे पर अपना ठोस विचार था। और अडिग था। चाहे वो नारी समस्या हो, शिक्षा और साक्षरता कि समस्या हो। ठीक –ठाक गा भी लेती थीं। रांची सम्मलेन में रवीन्द्र संगीत सुनाया भी था। जहाँ भी रहती थीं, आराम से नहीं बैठती थीं। दिल्ली में जब भी आयीं या रहीं है, किसी न किसी कार्यक्रम में व्यस्त पाया। चाहे वो 'रोहित हम शर्मिंदा हैं, तेरा कातिल जिन्दा है ' वाली रैली में या अखिल भारत शिक्षाधिकार मंच की रैली में। इसी तरह सारनाथ में शिक्षा अधिकार मंच के जलसे में चंदा लेतें दिखी। समाजवादी जज्बे की पराकाष्ठा तो तब दीखा जब व्हीलचेयर पर, घोर पीड़ा सहते हुआ समाजवादी जन परिषद् के कार्यकारिणी में सुदूर नॉएडा से गाँधी शांति प्रतिष्ठान आयीं। हम सब चकित थे। लिंगराज आजाद ने तो भावभूत होकर आभार प्रकट किया। थोड़ी देर रुकीं और चली गयीं। उनकी हालत देखकर लगा कि न आतीं तो उनके लिए अच्छा था। परन्तु परिजनों के समझाने पर भी नहीं माना होगा। अच्छा ही किया कि ज़माने से रुख्सत होने के पहले कार्यकारिणी कि बैठक में शरीक हो गयीं।

रांची सम्मलेन में, जो जून 2019 में संपन्न हुआ। वहीं उनकी तवियत ज्यादा ही ख़राब हो गयी थी। फिजिक्स की पढाई –लिखाई और फिजिक्स विभाग को ऊँचाई पर ले जाने कि आकांक्षा, समाजवाद के सैधांतिक और जमीनी स्तर पर दीवानों की लगाव ; ये सब एक साथ ! जाहिर है कि 'कोई भी चीज मुफ्त में नहीं मिलती (Nothing is free in this world)'। उन्हें भी कीमत अपने स्वास्थ्य और अंततः जिंदगी से चुकानी पड़ी। स्वातिजी ने पूरी जिन्दगी अपने सिद्धांत और शर्त पर जीया। सलाम साथी स्वाति। भई ! तू क्या थीं? फिजिसिस्ट (भौतिक शास्त्री)? समर्पित समाजवादी? अमूल्य जीवन साथी? ममतामयी माँ, सासु माँ, नानी ? या परिभाषा से परे !!

स्वातिजी को श्रद्धांजलि

कमल बनर्जी

वरिष्ठ समाजवादी नेता और कार्यकर्ता डॉक्टर स्वातिजी नहीं रहीं। वह 2 मई 2020 को इस दुनिया से चली गयीं। उस समय वह समाजवादी जन परिषद् (स.ज.प) की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष थीं। वह सजप की स्थापना सदस्य भी थीं। इस समय जब दुनिया में चारों ओर संकट है उनकी मौत न केवल सजप के लिए, बल्कि उन सब के लिए एक गहरा धक्का है जो अलग-अलग तरीकों से नवउदारवादी आर्थिक नीतियों के खिलाफ लड़ रहे हैं। यह नीतियां मुख्य धारा की राजनैतिक पार्टियों के समर्थन से केंद्र व राज्य सरकारों द्वारा इस देश में लागू की जा रही हैं।

स्वातिजी एक बहुत ही प्रतिभाशील छात्रा थीं। उन्होंने अमेरिका के पिट्टसबर्ग विश्वविद्यालय से भौतिकी में अपनी पीएचडी हासिल की थीं। उनके जैसे कई बुद्धिजीवियों ने विदेश में रहकर अपना करियर बनाया। लेकिन स्वातिजी ने अपने जीवन को देखने के नजरिये और देशप्रेम के प्रभाव से दूसरों से एक अलग रास्ता चुना। वह 1974-1975 में भारत वापस आईं और उन्होंने 1979 में महिला महाविद्यालय, बीएचयू में नौकरी ले ली। उस वक्त वो समाजवादी नेता और चिंतकों जैसे किशन पटनायक और सच्चिदानंद सिन्हा के संपर्क में आयीं और उनके साथ मिलकर उन्होंने समाजवाद की ख़ोज शुरू कर दीं।

एक राजनैतिक नेता और कार्यकर्ता होने के कारण उनका विभिन्न जन आंदोलनों के कार्यकर्ताओं से संपर्क था और वह उनके साथ रिश्ता बनाकर अलग-अलग तरह के शोषण के खिलाफ लड़ने की संभावनाएं तलाशती रहती थीं। एक राजनेता का यह बहुत ही सकारात्मक पहलू है। उनमें कई सारे गुण थें जो हम सब बांकी लोगों में नहीं हैं। वह राजनैतिक कार्यक्रमों में बहुत ही व्यवस्थित तरीकें से काम करतीं थी। हर मीटिंग में वह उस बैठक के एजेंडे में शामिल मुद्दों पर दिलचस्पी लेती और अपनी राय व सुझाव स्पष्टता और मजबूती से देती थी। उनकी एक और खासियत की और मैं ध्यान दिलाना चाहता हूँ। यह बात कुछ लोगों को कम महत्त्व की लग सकती है। लेकिन यह पार्टी के सदस्यों के लिए बहुत ही महत्त्व की बात थी। स्वातिजी बार-बार सदस्यों को पार्टी की आने वाली बैठकों में हाज़िर होने की याद दिलाती और ट्रेन में पहले से आरक्षण करने के लिए कहती रहती थीं। वह चाहती थीं कि सदस्य बैठक में समय से पहुंचे। मुझे भी स्वातिजी से यह मदद बहुत बार मिली। अपने मुख्य राजनैतिक कार्यो के अलावा स्वातिजी महिलाओं की बराबरी और आत्मसम्मान के लिए लगातार सक्रिय थीं। उन्होंने इस लक्ष्य को पाने के लिए हर जाति, वर्ग और धर्म की महिलाओं को नारी एकता मंच के बैनर तले संगठित किया। उनका नारीवादी दृष्टिकोण बिलकुल भी अभिजात्यवादी नहीं था।

स्वातिजी अखिल भारतीय शिक्षा अधिकार मंच की सदस्य थीं और सचिवमंडल में शामिल थीं। यह एक राष्ट्रीय स्तर का संगठन हैं जिसमें बहुत सारे दूसरे संगठन शामिल हैं। अखिल भारतीय शिक्षा अधिकार मंच, शिक्षा के निजीकरण के खिलाफ और समान शिक्षा प्रणाली के लिए लड़ रहा है। सुनील जी के देहांत के बाद स्वातिजी इसमें सजप की प्रतिनिधि थीं। वह उनके सभी आन्दोलनों में सक्रिय थीं। स्वातिजी उत्तर बंग कई बार आईं और उनका यहाँ के साथियों से स्नेहभरा संबंध था। समता केंद्र (जिसकी स्थापना स्व. जुगल किशोर रायबीर ने की थीं) के प्रति स्वातिजी के मन में विशेष आकर्षण था। स्वातिजी से मेरी कई बार फोन पर सामाजिक, आर्थिक और सांगठनिक मुद्दों पर चर्चा होती थी। समाजवाद के प्रति उनकी दृष्टि बहुत स्पष्ट थीं। मेरे मन में उनकी स्मृति ताजा है।

स्वातिजी को संग्रामी अभिनन्दन।

अधिवक्ता, पश्चिम बंगाल, सजप.

(अनुवाद- इकबाल अभिमन्यु, शिउली वनजा)

नया साथी जोड़ने की काबीलियत

चौधरी राजेंद्र

राजीव गाँधी भारत के प्रधान मंत्री बने तब चर्चा में आये। यह चर्चा भी सामान्य लोग नहीं अपितु देश के बड़े शिक्षण संस्थानों से आ रही थी। 21वीं सदी के भारत को मैंने अपने तरीके से समझा। 20 गदहा और एक ऊँट-21वीं सदी का भारत'। 20 गदहा मेरे एक कन्नौजिया मित्र थे उन्होंने उपलब्ध कराया और ऊँट चुनार विधान सभा से मंगाया।

ऐसी ही चर्चा पूना में समाजवादियों की तरफ से आयी जिसका विषय था- '21वीं' सदी का समाजवाद'। साथी सुनील ने कल्पना की थी कि 21वीं सदी के समाजवाद पर एक अच्छा सेमीनार होना चाहिए? सेमीनार में वरिष्ठतम समाजवादी डा. जी. जी. पारिख, नारायण देसाई, पर्यावरणविद प्रो0 गाडगिल, पत्रकार अरुण त्रिपाठी, श्रुति ताम्बे प्रमुख अतिथि थे। सत्र के दौरान व्यवस्था का प्रश्न उठाते हुए मैंने पूछा, परन्तु मुझे ऐसा लगा मैं इनके दल (संगठन) का सदस्य न होने कारण, मुझे वो अहमियत नहीं मिली जो मिलनी चाहिये। तदुपरांत मैं उस सेमीनार हाल से बाहर आ गया। सेमीनार हाल के बाहर अभी गेट से बाहर निकल ही रहा था कि इतने में कमल बनर्जी, अफलातून और विक्रमा मौर्य ने मुझे घेरा और दल (संगठन) में आने का निमन्त्रण दिया। ऐसा नहीं था कि यह पहली बार ऐसा हुआ हो? इन साथियों ने हमें अच्छी तरह समझा था। विचारणीय बिंदु यही था जो वर्तमान में मौजूद है।

इस प्रकरण के बाद डा. स्वाति ने अरुण त्रिपाठी से मेरा परिचय कराया और लम्बी मंत्रणा हुई। पत्रकार अरुण त्रिपाठी को उनके लेखों के द्वारा जानता था, परंतु उस दिन संवाद से परखा। इसमें भी मुझे लगा डा. स्वाति राजनीतिक रूप से मुझे समझने का प्रयास कर रहीं थीं।

आज जब वे नहीं हैं तो मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा है। कि साथी स्वाति हमारे भीतर जो उर्जा देखना चाहती थी क्या मैं उनके आदर्शों के अनुरूप खरा उतर पाऊंगा?

सोवियत रूस के विघटन के बाद, साथ ही साथ चीन का भी पूंजीवादी दृष्टिकोण आ चुका था। हम ग्लोबलाइजेशन से बाहर कैसे निकलें और रास्ता क्या होगा? 'दुनिया का संकट और-भारत का समाजवाद'। ऐसे ही मेरे मन में द्वंद चल रहा होता कि जिस कालखंड में मैं राजनीति में आया। उन दिनों समाजवाद की धारा— गाँधी! लोहिया!! जयप्रकाश!!! थे।

काशी विश्वविद्यालय के स्थापना दिवस पर गुरुधाम चैराहा से निकला जुलूस कौतुहल का विषय बना, साथ में दर्शन का भी। इसमें 21वीं सदी का भारत कैसा होगा उसकी झाँकी भी थी? क्या भारत की जनता रेत की तरह है, जिस पर ऊँट सरपट दौड़ रहा है। यह जुलुस जैसे-जैसे बढ़ता गया लोग आकर्षित होते गये। महामना द्वार से होता हुआ महिला महाविद्यालय से वापस लौटा। उन दिनों मैं छात्र राजनीति में प्रवेश कर रहा था, इन बिन्दुओं पर मेरा दूर-दूर का रिश्ता नहीं था। अभी मैंने गाँव से आकर विश्वविद्यालय में कदम रखा था। समाजवाद शब्द आकर्षित करता था। उसका बुनियादी स्वरूप यथार्थ में कहीं दिखलाई नहीं पड़ता था। गाँधी का 'हिन्द स्वराज्य' काफी पीछे छूट गया। मुझे ऐसा लगता है कि गाँधी जी जब कबीर के मूलगद्दी में आये तब उन्हें चरखा का भान हुआ था। उसके पहले मेरे राजनैतिक गुरु यदुनाथ सिंह जी ने मुझसे एक बार पूछा, आप गाँधी जी को कितना समझते हैं?

इस प्रकार मैं पहली बार गाँधी जी की तरफ सम्प्रेषित हुआ। बाकी के दिनों में दो लेखों ने मेरा ध्यान आकृष्ट किया। प्रथम लेख-जन सत्ता में छपा था- 'गांधी तेरे देश में चेले चांदी काट रहे हैं'। इस लेख ने मेरे चक्षुओं को खोलने का प्रयास किया। दूसरा लेख- 'गांधी की हत्या गांधी वादियों ने की' मेरी थोड़ी-थोड़ी गांधी जी में अभिरुचि बढ़ी?

बाद के दिनों में डॉ0 लोहिया की तरफ आकर्षित हुआ। उनकी किताब 'जातिप्रथा' ने मुझे आकर्षित किया। लोहिया के- 'तीन आना बनाम तेरह आना' ने दिशा

बदली। तदुपरांत मैं नियमित रूप से काशी हिन्दू विश्विद्यालय की लाइब्रेरी में संसद के उस समय की कार्यवाही का विवरण पढ़कर लोहिया के तर्क शास्त्र को समझने का प्रयत्न करने लगा।

संसद में 62 से 67 तक की कार्यवाही का अध्ययन किया। उन्हीं दौरान किशन पटनायक, मनीराम बागड़ी, मधुलिमये, रामसेवक यादव के विचारों को समझा यह मेरी समाजवादी समझ को मजबूत बनाने में मददगार साबित हुआ।

समाजवादी विचारों में-सादगी और सहजता, स्वदेशी स्वालम्बन, नर-नारी समता, जाति तोड़ो समाज जोड़ो, आर्थिक विषमता, खुला दाखिला, सस्ती शिक्षा, हिमालय बचाओ, नदियों का पेटा साफ करो जैसे अनगिनत कार्यक्रमों ने समाज के प्रत्येक व्यक्ति को अपनी तरफ आकर्षित किया। संघर्ष और निर्माण के लिए-

जेल! फावड़ा!! वोट!!!

डॉ. लोहिया ने तमाम शिष्यों की तलाश की और उन्हें साँचे में ढाला। भारत के प्रत्येक प्रांत में डॉ. लोहिया के अनगिनत शिष्य मौजूद थे। भारत में एक समय तानाशाही का दौर भी आया। इस चुनौती को जयप्रकाश नारायण ने स्वीकार किया तदुपरांत लोकतंत्र की बहाली हुई।

डॉ. स्वाति जब मुझे दल का सदस्य बना रही थी तब जिस भाउकता पूर्ण नजर से मुझे, गांधी जी व नारायण भाई की तस्वीर के नीचे उन दोनों के छत्र छाया का अहसास करा रही थी कि मै खुद को भावुक होने से रोक न सका। इस प्रकार डा. स्वाति ने हमें अंगवस्त्र देकर इस धारा का वाहक बना दिया।

मै छात्र राजनीति के बाद किसी भी दल का सदस्य नहीं था, बाद के दिनों में भारतीय क्रान्ति दल, लोक दल से प्रभावित हुआ। किसान पृष्ठभूमि से होने कारण चौधरी चरण सिंह के विचारों से ज्यादा प्रभावित हुआ। भारत के खुशहाली का रास्ता खेत और खलिहान से होकर गुजरता है। यह फावड़ा और रचनात्मक दोनों को आकर्षित करता है। छात्र राजनीति के दौरान विचारधारा हिलोरे ले रही थी एक ओर मार्क्सवादी थे तो दूसरी तरफ समाजवादी। मुझे वहाँ गरीब, खासकर दलित पिछड़ों के ऊपर अत्याचार के घटनाए कौंधती थी। क्या वे भारत के नागरिक नहीं हैं? या उनका इस देश में पैदा होना जुर्म है।

शिक्षण संस्थान भी इन पूर्वाग्रहों से अछूते नहीं थे। विचारधारा चाहे जो भी रहे लेकिन इंसान द्वारा इंसान को सताना इस बात ने मुझे झकझोरा। 1992 के बाद तो शिक्षण संस्थानों में अराजकता का दौर भी देखने को मिला। उसमें मस्जिद का क्या दोष था। मै आज तक समझ नहीं पाया, तो क्या मण्डल कमीशन ने बाबरी मस्जिद को जमींदोज कर दिया?

पूरा का पूरा देश दो भागों में विभक्त हो गया। देश की विचारधारा भी लुप्त होती गयी। भारत में भारत की जनता को लड़ाया जाने लगा, सभी एकदूसरे के खून के प्यासे हो गये ऐसे समय में साथी स्वाति, साथी मंसाराम, साथी विपत यादव, साथी अफलातून, रामाधार गिरी श्री प्रकाश मौर्य, कर्मचारी नेता विष्णु यादव, पुरुषोत्तम मौर्य सहित अनेक साथियों ने उन कमजोर साथियों का साथ देकर उनके मनोबल को टूटने नहीं दिया।

21वीं सदी के समाजवाद का सपना जिन लोगों ने देखा था, आजादी के बाद, जो भारत हमें बनाना था, क्या वह भारत हम बना पाये? इसी बात को लेकर मेरे मन में सदैव आशंका रहती थी। साथी स्वाति ने जिस नजरिये से मुझे परखा क्या मैं उसे फलीभूत कर सकूंगा?

1978 में अमेरिका से लौटने के बाद डा. स्वाति अध्यापन के साथ-साथ प्रशासनिक कार्यों में भी रूचि रखती थीं। दिल्ली में हुये अधिवेशन में समता युवजन सभा की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बनी। समता युवजन सभा में उम्र की सीमा निर्धारित थी। 30 वर्ष से अधिक उम्र के लोग समता युवजन सभा में पदाधिकारी नहीं हो सकते। संज्ञान होते ही स्वेछा से राष्ट्रीय उपाध्यक्ष का पद छोड़ दी। अन्य लोग बने रहे।

आन्दोलनरत दैनिक वेतन भोगी कर्मचारी, दक्षिण भारतीय कुलपति से अपनी वार्ता के लिए डा. स्वाति को अनुवादक के रुप में चुनते थे। उन्हें यह विश्वास था कि हमारी मांगों को सही तरीके से रखेंगी अन्य कोई अध्यापक इस मामले में प्रशासन के नापसंदगी के चलते सामने नहीं आते। छात्र युवा राजनीति की गहरी समझ थी। उन दिनों छात्र राजनीति में अध्यापक अपने निहित स्वार्थों के लिए गहरी रूचि रखते थे, परन्तु डा. स्वाति ने कभी भी छात्र राजनीति का दुरुपयोग नहीं किया, अपने

निहित स्वार्थों के लिए बल्कि ऐसे लम्पट छात्र नेताओं और अध्यापको को डपट देती थी। जिस गांधी कथा में वो नारायण भाई से जोड़ी या फिर 'अंग्रेजी हटाओ, भारतीय भाषा बचाओं' में संलग्न किया उनकी आग्रह का ऋणी रहूँगा।

जिस परम्परा में वे हमें बाँध रही थी तो मुझे आश्चर्य हो रहा था, क्या मैं उनके अनुरूप उत्तर पाऊँगा? सम्भावनाओं की तलाश है साथी स्वाति का?

डा. स्वाति सामाजिक आन्दोलनों में बढ़-चढ़कर अपनी भागीदारी सुनिश्चित करती थी, परंतु इसके बावजूद भी अनेक कार्यों के लिए अपना अमूल्य समय कैसे निकाल लेती थीं? उनका अपना अध्यापन था फिर भी उनका कोई शिष्य उनकी पार्टी (संगठन) का पदाधिकारी नहीं था जो इस बात को दर्शाता है कि अपने छात्रों पर कभी पार्टी की नीतियों को उन्होंने थोपा नहीं? उनकी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता में दखलंदाजी नहीं थी, परन्तु पैनी नजर अवश्य रखती थीं।

अनेक रचनात्क कार्यों को करते हुये अपनी दृष्टि साफ रखती थीं, चाहे उन्हें मैंने काशी विश्वविद्यालय के सुंदर बगिया में सफाईकर्मियों के बच्चों को तालीम देते हुये देखा या फिर उनकी सफाई का दर्शन रहा हो इन सारे आन्दोलनों ने हमें प्रेरित किया। वाराणसी में राजघाट के आगे सराय मोहाना में आनंद के पिता जी ने डा. अम्बेडकर पर चर्चा रखी थी। ये डा. स्वाति के कार्यों के फलस्वरूप ही हो पाया। डा. अम्बेडकर पर चर्चा करना मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा था, उनकी डॉ. अम्बेडकर में गहरी रूचि थी। वे एक बार मेरे कमरे में आयी, कमरे की दीवारों पर चिन्हित लिखे शब्दों को बड़े गौर से अवलोकन करने लगीं, मै उनके कृत्य को गम्भीरता से देख रहा था उनकी निगाहें—

संविधान! सिद्धांत!! राष्ट्र!!!

अम्बेडकर, लोहिया, सरदार पटेल का चित्र था, साथ में विचार भी।

मैं समझता हूँ कि डा. स्वाति की अध्यापन में गहरी रुचि है, परन्तु मुझे उनके सैद्धातिक कार्यों का भान हुआ। शिक्षा अधिकार मंच से मुझे जुड़ने का अवसर मिला। उत्तर प्रदेश की जिम्मेदारी में मै शरीक हुआ। उनकी शिक्षा में गहरी रुचि होने के बावजूद, हम जैसे साथियों को उनसे कई जगह मंचों से संवाद करने का अवसर मिला। उनके बहुत साथियों में करनी और कथनी में अंतर था, परन्तु उनके आचरण और आदर्श दोनों में दृढता का समावेश दिखलाई पड़ता था। शिक्षा अधिकार मंच के कार्यक्रम के दौरान मैं उनके साथ बाँदा में रुका था। प्रेम सिंह की प्राकृतिक खेती का अवलोकन करना था।

वे कईथ की चटनी की तारीफ रास्ते भर कर रही थीं। बाँदा में आगे की यात्रा मै नहीं करना चाहता था। यह मेरा निजी मामला था। आज वो नहीं हैं, तो श्रद्धांजलि के तौर पर इस घटना का उल्लेख कर दे रहा हूँ।

जिस साथी खदेरू ने हमको तकरीबन 20-22 साल रिक्शा चलाकर खिलाया, मैं उनका कर्जदार था। मै चाहता था कि उसके बेटे की शादी में शरीक होऊं, परन्तु डा. स्वाति का आग्रह- आप उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश की सीमा छत्तरपुर तक चलें। सहयात्री होने के नाते इस कार्यक्रम को अधूरा मत रखिये। मैंने बहुत विचार किया, अंत में अपने साथी खदेरू के बेटे की शादी छोड़नी पड़ी।

अखिल भारतीय शिक्षा अधिकार मंच की तरफ से पटना में देश के उच्च कोटि के विद्वानों को सुनने का मौका मिला। डा. स्वाति ने अपने विचारों को शालीनता पूर्वक और सहजता से रखा।

2019 की 24 फरवरी को मैं 'समाजवादी जन परिषद्' का सदस्य बना, तब से लगातार डा. स्वाति के निर्देशन में कई कार्यक्रम हुए। आज जब हमें उनकी जरूरत है तब वे अब हमारे बीच नहीं हैं कौन समझाएगा इन अभागे कार्यकर्ताओं को? ये सोचकर मन में सिहरन पैदा हो जाती है।

आज शिक्षा की जो हालत है उसमें समता की शिक्षा कैसे बने? बन्धुत्व की शिक्षा कैसे मिले? न्याय आधारित शिक्षा कैसे मिले? यह प्रश्न उनके न रहने पर कौंधता रहेगा। अब वो नारा कौन लगवाएगा 'मांग रहा है हिंदुस्तान, सबकी शिक्षा एक समान' भारत शिक्षित कैसे हो? यह प्रश्न लगातार हमारे बीच कौंधता रहेगा।

उनकी प्रबल इच्छा थी कि वे मेरी माँ से मिलें। जब वे 19 वर्ष की थीं तब उनकी माता का देहांत हुआ था। मेरी माँ से मिलने की उनकी इच्छा को मैं पूरा न कर सका। मुझे यह बात हमेशा सालती रहेगी।

सदस्य कार्यकारिणी, समाजवादी जन परिषद

दया और करुणा की प्रतिरूप

राम दयाल

प्रो0 स्वाति के व्यक्तित्व को मैं सबसे पहले 3 जनवरी 1997 को सावित्री बाई फुले के जन्म दिन पर शिवाला के एक कार्यक्रम में जाना, जब वे सावित्री बाई फुले पर बोल रही थीं और समझा रही थीं कि शिक्षा के बिना समता, समानता व स्वतन्त्रता की बात करना बेइमानी है। मैं आश्चर्य में पड़ गया कि जिस बनारस में रामचरितमानस के माध्यम से महिलाओं के प्रति असंवेदना स्वरूप जो कुप्रचार किया। ढोल, गवार शूद्र, पशु, नारी। ए हैं ताड़न के अधिकारी। उसी तुलसी के क्षेत्र में स्वाति जी ने सत्ता को चुनौती दी और उन्होंने चाणक्य के उस विचार को आगे बढ़ाया कि पति-पत्नी रथ के दो पहिए के समान हैं उन्होंने सिन्दूर को गुलामी का प्रतीक मानकर कभी सिन्दूर नहीं लगाया।

सवाल किसी व्यक्ति विशेष का नहीं बल्कि उसके कार्य उसके नियति पर निर्धारण करता है। बी.एच.यू. में पढ़ाने वाली प्राध्यापिका जो अपना बहुमूल्य समय निकाल कर बी.एच.यू. के बगल में सुन्दर बगिया एक स्थान है जहाँ सफाईकर्मी निवास करते थे, उस बस्ती के जो बच्चे स्कूल नहीं जा सकते थे उनके बच्चों को पठन-सामग्री देकर अध्यापन का कार्य करती थीं।

बनारस तो सनातनियों के नाम से जाना जाता है मगर स्वाति जी कबीर का रास्ता चुना और उन्होंने अपरिग्रह का रास्ता चुनकर लोहिया के पथ को निरापद बनाया। हम लोगों से कहा करती थीं आप लोग समझते हैं कि मेरे पास बहुत सारा पैसा है मगर ऐसा नहीं है मैं पार्टी और कमजोर वर्ग के उत्थान व कार्यक्रम आदि पर खर्च हो जाता है।

स्वाति जी को भारतीय समाज की गहरी समझ थी। उन्होंने समाज की दबी-कुचली शोषित-पीड़ित और अकलियत की समस्या की जड़तक जाने की सलाह देती थी। एक बार हम गाँधी जयन्ती पर बोल रहे थे। सभा के अन्त में आकर उन्होंने आकर उससे कहा कि रामदयाल मैं तुम्हारी बात ध्यान से सुनती हूँ। पूछो क्यों? क्योंकि तुम शोषित नहीं हो फिर भी महिला शोषण और शोषित समाज की बात बहुत बारीकी से रखते हो।

स्वाति जी वैश्वीकरण के खिलाफ आजीवन संघर्ष करती रही और कहा करती थी जल, जंगल, जमीन पर खतरे के बादल मँडराए हुए हैं। आने वाले दिनों में ओबीसी, दलित, अल्पसंख्यक और महिला वर्ग का सबसे ज्यादा नुकसान होगा।

बीमारी के समय जब दिल्ली इलाज करा रही थी तब वे हमेशा अफलातून से कहा करती थीं कि आप हमारे स्वास्थ्य की चिंता न करें, आप देश के बारे में सोचिए और बनारस जाकर समाजवादी जन परिषद को मजबूत कीजिए।

डॉ0 स्वाति दया व करुणा की प्रतिरूप थीं। एक बार हम और कई साथी आजमगढ़ से आ रहे थे और रात को दो बजे थे। हम अपने घर साईकिल से आ रहे थे स्वाति जी मुझसे कहा कि अगर आप की साईकिल हमारे घर पर होती तो हम आप रात को घर पर जाने नहीं देती।

स्वाति जी एक अच्छी खानसामा और मेहमान-नवाज भी थी। एक बार हम और चन्द्रकान्त यादव स्वाति जी के यहाँ गये थे। हम लोगों को अच्छा खिला-पिला देने के लिए तत्पर रहती थी।

स्वाति जी नर-नारी समता, रेहणी, बुनकर समाज एवं दबे-कुचले के हक के लिए आजीवन संघर्ष करती रही।

बी.एच.यू. में शिक्षण कार्य करती थी। जन-साधारण की समस्याओं को लेकर लंका चौराहे पर छोटे-छोटे पर्चा बाँटा करती थीं। उनको अपने पद का कभी भी अहंकार नहीं था। स्वाति जी धार्मिक दृष्टि से आस्तिक थी मगर आडम्बर का हमेशा विरोध करती थीं।

बड़े दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि डॉ0 स्वाति जी जब बी.एच.यू. में अपनी अंतिम साँस ली तब पूरे देश (विश्व) में करोना महामारी व्याप्त थी। उस समय उनके पास उनके पति के अलावा उनके प्रिय साथी चंचल मुखर्जी और चौधरी राजेन्द्र जी उनके पास थे। 9 बजे रात हमें पंकज जी के माध्यम से जानकारी मिलती है कि स्वाती जी की इहलीला समाप्त हो गयी है। हम और जितेन्द्रजी 10 बजे रात को बी.एच.यू. पहुँचते हैं। अगले दिन उनकी बेटी दिल्ली से आती है।

स्वाति जी का सौभाग्य रहा है कि उन्होंने जो बोया

था वही फसल काटा भी अंतिम संस्कार के समय उनकी बेटी पिउली, महिला कर्मचारी उनकी मित्र नीता चौबे, पारमिता और मित्र साथियों ने उनके पार्थिव शरीर को कन्धा दिया। यह महिला सशक्तिकरण का सबसे अनूठा उदाहरण है। जब उनकी पार्थिव शरीर जा रहा था तब राम-नाम सत्य का नारा नहीं लगा। उसके बदले में समाजवाद जिन्दाबाद, अम्बेडकर जिन्दाबाद, नारी शक्ति जिन्दाबाद का नारा लगा।

स्वाति जी का मानना था कि समाज तब तक तरक्की नहीं कर सकता जब तक इस देश में मर्द और औरत के रिश्ते में इंकलाबी परिवर्तन नहीं आएगी।

अब वे हमारे बीच नहीं रहीं परन्तु कीर्ति यस्य सजीवार्ता के अनुसार सदैव सर्वहारा वर्ग की प्रेरणास्रोत बनी रहेंगी।

महामंत्री, वाराणसी-चन्दौली संयुक्त समिति

कमजोर वर्ग के प्रति लगाव

प्रिय आफलू ,

मैं लिखने की दुनियां से कोसों दूर क्या, शायद वहां का तड़ीपार हूँ। इसलिये स्वाति जी पर लेख की जगह एक खत लिखने की कोशिश कर रहा हूँ।

स्वाति जी के साथ मेरी आमद रफ्त पारिवारिक ही ज़्यादा रही, हाँ, गाहे बघाये संगठन सम्बन्धी हल्की फुल्की चर्चाएं ज़रुर हो जाया करती थीं। बनारस रहने के दौरान उन्होने ही मुझे समाजवादी जन परिषद का सदस्य बनाया था। वो जहाँ भी हो जब भी हो, उनकी अपनी एक जगह बन जाती थी। संगीत हो, साहित्य हो, दर्शन हो, राजनीति हो, रसोई हो, याकि हो भ्रमण आदि सभी क्षेत्रों में उनकी पकड़ काबिले तारीफ़ से कहीं ज़्यादा थी। वह एक बहुत सलीके की रुचि संपन्न, बहुमुखी आयामों की धनी व्यक्ति थीं।

उनकी दो विशेषताओं ने मुझे अधिक प्रभावित किया था। एक था उनका मज़बूत व्यक्तित्व और दूसरे समाज के कमज़ोर वर्ग के लिये अन्दरूनी लगाव जिसको उनके रोज़मर्रा की ज़िंदगी में देखा जा सकता था चाहे वो घर में हो या घर के बाहर।

मैं जब भी घर गया, मुझे अच्छी तरह से खिला पिला कर ही आने दिया। नब्बे के दशक में स्वाति जी, प्योली और तुम्हारे साथ गुज़ारी एक शाम मेरे दिमाग पर अभी भी काबिज़ है जब तुम लोग वेड़छी से व्यारा मुझसे मिलने के लिये आये थे। उस शाम खाने के साथ मैने एक महाराष्ट्रीयन चटनी बनाई थी जिसे तुम सबने बहुत पसंद किया था।

हम सब मेरे छोटे से कमरे के फर्श पर बैठे हुए गप्पे लड़ाते हुए खाने का मज़ा ले रहे थे, तभी स्वाति जी की निगाह मेरे म्यूज़िक कैसेट्स पर पड़ी। उनमें से कुछ बेगम अख्तर साहिबा के थे। बेगम साहिबा स्वाति जी की पसंदीदा गायिका थीं। फिर तो बातचीत का रुख संगीत की तरफ मुड़ गया जिसकी परिणीत में स्वाति जी ने बेगम साहिबा की कुछ गज़लो को हूबहू उसी अन्दाज़ में गा कर सुनाया। बैठक ऐसी जमी कि वक़्त का खयाल ही न रहा, शाम रात मे बदल कर आगे बढ़ चुकी थी। वापस वेड़छी पहुंचाने के लिये पड़ोसी से मदद की गुहार की, एक बढ़िया पड़ोसी के नाते उन्होने खुशी खुशी ड्राईव कर पहुंचा दिया।

स्वाति जी की सह्रदयता और उदारता के कई अनुभव हैं। लेकिन उनमें से एक मेरे लिये खास है। जया बेन मेरी एक मित्र हैं जो कि कुछ दिन बनारस रह कर वहां का अनुभव लेना चाहती थीं। उन दिनों फोन का इतना रिवाज़ न था, मैनें पत्र लिखा, लौटती डाक से 'हाँ बिल्कुल' स्वागतीय स्वीकृती आयी।

जया बेन के लिये वोह अनुभव अविस्मरणीय रहा और मेरे लिये एक बहुत ही सुखद अनुभव कि मेरे एक मित्र को, जिनसे स्वाति जी कभी मिली भी नहीं थीं, अपने साथ मित्रवत घर पर रखा।

ऐसे कई वाकए और स्मृतियाँ हैं, और हाँ, वो काफी बनारसी हो गयी थीं, जो बहुत मधुर था। अफलू तुम बहुत मुक्कदर वाले हो कि तुमको एक ऐसा दोस्तनुमा जीवनसाथी मिला जिसने तुम्हारी परिवार वृद्धि दो और परिवारों के साथ की, एक प्योली बेटा का और दुसरा ऋजु का परिवार।

स्वाति जी मैं आपको मिस करता हुँ।

–रामभरोसे

डॉ. स्वाति से स्वाति नक्षत्र तक

शिवेन्द्र कुमार मौर्य

अपनों का बीच से जाना कितना खाली कर देता है यह उस दिन पता चला जब डॉ. स्वाति जी के निधन की खबर मिली। कोरोना जैसी महामारी को पछाड़ कर रक्त प्लाज्मा कैंसर की चपेट में आसामयिक अपनी जान गँवा बैठे तो भारतीय चिकित्सा व्यवस्था पर कई सवाल खड़े हो जाते हैं। शायद भारतीय चिकित्सा व्यवस्था पर शासन की नजर पहले से चुस्त-दुरुस्त रही होती तो कोरोना के अतिरिक्त अन्य रोगों के कारण भटक रहे मरीजों की बेगुनाह जान बच जाती। शासन ने समूचे देश की अस्पताल को कोरोना टेस्ट का जाँचगाह बनाकर मानवतावाद के इस भूखण्ड को बंजर बना दिया। प्राथमिकी उपचार तक के लिए लोग तरस गये। कहने वाले कह रहे हैं कि कोरोनाकाल में लोगों के बहुत से मर्ज स्वतः ठीक हो गये, लेकिन सच्चाई इसके ठीक उलट है।

सरकारी तंत्र ने कोरोना के प्रति लोगों को जागरूक कम किया और सबके भीतर दहशत का माहौल ज्यादा बनाया गया। यह दहशत स्वयं डाक्टरों के भीतर तक भरी मिली। कुछ जज्बाती डाक्टर ही इस जंग में डटे रहे जिन्होंने निःस्वार्थ मरीजों का उपचार किया। शायद कोरोना के प्रति ऐसा माहौल न बनाया गया होता तो समुचित इलाज पाकर डॉ. स्वाति आज हमारे बीच जिन्दा होती। हालाँकि वे इस बीमारी से लम्बे समय से जूझ रही थीं फिर भी उन्होंने अपना धैर्य नहीं खोया था और एक बार वे लगभग स्वस्थ होकर हमलोगों के बीच काफी उम्मीद जगा गयी थीं। डॉ. स्वाति जो स्वयं विज्ञान की प्रोफेसर थीं और वैज्ञानिक सोच रखती थीं उन्हें नियति के हाथों परास्त होना पड़ा। मेरे कहने का आशय यह बिल्कुल नहीं कि हर कोई अजर-अमर होता है, किंतु ऐसा भी नहीं है कि हर चीज नश्वर हो। डॉ. स्वाति यदि कुछ दिन और जिंदा रही होतीं तो उनके सानिध्य में मुझे कुछ न कुछ ज्ञान लाभ अवश्य मिला होता। इससे वंचित रह गया यह मेरा दुर्भाग्य है।

डॉ. स्वाति जी से मेरी कई मुलाकातें हैं। ज्यादातर ये मुलाकातें हैं। ज्यादातर ये मुलाकातें किसी कार्यक्रम, आंदोलन या वैचारिक गोष्ठियों में हुई हैं। घर पर सिर्फ एक बार की मुलाकात है, जिसमें उनके हाथ की बनी कॉफी का स्वाद आज भी जेहन में घुल रहा है। बात 24 दिसंबर 2017 की है। 'अंग्रेजी हटाओ आंदोलन' (1967) के पचास वर्ष पूर्ण हुए थे, उसी के उपलक्ष्य में बीएचयू के सिंहद्वार से रत्नाकर पार्क तक एक संकल्प कूच का आयोजन हुआ था जो बाद में रत्नाकर पार्क तक एक संकल्प कूच का आयोजन हुआ था जो बाद में रत्नाकर पार्क पहुँचकर सभा में तब्दील हो गया था। 'बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को शूल' की तख्ती लिए संकल्प कूच में आगे-आगे मैं भी शामिल था। बीएचयू का सक्रिय छात्र होने के नाते ऐसे कार्यक्रमों में जाना मुझे अत्यधिक प्रिय था। उसी संकल्प कूच में मैंने डॉ. स्वाति जी को ठीक से देखा व सुना था। इस कार्यक्रम का संयोजन डॉ. स्वाती जी के जीवनसाथी अफलातून जी ने किया था। अध्यक्षता विजय नारायण जी ने की थी लगभग दर्जन भर वक्ता थे, उन सब में मुझे भी अपना विचार रखने का मौका मिला था।

इसी कार्यक्रम में डॉ. सुरेन्द्र सिंह जी ने अंग्रेजी से निदान पाने व अपनी भाषा में काम करने के इस संकल्प को आगे बढ़ाने के लिए डॉ. लोहिया की जयंती 23 मार्च 2018 को काशी में एक विशाल सम्मेलन आयोजित करने की योजना का प्रस्ताव सर्वसम्मति से रखा गया था। इसी प्रस्ताव का परिणाम था 23 मार्च 2018 का 'अंग्रेजी हटाओ, भारतीय भाषा बचाओ' का ऐतिहासिक कार्यक्रम। 24 दिसम्बर 2017 और 23 मार्च 2018 के बीच इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए डॉ. सुरेन्द्र सिंह के घर से लेकर सुनील सहस्रबुद्धे (सारनाथ) के घर तक कई बैठकें हुई थीं। इन्हीं बैठकों में ही डॉ. स्वाति जी के विचारों से मैं थोड़ा परिचित हो सका था, फिर तो उनके सानिध्य का लाभ मुझे बराबर मिलता रहा।

इन मुलाकातों में मैंने उन्हें इतना ही जाना था कि वे मृदुल स्वभाव वाली, मितभाषी, स्नेहमयी, निडर महिला थीं। उनका संबंध निर्वाह प्रगाढ़ था। वे जिसे मानती थीं दिल से मानती थीं पीठ पीछ कुछ कहने की आदत न थी। सामाजिक गतिविधियों से उनका जुड़ाव बहुत पहले का ही रहा है। उनके कई आन्दोलनों का मैं साथी भी रहा हूँ। बीएचयू के महिला महाविद्यालय में जब वे रीडर पद पर थीं तब भी उनकी सामाजिक मुद्दों की न्यायप्रियता का डंका

था। रिटायरमेंट के बाद तो उनका पूरा जीवन सामाजिक कार्यकर्त्री के रूप में समर्पित था।

'अंग्रेजी हटाओ, भारतीय भाषा बचाओ' कार्यक्रम जब संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी में आयोजित हुआ था तब तक मैं उनसे काफी घुल-मिल चुका था। आप भी मुझे अच्छे से जानने लगी थीं। वैचारिक रूप से समृद्ध होने के बावजूद भी आपने कभी किसी पर अपने विचारों का बोझ नहीं लादृत करना आवश्यक समझता हूँ। डॉ. स्वाति जी समाजवादी जन परिषद की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष थीं। इसके अतिरिक्त भी वे अन्य संगठनों से जुड़ी थीं। अभी तक का मेरा यह समय सभी की विचारधाराओं को समझने का था। मित्र राजीव तथा बड़े भाई रमेश के साथ मैं आपके घर बैठा हुआ था, अफलातून जी भी वहीं थे। आपने बड़े आदर के साथ अफलातून जी के सामने यह प्रस्ताव रखा कि क्यों नहीं राजीव और शिवेन्द्र को अपनी पार्टी का सदस्य बना लेते। इसके बाद उन्होंने हम लोगों को अपनी पार्टी की गाइडलाइन समझाई और इस आग्रह के साथ कि आपलोगों के पास भरपूर समय है, खूब अच्छे से सोच-विचार कर लो यदि मन जमे तो पार्टी की सदस्यता ग्रहण कर लो लेकिन यह ध्यान रहे कि मेरी तरफ से कोई दबाव नहीं है। उनकी यह विनम्रता और सहजता मुझे बहुत अच्छी लगी थी। किसी के ह्रदय को टटोलना आप बहुत अच्छे से जानती थी क्योंकि आपके पास खुद का स्वविवेक था।

डॉ0 स्वाति के स्नेहिल व्यक्तित्व की पहचान के लिए एक वाकया और याद करना चाहता हूँ। 12 अक्टूबर 2018 को 'हिमालय बचाओ और डॉ0 लोहिया' विषय पर एक कार्यक्रम 'समता परिवार' की ओर से वाराणसी के अस्सी घाट की सीढ़ियों पर रखा गया था जिसके सूत्रधार चौधरी राजेन्द्र थे। डॉ0 स्वाति जी भी उस कार्यक्रम में शरीक थीं। मेरे पास मेरी कोचिंग सेंटर 'काशी ज्ञान इंस्टीट्यूट' के बच्चे भी उस कार्यक्रम का हिस्सा बने थे। वहाँ पर डॉ0 स्वाति जी के स्नेहिल व्यवहार से वे बच्चे बहुत प्रभावित हुए थे और बाद में उन्होंने डॉ0 स्वाति जी से मिलने की पुनः इच्छा जतायी थी। लेकिन यह संभव न हो सका।

किसी भी कार्यक्रम में डॉ0 स्वाति जी जिस निडरता के साथ अपनी बात रखती थी उससे मेरा मनोबल काफी बढ़ गया था। शिक्षा, स्वास्थ्य, शासन, प्रशासन, राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय आदि सभी मुद्दों पर उनकी अपनी सोच व समझ थी जिसे हम लोगों के बीच वे हमेशा साझा किया करती थीं। साहित्य और संगीत में भी उनकी विशेष रुचि थी उनका यह गुण मुझे बहुत बाद में पता चला। शिक्षा आन्दोलन की अलख तो उन्होंने जीवन पर्यन्त जगाये रखा। शिक्षा व्यवस्था में जातिगत धांधली के वे खिलाफ थीं। आपका मानना था कि शिक्षा पर किसी एक जाति का अधिकार नहीं है, बल्कि सबके लिए शिक्षा का अधिकार समान है। आपका यह भी मानना था कि शिक्षा विदेशी भाषा में न पढ़ाई जाकर स्वदेशी भाषा में पढ़ाई जानी चाहिए जिससे गाँव और शहर का भेद मिट सके। शिक्षा और समाज के प्रति उनकी यह वैज्ञानिक सोच उन्हें औरों से अलग करता है। समाज के प्रति आपका जो समर्पण था वह किसी एक वर्ग या जाति तक सीमित न होकर चहुँमुखी था। छात्रों के प्रति आपका विशेष स्नेह रहता था। गरीब और अमीर की खाईं को पाटने का विचार आपका उच्चकोटि का था। गरीबों की मदद के लिए आप आगे खड़ी मिलती थीं। सबके हक़-हुकूक की लड़ाई में भी मैंने आपको आगे ही देखा था।

आप अगली और पिछली पीढ़ी के बीच की सेतु थीं। लाकडाउन के इस कठिन समय में आपका इस तरीके से हम लोगों के बीच से जाना एक रीतापन छोड़ गया। हम अपने सभी ऊर्जावान युवा साथियों राजीव, डॉ0 प्रभात महान, विजेन्द्र मीणा, रामायण पटेल, सुनील कश्यप, राहुल राजभर, रवीन्द्र भारतीय, प्रवीननाथ यादव, डॉ. अमित कुशवाहा, आशीष आदि की तरफ से आपको ह्रदय की अतल गहराइयों से श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हैं।

अवधी की एक कहावत है 'फूल मरै पर मरै न बासू' अर्थात् फूल तो मर जाता है पर उसकी सुगंध कभी नहीं मरती। आप हम लोगों के बीच अपने स्नेह का एक सुगंध छोड़ गयी हैं जिसकी महक हमेशा बनी रहेगी। आज आप हमारे बीच नहीं हैं किन्तु आपका व्यक्तित्व और विचार हम लोगों के बीच एक उदाहरण के रूप में जिन्दा रहेगा। मुझे उम्मीद है कि आपका सुंदर विचार स्वाति नक्षत्र की बूँद की भाँति जिस मनुष्य रूपी सीपी में पड़ेगा वह मोती हो जायेगा। आपकी अंतिम यात्रा मैं साक्षी बन सका यह मेरा सौभाग्य था। डॉ0 स्वाति सबकी स्मृतियों में जिंदा रहकर अब एक विचार बनें। ऐसी मेरी कामना है। आज आपके बारे में लिखते समय मेरे ह्रदय में दुःख नहीं, बल्कि चेहरे पर मुस्कान है जैसा मैंने आपके चेहरे पर सदैव देखा था।

शोध छात्र, हिन्दी विभाग, बीएचयू

डॉ स्वाति जी प्रेरणा स्त्रोत

लाल बहादुर राम

डा0 स्वाति जी को मै 14 वर्ष की उम्र से जानता हूॅ जब अपने बड़े भाई श्री डी0एन0राम, जो कि बी0ए0द्वितीय काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के छात्र थे। मेरा जन्म एक दलित ग्रामीण परिवार में हुआ है। छुआछूत और जाति भेद को मैने बहुत नजदीक से देखा और अनुभव किया है। मेरे बचपन के दिनों में प्रगतिशील सवर्ण अपने घरों में दलितों के लिए अलग से बर्तन रखते थे और उनके द्वारा किसी भी दलित के घर में जाकर भोजन करना तो बहुत दूर की बात थी मेरे बड़े भाई श्री दूधनाथ जब काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के छात्र थे एवं उनके समय अफलातून छात्र नेता थे समता संगठन के माध्यम से मेरे बड़े भाई डा0 स्वाति जी के सम्पर्क में आये। समता संगठन जातिवाद का कट्टर विरोधी था। समता संगठन के साथी जात-पात एवं छुआछुत नही मानते थे। वे दलितों के घरों खाते एवं अपने घरों में खिलाते थे। जब मै 1988 में राजकीय क्वींस कालेज में कक्षा-11 का छात्र था तो मै कुछ समय अपने बड़े भाई साथ बिरला हास्टल में रहा भी हूँ। मै और मेरे बड़े भाई ने गाँव में मामा की सिलाई की दुकान पर सिलाई सीखी एवं सिलाई किया भी। गरीबी के कारण मेरे बड़े भाई लंका पर सिलाई करके अपनी पढाई करते थे। जब डा0 स्वाति जी को सिलाई करने का पता चला तो वह एक नई सिलाई मशीन खरीद कर मेरे बड़े भाई को दे दी थीं। यह आज भी मेरे बड़े भाई के पास है। वतर्मान में मेरे बड़े भाई डी0एन0राम भारत की राजधानी दिल्ली के केन्द्रीय विद्यालय में अग्रेजी के वरिष्ठ प्रवक्ता हैं। मैं धर्म निरपेक्षता डा0 स्वाति जी के खून में देखा था। वह जनपरिषद की सक्रिय साथी थी। ईद मिलन में वह मुस्लिमों के घर जाकर ईद की मुबारक बाद देती थी एवं मुस्लिम महिलाओं के साथ सुख दुख भी साझा करती थी साथ ही वह क्रिसमस के दिन सभी को शुभकामनाएं देती थी।

डा0स्वाति काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में भौतिक विज्ञान की प्रोफेसर थी लेकिन वह डा0 भीम राव अम्बेडकर महात्मा गांधी एवं डा0 लोहिया के समाज परिवर्तन के ग्रन्थों को अच्छी तरह पढती एवं आत्मसात करती थी। डा0 भीम राव अम्बेडकर मानवतावाद समतावाद का नारा केवल दलितो के लिए ही नही दिया था। बल्कि सवर्णो के लिए भी दिया था। डा0 अम्बेडकर का प्रमुख नारा था शिक्षित बनो संगठित रहो संघर्ष करो। डा0 स्वाति जी बाबा साहब के नारे के साथ जीवन को जीती थी। वह सामान शिक्षा के लिए अखिल भारतीय शिक्षा अधिकार अभियान की सक्रिय साथी थी। मैंने उन्हें सड़को पर सामान शिक्षा का नारा लगाते देखा है। वह कहती थी कि राष्टपति का बेटा हो या चपरासी का सन्तान सबको शिक्षा एक समान, इसके साथ ही उनका विचार था कि जब तक सवर्ण जाति के लोग डा0 भीम राव अम्बेडकर को नहीं पढ़ेंगे तब तक वह समानता की बात सोच भी नही सकते। उनका मानना यह भी था कि जब तक दलित भी गांधी, भगतसिंह एवं उनके जैसे अन्य महान विचारक को नही पढ़ेगा तब तक उसके अन्दर भी समान नागरिक होने का भाव विकसित नहीं होगा और कई सवर्णों में आज जो समानता के विचार दिखाई पडतें हैं वह गांधी अंम्बेडकर एवं विचारकों के ग्रंथों की देन है वह शिक्षा लेने व देने की इतनी ज्यादा भूखी थी कि विश्वविद्यालय में पढाने के बाद विश्वविद्यालय के सफाई कर्मचारियों के बच्चों को सुन्दर बगिया में पढाने भी जाया करती थीं। डॉ स्वाति से मुझे यह भी सीख मिली कि स्त्री दोयम दर्जे की नागरिक नहीं है वह पुरुषों के समान ही है। उनका मानना था कि बाबा साहब ने संविधान में स्त्रियों को पुरूषों की तरह समान अधिकार दिया है। वह हमेशा पितृसत्तात्मक व मातृसत्तात्मक सत्ता का विरोध करती थी वह ऐसा समाज बनाने की वकालत करती थी कि जहां स्त्री पुरूष में

किसी भी प्रकार की गैर बराबरी न हो उनका मानना था कि स्त्रियों का शोषण सभी जतियों एवं वर्गो में पाया जाता है स्त्री की पूजा करने से बेहतर समाज नहीं बनेगा बल्कि स्त्री को समान शिक्षा संपत्ति में अधिकार सभी आरक्षित एवं अनारक्षित नौकरियों में पूरी भागीदारी मिलनी चाहिए। डॉ स्वाति अपने जीवन के अंतिम लगभग दो माह पूर्व बाबू जगजीवन राम छात्रावास शिवाला वाराणसी में चले दो दिवसीय शिविर में बताया कि दलितों की सामाजिक स्थिति भारत के विभिन्न धर्मों में दोयम दर्जे की है। कहीं कहीं ऐसा भी पाया गया है कि दलितों को कब्रिस्तान, श्मशान स्थल सामान्य जातियों से अलग होते हैं। डॉ स्वाति शरीर से कमजोर थीं लेकिन उनके मन मस्तिष्क की ताकत बहुत थी उनका मानना था कि धर्म बदलने से जाति नहीं बदलती है बल्कि भारत में जाति तो व्यक्ति के मरने के बाद भी उसका पीछा नहीं छोडती है ब्रम्हणों ने तो पिण्डदान में भी गोत्र पूछकर पिण्डदान कराते हैं उनका मानना था कि डॉ अंम्बेडकर के बताये रास्ते पर चलकर ही जाति का विष निकला सकता है।

मेरी मॉ नाम की लक्ष्मी थी, लेकिन हमलोगो के जीवन गरीबी का ऐसा कोई क्षेत्र न था जो आया न हो एक बार मेरी मां गम्भीर रूप से बीमार हुई मैं उन्हे बी0एच0यू0 अस्पताल में भर्ती कराया। जब डा0 स्वाति जी को मां के भर्ती होने का पता चला तो वह अस्पताल में अपने घर से खिचडी बनाकर और कुछ फल लेकर आई और मेरी माता जी को खिलाने के साथ कुछ आर्थिक मदद भी की। एक बार मुझे डा0 स्वाति जी के साथ बिहार के नालंदा से 5 कि0मी0 दूर एक गॉव में तीन दिन की कार्यशाला में जाने का अवसर मिला। उस कार्यशाला में किशन पटनायक, भाई बैद, योगेन्द्र यादव एवं सुनील जी भी मौजूद थे। कार्यशाला में भूमण्डलीकरण उदारीकरण एवं बाजारवाद जैसे ज्वलन्त मुददे थे। डा0 स्वाति जी को भूमण्डलीयकरण के कारण भारतीय स्त्रियो पर पडने वाले सामाजिक आर्थिक प्रभाव पर बोलना था, जिसमें उन्होंने विस्तार से शहरी, ग्रामीण, सवर्ण, दलित आदिवासी स्त्रियों के जीवन शिक्षा स्वास्थ्य एवं रोजगार पर अपनी बात रखी। वह हमेशा कहती थी कि भूमण्डलीकरण अपरोक्ष रूप से गुलाम बनाने की प्रक्रिया है जिसमें गरीब और गरीब होता जाएगा और अमीरों को पुरा विश्व लुटने का अवसर मिल जायेगा। स्वरोजगार, खेती, किसानी, बुनकारी सब खत्म हो जायेगे। और बेरोजगारी का भारत में मरूस्थल बन जायेगा। डा0 स्वाति जी कि इस प्रकार समझदारी थी।

मैं डा0 स्वाति जी को जाति की विषग्रन्थि को बचपन में अपने बच्चो से बाहर निकालने का प्रमाण पाया हूँ। जनपरिषद का सन 2000 में सारनाथ में सम्मेलन था। बिहार का एक साथी किसी बात लेकर चमार जैसे शब्द का प्रयोग करता है स्वाति जी की बेटी पियूली बिहार के साथी पर बहुत नाराज होती है। मैं सम्मेलन में ही कई सकिय साथियो को अपनी जाति का सरनाम हटाते देखा हूँ लेकिन उनके बच्चे बड़े गर्व से त्रिपाठी, पाठक, यादव, सिंह, लगाते हैं।

मेरा चयन 2004 में प्रवक्ता अंग्रेजी के पद पर श्री कमलाकर चौबे आदर्श सेवा इण्टर कालेज वाराणसी हुआ था किन्तु मेरे दलित जाति से होने के कारण मुझे कार्यभार ग्रहण नहीं करने दिया गया जिसमें जाति पीडा का क्रूर स्वरूप दिखता है। लेकिन डॉ अंम्बेडकर संविधान दर्शन में इतनी ताकत थी कि ब्राम्हण वकील रूपक चैबे द्वारा निःशुल्क माननीय उच्च न्यायलय से न्याय दिलाया गया। न्याय न मिलने से पूर्व एक बार मेरे मन में कार्यभार ग्रहण संघर्ष के दौरान लगा कि प्रवक्ता होने के बजाय नक्सली हो गये होते लेकिन गांधी और अंम्बेडकर के बताये रास्ते पर चलने का फायदा यह हुआ कि माननीय उच्च न्यायलय के आदेश के बाद मेरे गुरू प्रोफेसर महेश विक्रम सिंह ने मुझे 1 जुलाई 2006 को कार्यभार ग्रहण कराने के लिए उसी ब्राम्हण प्रबंधक के विघालय मेरे साथ जाकर कार्यभार की प्रक्रिया पूरी कराई और आज उसी ब्राम्हण से मेरा एक मानवीय संबंध स्थापित हो गया। जिसके बाद मेरा अहिंसा की ताकत में विश्वास और अधिक हो गया। इससे से हम तमाम कुरीतियों को खत्म कर सकतें है और एक बेहतर भारत का निर्माण कर सकतें हैं।

प्रवक्ता अंग्रेजी, श्रीकमलाकर चौबे आदर्श इण्टर कालेज, वाराणसी

समता के लिए समर्पित शख्सियत

प्रेम सिंह

स्वाति जी : समता के लिए समर्पित शख्सियत दृढ़ता, प्रतिबद्धता और सक्रियता स्वाति जी की शख्सियत की पहचान थे। साथ ही उनमें सहजता का दुर्लभ गुण था। उनकी शैली बढ़-चढ़ कर बोलने या दावे करने की नहीं थीं। सामाजिक-राजनीतिक कार्यकर्ता भी अक्सर 'परफोरमर्स' की तरह आकर्षण के लिए विशेष 'बाना' धारण करते हैं। स्वाति जी पहनावे सहित अपनी पूरी जीवन-शैली में सामान्य ढंग से रहती थीं। वे भौतिक शास्त्र की शिक्षिका और शोधकर्त्री थी। निष्ठापूर्वक अध्यापन के बाद उनका सारा समय सार्वजनिक जीवन में बराबरी कायम करने के राजनीतिक उद्यम में बीतता था।

पूरे विश्व में समता के दर्शन के विरुद्ध आंधी चल रही है। ऐसे में यह मुमकिन है कि समाजवादी आंदोलन में काम करने वाले राजनीतिक कार्यकर्ता अधीर, बेचैन और असमंजस का शिकार होते हों। पूंजीवाद की विश्वव्यापी आंधी के बरक्स उन्हें अपनी भूमिका को लेकर निरर्थकता-बोध घेरता हो। संघर्ष से उपराम हो जाने अथवा पूंजीवाद के विकल्प का रास्ता छोड़ कर प्रचलित राजनीति में हिस्सेदार हो जाने का ख्याल मन में आता हो। स्वाति जी में कभी ऐसी कोई दुविधा नहीं रही। वे अंतिम सांस तक आशा और विश्वास के साथ समाजवादी जन परिषद् (सजप) की वैकल्पिक राजनीति के संघर्ष में जुटी रहीं। सजप के अलावा वे अखिल भारतीय शिक्षा अधिकार मंच की एक मजबूत स्तम्भ थीं। मंच के सभी कार्यक्रमों में उनकी सक्रिय भूमिका रहती थी। स्त्री-चेतना और स्त्री-अधिकारों के प्रति उनकी विशेष सजगता थी।

स्वाति जी एक साल से ऊपर कैंसर से पीड़ित रहीं। जीने की इच्छा उनकी जरूर रही होगी। लेकिन जानलेवा बीमारी का डट कर मुकाबला करने के बावजूद उनका निधन हो गया। एक सार्थक जीवन हम लोगों से हमेशा के लिए बिछुड़ गया। समाजवादी जन परिषद् की यह विशेषता है कि उसमें कई दम्पत्तियों - निशा शिवूरकर-शिवाजी गायकवाड़, शमीम-अनुराग मोदी, स्वाति-अफलातून, स्मिता-सुनील, करुणा झा-चंद्रभूषण चौधरी - की एक साथ सक्रिय भूमिका रही है। सुनील के जाने के बाद एक जोड़ी टूटी थी। स्वाति जी के जाने के बाद एक और जोड़ी टूट गयी है।

स्वाति जी की संघर्षमय स्मृति हम लोगों के साथ है। उन्हें याद करते हुए हम समाजवादी आंदोलन में अपनी भूमिका निभाते रहेंगे। स्वाति जी को यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय तथा वरिष्ठ समाजवादी

संगठन सचिव की श्रद्धांजलि

सोचने लगा कि स्वाति जी के बारे में क्या लिखूं! वे बहुमुखी प्रतिभा की धनी थीं, विज्ञान की अध्यापिका, हमेशा अन्याय के खिलाफ सक्रिय विराट शख्सियत वाली नारी। वे समाजवादी कार्यकर्ताओं और नेताओं की प्रिय थीं। वे हमारे प्रिय समतावादी दिवंगत साथी जुगलदा के साथ एक बार मेरे घर आई थीं। यहां किसान और मजदूरों के साथ लंबी बैठक की थीं। एक दिन में ही मेरे परिवार की आत्मीय बन गई थीं। हमारे देश के जल, जंगल, नदी, जमीन के मुद्दों पर वे निरंतर सक्रिय रहीं। चाय बागान और विभिन्न भाषाओं के लोगों की धरती उत्तर बंगाल में स्वाति जी कई दफा पहुंची थीं। कभी चुनाव के प्रचार के दौरान, तो कभी राजनैतिक शिविर में। स्वाति जी की भाषण कला लोगों को बेहद पसंद आती थी।

राजनैतिक कार्यकर्ताओं के लिए उनके दिल में काफी जगह थी। मुझे तो खासकर बहुत आदर और स्नेह दिया करती थीं। स्वाति जी की तस्वीर मेरे मन में किशन जी, युगल दा और सुनील जी के साथ हमेशा बनी रहेगी और सही राजनैतिक दिशा दिखाती रहेगी।

रणजीत कुमार राय, संगठन सचिव,
समाजवादी जनपरिषद, महासचिव, उतजाआस

स्वाति जी को याद करते हुये

जसवीर अरोड़ा

रेलवे की नौकरी के दौरान सितंबर 2002 में मेरा तबादला बनारस (डी.एल.डब्ल्यू) हुआ। पोस्टिंग की इस नयी के जगह के सामाजिक कार्यकर्ताओं और सम-वैचारिक लोगों के बारे में जानकारी इकट्ठे के दौरान आईआईटी/दिल्ली वाले विपिन त्रिपाठी जी (सदभाव मिशन) ने स्वाति जी (वो भी उन्हीं के विषय फिजिक्स : से जुड़ी थीं) का संदर्भ दिया। 2 अक्टूबर को बनारस के राजघाट गया तो पता चला कि बड़ा कार्यक्रम शहर में लंका चौक पर हो रहा है और वह बीएचयू के पास है। तभी लगा कि आज स्वाति जी से शायद मुलाकात हो जायेगी और वही हुआ....सब उसी समागम में मिल गये।

मैं करीब सवा साल बनारस में रहा और इस दौरान मेरा कई संस्थाओं के सामाजिक आंदोलन-संघर्ष वाले कार्यक्रमों, विचार-चर्चा, रैलियों-प्रदर्शन और सभाओं में आना-जाना रहा। अक्सर ही अफलातून जी और स्वाति जी से मिलना हो जाता था। कोकोकोला के खिलाफ मेहंदीगंज में हुये धरने वाले एक कार्यक्रम में तो स्वाति जी और मुझे (हमारी सरकारी नौकरी के कारण) गुड़िया वाले अजीत और उनके साथी थाने से घर छोड़ने आये।

बनारस से जाने के बाद भी स्वाति से संपर्क बना रहा, प्रत्यक्ष मुलाकात तो पांच-छह बार ही हुई लेकिन फ़ोन पर अक्सर बात होती रहती थी। अफलातून जी से बात करने के लिये जब फ़ोन मिलाता (उस वक़्त लैंडलाइन ही था) वो ही अक्सर फोन उठाती थीं और हालचाल पूछकर, कुछ अपने कार्य (शिक्षा मंच, नारी संघर्ष) की सुनाकर ही अफलू जी (वो इसी नाम से उन्हें बुलाती थीं) को हैंडओवर करतीं थीं। चार-पांच दफा संजय गौतम और अरविंद भारत के साथ बीएचयू के 5 रीडर्स फ्लैट में उनके हाथ का स्वादिष्ट खाना भी खाया, चाय तो कड़क बनाती ही थीं। बनारस के अस्सी घाट पर ही चंचल के साथ पप्पू की दुकान पर मैंने कई सालों से छोड़ी हुई चाय शुरू की थी और कोक-पेप्सी छोड़ी थी।

स्वाति जी के बारे में उनके जाने के बाद कई लेख पढ़ें हैं, वे एक उच्चकोटि की वैज्ञानिक थीं लेकिन साथ ही समाज के सवालों में उनकी उतनी ही दिलचस्पी थी। अन्याय और विषमता के खिलाफ वे हर मंच पर मुखर होकर अपनी बात अत्यंत तार्किक रूप से रखती थीं। मुद्दे की तह तक जाती थीं और इस मंथन में कई बार तो अपने अफलू जी से एक कदम आगे निकल जाती थीं। स्वाति जी में सौम्यता और संवेदनशीलता थी। साम्प्रदायिकता, जातिवाद/वर्णव्यवथा, गैरबराबरी और लैंगिक असमानता जैसे सामाजिक विषयों पर उनकी समझ गहरी और स्पष्ट थी। उनकी स्वदेशी वाली बात मुझे कभी नहीं भूलती : मिठाई कौन-सी खानी है : जो मेरे गांव/कस्बे में मिलती है और जलेबी किससे खरीदनी है : पास वाले हलवाई से।

पिछले साल मैंने हाजीपुर से रेलवे को विदाई दी और वहीं रहते हुए पटना में (शायद सितंबर 2018) मेरी स्वाति से अंतिम मुलाक़ात हुई। वे अखिल भारतीय शिक्षा अधिकार मंच के कार्यक्रम मे आयीं थी। मेहनार में सजप का एक शिविर था और अफलातून जी ने उसमें मुझे आने का न्यौता देने के लिए फोन किया था, उनकी बात होने के बाद स्वाति जी ने मुझसे कहा : ' आपको मेरे कार्यक्रम में भी जरूर आना है, यह अफलू जी के अलावा मेरा अपना निमंत्रण है। ' वो मंच पर थीं लेकिन जब चंचल ने उन्हें मेरे आने का बताया तो वक़्त निकालकर मुझसे मिलने आयीं और कई साथियों से मेरा परिचय (कामरेड-साथी कहकर) भी कराया।

पिछले साल अचानक एक दिन अफलातून जी की फेसबुक पर 'खून की जरूरत' वाली पोस्ट दिखी : स्वाति जी सिंहानिया अस्पताल/साकेत (दिल्ली का एक अस्पताल) में हैं। संयोग से मैं दिल्ली में ही था और नौकरी से आजाद भी, उसी दोपहर मैं अस्पताल पहुंच गया। स्वाति जी आईसीयू में थी और उनसे मुलाकात न हो सकी, अफलातून जी और उनके एक दोस्त के साथ ही डेढ़-दो घंटे रहा, पियोली भी वहां थी और स्वाति जी की सेहत को लेकर बातचीत हुई। उसी के बाद से शायद वे बीमारी से जूझती रहीं, बीच-बीच में अफलातून

जी से उनकी हालत का पता चलता रहता था।

अक्टूबर 2019 में गांधी शांति प्रतिष्ठान/दिल्ली में सजप का दो दिन का एक कार्यक्रम था, पहले दिन मैं भी उसमें शामिल हुआ लेकिन स्वाति जी उसमें अगले दिन आयीं थी : इसलिये पटना के बाद उनके दर्शन नहीं हो पाये....और 3 मई 2020 को तालाबंदी में छतरपुर के गांधी आश्रम (जहां सौभाग्य से अटक गया था मार्च के बाद) सुबह उठा तो ऑनलाइन एक संदेश था : वो चली गयीं.....चाह कर भी बनारस नहीं पहुँचा जा सकता था।

वो अक्सर ज़िंदाबाद कहकर ही रुक्सत होती थीं और चलते हुये कहती थीं: जसवीर भाई अपना ख्याल रखियेगा..फिर मिलेंगे.. ज़िंदाबाद! स्वाति जी को मेरा सादर सलाम...!

अफलातून और स्वाति जैसे जीवनसाथियों के लिये साहिर का लिखा गीत याद आता है :

साथी हाथ बढ़ाना, साथी हाथ बढ़ाना
एक अकेला थक जायेगा मिलकर बोझ उठाना !

अन्तधार्मिक विवाह में सहयोगी

मेरा नाम जितेंद्र कुमार है। मैं मेरी पत्नी कहकशां खान उर्फ डॉली एवं 6 वर्ष का बेटा (कबीर) के साथ ग्राम व्यासपुर (साहूपुरी, चंदौली) राजघाट वाराणसी से 5 किमी दूर रहता हूं। हमारी एक स्वयं सेवी संस्था (ताना-बाना ट्रस्ट) है जिसमें मैं एवं मेरी पत्नी सक्रिय रूप खादी पर शोध, निर्माण एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसार तथा सामाजिक विषयों पर सक्रिय हैं। मेरी पत्नी के परिवार से डॉ0 स्वाति जी का पारिवारिक संबंध रहा है। डॉ0 स्वाति जी के विषय में लिखने से पहले मैंने सोचा कि मैं कुछ अपने विषय में थोड़ा बताऊं ताकि उनका जो मेरे जीवन में प्रभाव और उपयोगिता रहा है, मैं उसको बेहतरी से समझा पाऊंगा। वर्ष 2011 में नवंबर के माह में मैंने अंतर धार्मिक विवाह किया मेरी पत्नी मुस्लिम धर्म से आती हैं उनका नाम कहकशां खान है! वह सर्व सेवा संघ के कैंपस में, गांधी विद्या संस्थान के पूर्व प्रोफेसर स्वर्गीय रफीक खान की पोती एवं मुनिजा खान की भतीजी, बचपन से रही हैं। मेरी मुलाकात एक विदेशी संस्था में कार्यकाल के दौरान हुआ फिर हम दोनों ने साथ-साथ व्यक्तिगत स्तर पर भी समाज सेवा का काम करना शुरू किया और बाद में पता चला कि कहकशां (डॉली) ने एक अपनी स्वयं की संस्था (ताना-बाना ट्रस्ट) का गठन कर दिया था जिसको लेकर मैं थोड़ा ज्यादा उत्साहित था और खुद से समाज के प्रति हम लोगों के जो भी संवेदना के विषय थे कि उन विषयों पर काम करना चाहते थे। हम लोग अपने दफ्तर के काम के बाद और छुट्टियों में स्वतंत्र रूप से साथ सामाजिक कार्य करने लगे थे फिर हम दोनों ने निर्णय किया कि हम लोगों के जीवन का केन्द्र और विचार लगभग एक समान से हैं तो हम लोग पूरी उम्र ऐसा कार्य करते रहें इस विषय को लेकर हम लोगों ने आपसी समझ से विवाह करने का निर्णय लिया परंतु जैसा कि पता है हमारे भारतीय समाज में इतनी आसानी से अंतर धार्मिक विवाह या अंतरजातीय शादियों को भी लोग सहजता से स्वीकार नहीं करते हैं। इसके पीछे तमाम रूढ़िवादिता, विचारधाराएं एवं अदृश्य भयाक्रांता है, जो ऐसी प्रयासों को समर्थन नहीं देते हैं! जिसका दंश मुझे भी झेलना पड़ा और तो और मेरे अपनों ने भी मेरा साथ नहीं दिया।

मैं चाहता था कि कुछ समय तक हमारी शादी के बारे में मेरे परिवार को ना पता चले और हम लोग अपने काम को अंजाम देते रहे; क्योंकि मेरी एक छोटी बहन थी और उसकी शादी को लेकर मेरे पिताजी थोड़े ज्यादा संवेदनशील थे। तो मुझे लगा कि उसकी शादी के बाद हम अपने विषय में उनसे जिक्र कर सकेंगे। परंतु ऐसा हो न सका जिस समय हम लोगों ने शादी किया उसी के अगले दिन पता चल गया और घर में बहुत ही तनाव का माहौल पैदा हो गया हालांकि यह जानकारी मेरी पत्नी के परिवार वालों की तरफ से ही मेरे घर में दी गई जिसका मकसद तनाव बढ़ाना एवं हमारी शादी को विफल बनाना था! मेरे पिताजी को मेरे घर जाकर समाज

में लज्जित एवं अपमानित करने की पूरी कोशिश की गई एवं उनको गाड़ी में बिठा कर अपने घर लाकर काफी दबाव देने की कोशिश की गई! मेरे परिवार में काफी समस्याएं शुरू हो गई।

उस दौरान चुनाव का दौर चल रहा था और वाराणसी में समाजवादी जन परिषद से अफलातून जी विधायक के उम्मीदवार थें और हम लोग (मैं और मेरी पत्नी) स्थानिय स्तर पर सक्रियता से लगे हुए थे। मुझे अच्छे से याद है कि हमने दोनों कार्यक्षेत्र, जय प्रकाश नगर (सिगरा) एवं लल्लापुरा, में अलग-अलग दिन चुनावी सभाएं आयोजित किया था। उन्हीं सभाओं के दौरान कहकशां ने मेरा परिचय डॉ स्वाति जी से कराया था। जब स्वाति जी को हमारे विवाह एवं बाद हो रहे तनाव के बारे में पता चला तो उन्होंने अगले दिन की जनसभा जो लल्लापुरा में हुई थी उसके बाद शाम को वह मेरे साथ मेरे घर गई और मेरे पिताजी से काफी देर तक बात की और काफी समझाने की कोशिश की, कि वह (डॉ0 स्वति जी) इस विवाह से काफी खुश एवं प्रभावित थी और दिलासा दे रही थी कि मेरी छोटी बहन की शादी में वह पूरी तरह सहयोग करेंगी यदि मेरे पिताजी चाहे।

हालांकि मेरे पिताजी उस समय सामाजिक एवं मानसिक तनाव में काफी थे इस वजह से बहुत ज्यादा सहज ना हो सके। लेकिन मैं उनके (डॉ0 स्वाति जी के) इस प्रयास एवं सक्रियता को देखते हुए काफी प्रभावित हुआ। उसके बाद से मेरा सम्मान एवं लगाव उनके प्रति और बढ़ता गया और समय-समय पर मैं उनसे संगोष्ठियों, आयोजनों एवं निजी रूप से भी मिलता रहा।

मेरे निजी एवं सामाजिक दोनों जीवन में उनका एक अविस्मरणीय स्थान है जो हमेशा बना रहेगा और मैं उनके अंदर एक विशेष प्रगतिशील सशक्त समाज की झलक स्पष्ट रूप से देखा करता था! वह जितना अपने विभागीय विषय में विद्वान थी उतना ही व्यवहारिक एवं सामाजिक विषयों पर भी ज्ञान रखती थी!!

मुझे खुशी है कि मैं उनके अंतिम समय की यात्रा में उपस्थित रहा, जब पूरी दुनिया अपने अपने जगह पर थम सी गई थी। जैसे ही हमें पता चला, हम लोग मध्यरात्रि तक बीएचयू पहुंचे और काफी देर रात तक वहां पर थे। अगले दिन फिर हम लोग उनकी अंत्येष्टि पर पहुंचे। साथ ही साथ समय से पहले उनका जाना मेरे निजी एवं सामाजिक जीवन की एक बड़ी क्षति के समान है!

आज हम जो यह पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन प्रगतिशीलता एवं सफलतापूर्वक से जी रहे हैं उसमें कुछ विशेष लोगों का विशेष योगदान है क्योंकि हमारे अपनों ने हमारा साथ नहीं दिया इन ही कुछ लोगों ने हम लोगों का साथ दिया जिसकी वजह से हम लोग इतने बड़े प्रयोग के बाद आज भी समाज में स्थापित एवं सफल हैं! जिनमें से प्रमुख- डॉक्टर स्वाति जी, प्रोफेसर दीपक मलिक जी, स्वर्गीय जुआल साहब, जागृति राही जी, पंडित दीनानाथ मिश्रा जी (मेरे एक मित्र के पिता) एवं उनकी पत्नी प्रीति मिश्रा जी, और अप्रत्यक्ष रूप से मेरे पिताजी (श्री भोला नाथ) अहम है।

जितेंद्र कुमार, कहकशां खान, कबीर

साथी तेरे सपनों को, मंजिल तक पहुँचायेंगे......

नन्दलाल मास्टर

बनारस की जानी-मानी सामाजिक कार्यकर्त्ता, हमलोंगो के संघर्षों के साथी वरिष्ठ गाँधीवादी विचारक डा0 स्वाति दीदी अब हमारे बीच नही रही। स्वाति दीदी का अचानक जाना अब भी हमसभी को विश्वास नही हो रहा है, लम्बी बीमारी के बाद दीदी के निधन से बनारस का नागरिक समाज बहुत दुखी और मर्माहत है,आमतौर पर एक शिक्षक अपने को ज्यादातर शिक्षण कार्य तक सीमित रखता है, खासकर सरकारी नौकरी करने वाले लोग तो सामाजिक मुद्दों को उठाने और जन विरोधी नीतियों का प्रतिकार करने से हमेशा बचते है, लेकिन बनारस हिन्दू विश्विद्यालय (BHU) में अध्यापन पर कार्य करते हुए भी आपने जिस सक्रियता और सहजता के साथ सामाजिक बदलाव के लिए समाजवादी जन परिषद्, साझा संस्कृति मंच, जन आंदोलनों का राष्ट्रीय समन्वय (NAPM), महिला अधिकारों के लिए गठित समन्वय समिति, कोका कोला विरोधी आन्दोलन,समान शिक्षा अधिकार अभियान, सूचना का अधिकार अभियान, आदि तमाम सामाजिक और राजनीतिक संगठनों, जन आंदोलनों का नेतृत्वकरके हम जैसे युवाओं का मार्गदर्शन किया उसकी भरपाई कर पाना बेहद मुश्किल है।

मैंने अपने अनुभव में देखा है कि ज्यादातर राजनीतिसे जुड़े कार्यकर्त्ता सामाजिक विचार और सिद्धांत की बाते चाहे जितनी भी करें लेकिन हमेशा सत्ता और कुर्सी की अवसर वाली राजनीति के बारे में ही सोचते है और अवसर मिलते ही सारे विचार और सिद्धांत एक तरफ दरकिनार करके सत्ता की राजनीति करने लगते हैं। इसी प्रकार सामाजिक कार्यकर्ता भी समाज परिवर्तन के लिए सामाजिक मूल्यों और सिद्धांत की बात तो बहुत करते है, लेकिन उनकी जीवन शैली, रहन- सहन, आम लोंगो के साथ उनके कार्य एवं व्यवहार का तालमेल उनके मूल्य, विचार और सिद्धान्त से तालमेल में कोई समानता देखने को नही मिलती, स्वाति दीदी उन लोगों में से बिलकुल विपरीत रही है जिन्होंने अपने पूरे जीवन में सामाजिक और राजनीतिक कार्यकर्त्ता की अनूठी मिसाल दिया,उन्होंने कभी भी अपने मूल्यों और सिद्धान्तों के साथ कोई समझौता नही किया, सादगी के साथ जीवन व्यतीत किया। हजारों युवाओं को असली सामाजिक और राजनीतिक कार्यकर्ता बनने की प्रेरणा दिया।

मेरी पहली मुलाकात स्वाति दीदी से नब्बे के दशक में हुई जब अयोध्या बाबरी मस्जिद कांड की वजह से पूरा देश साम्प्रदायिकता की आग में जल रहा था और बनारस भी इससे अछूता नही रहा लोहता, मदनपुरा आदि इलाकों में सांप्रदायिक दंगे शुरू हो गये थे ऐसे में स्वाति दीदी और बनारस के अन्य वरिष्ठ साथी इन इलाकों में सामाजिक सौहार्द का कार्य अपनी जान जोखिम में डालकर कर रहे थे उस समय मै एकदम युवा था उनके इस कार्य से बहुत प्रेरणा मिली। फिर नारी संवासिनी कांड, वाटर फिल्म मामला, नई आर्थिक नीति, WTO का विरोध आदि पर आयोजित कार्यक्रमों में कई बार उनसे मिलने,उनसे बहुत कुछ सीखने का मौका मिला।

लेकिन उनके साथ मेरी सामाजिक कार्य की असली पाठशाला वर्ष 2003 से शुरू हुई जब उनकी प्रेरणा से वाराणसी के मेहदीगंज गाँव में लगी कोका कोला कम्पनी के खिलाफ आन्दोलन शुरू हुआ, उन दिनों मै और लोक समिति के सभी साथी युवा थे,और हम सभी को जन आन्दोलन करने का कोई अनुभव नही था,मुझे याद आता है वो दिन जब स्वाति दीदी सप्ताह में तीन चार दिन अपने कैपस से 25 किलोमीटर दूर हमलोंगो से मिलने और मार्गदर्शन करने के लिए बड़े भैया अफलातून जी के साथ स्कूटर से गाँव में आती थी और गाँव के लोंगो के साथ जमीन पर बैठकर मीटिंग करती थी। कोका कोला के खिलाफ अलग अलग तरीके से अहिंसात्मक आन्दोलन कैसे करना है इसके के लिए रणनीति बनाकर आगे बढने के लिए सहयोग करती थी। हमलोगों का आन्दोलन कार्य कैसे आगे आगे बढे, इसके लिए प्रेरणा देती थी उन्हें देखकर गाँव वालों को लगता ही नही था कि वो किसी विश्विद्यालय में प्रोफेसर भी होंगी। हमारे गाँव वालों को उनके साथ पान खाना बहुत पसंद था, लोक समिति के साथियों में दो बड़े बदलाव स्वाति दीदी के वजह से हुआ पहला यह कि उन दिनों हमलोग पेप्सी और कोका कोला खूब पीते थे, और उसी के खिलाफ आन्दोलन भी करते थे स्वाति दीदी ने बड़ी विनम्रता के साथ हमलोगों को समझाया की दोनों काम एक साथ नही हो सकता दोनों एक दुसरे से कैसे जुड़े है? यह समझना बहुत जरुरी था और बाद में सभी ने सामूहिक रूप से कोलड्रिंक पीने के बहिष्कार का निर्णय लिया जो आज भी बरकरार है, दूसरा बड़ा बदलाव यह था कि उस समय लोक समिति के ज्यादातर साथी युवा और लड़के थे सिर्फ दो कार्यकर्ता साथी महिला थीं। इसलिए नेतृत्व और निर्णय की भूमिका में पुरुष थे, स्वाति दीदी ने यह समझाया कि महिला पानी की किल्लत और उसके मर्म को ज्यादा अच्छी तरह से समझती है क्योंकि घर में पानी के प्रबन्धन की जिम्मेदारी उनके कन्धो पर होती है इसलिये अगर कोका कोला आन्दोलन को मजबूती के साथ आगे बढ़ाना है तो आन्दोलन में महिलाओं की भागीदारी बहुत जरुरी है और यह आन्दोलन महिला बहनों के नेतृत्व में चलाया जाना चाहिए,उस समय हमलोगों को उनकी यह राय बिल्कुल अजीब लगी कि महिला धरना प्रदर्शन और आन्दोलन कैसे करेंगी? क्योंकि वो तो घर से बाहर निकलती ही नही है, लेकिन उन्होंने हमलोंगो के साथ बस्ती बस्ती जाकर मीटिंग शुरू की, घर घर जाकर एक एक लोंगो को जोड़ना शुरू किया, उनकी सरल स्वभाव की वजह से आसानी से संगठन और आन्दोलन से महिला बहने जुड़ गयी। नतीजा यह हुआ कि कभी घर के चौखट से बाहर नही निकलने वाली बहने आन्दोलन के सभी कार्यक्रमों में बढ़चढ़ कर हिस्सा लेने लगी। हजारों की संख्या में कई बार दिल्ली, मुंबई, लखनऊ में जाकर प्रदर्शन किया और जेल तक का सफर किया।

आज वो हमलोगों के बीच नही है उनके

मार्गदर्शन में बने बनारस के तमाम सामाजिक मंचों में एक अजीब खालीपन महसूस हो रहा है,जब कभी भी हमलोंगो को किसी भी सामाजिक मुद्दें पर निर्णय लेने में संशय होती थी, ऐसे समय में हमेशा स्वाति दीदी ने हमसभी का मार्गदर्शन किया,हमसब बहुत सौभाग्यशाली है कि लम्बे समय तक आपके निर्देशन और मार्गदर्शन में सामाजिक कार्य करने का मौका मिला. बनारस का नागरिक समाज आपके सामाजिक योगदान को कभी भुला नही पायेगा, आपने हमेशा हमे लड़ना सिखाया है इसलिए आपके प्रति विनम्र श्रद्धांजली इस संकल्प के साथ अर्पित करते है कि ....

साथी तेरे सपनों को मंजिल तक पहुँचायेंगे........ लड़ेंगे – जीतेंगे

संयोजक – लोक समिति, वाराणसी (NAPM)

जनवादी आंदोलनों की दुर्लभ बूंद – स्वाति भाभी

अमित भटनागर

दसवीं में पढ़ते हुए मैं जानकी देवी महाविद्यालय के स्टाफ क्वार्टर्स में रहता था क्योंकि मेरी मां वहां हिंदी पढ़ाती थीं। स्टाफ क्वार्टर कुल जमा बारह थे। पहले बारह सीनियोरिटी से टीचर्स को मिल गए थे। हम व हमारे पिता लोग माओं के माध्यम से ही जाने जाते थे। मिसिज भटनागर का लड़का मिसिज सिन्हा की बहू आदि।

बारह क्वार्टर बताने की वजह यह कि इतने कम घर होने के कारण लगभग सबको एक दूसरे के घर में क्या चल रहा है, सब पता होता था। जो पकता था वह भी लेना देना होता रहता था। हमारी पड़ोसी सिन्हा आंटी के पति पूरे क्वार्टर वासियों के होम्योपैथी डाक्टर थे। साथ त्योहार मनाना, क्रिकेट खेलना आदि इस छोटी सी कम्युनिटी में चलता रहता था।

तो ऐसे में एक दिन पता चला कि सिन्हा आंटी के बड़े बेटे बहू अमरीका से आ रहे हैं। ये हम सब की, एक लाइन से चलने वाली ज़िन्दगी में बड़े उत्साह का विषय था। क्योंकि उस ज़माने में अमरीका लोग जाते अधिक थे, आते कम थे। हमारे लिए तो अमरीका का विशेष महत्व था जीन्स के स्त्रोत के रूप में। दूसरा दसवीं वाली उम्र में भाभियों को मिलने और बातें करने की विशेष रुचि होती है। यह रुचि और बढ़ गई यह पता चलने पर कि ये वैज्ञानिक हैं, फिजिसिस्ट। पहली बार हम किसी महिला वैज्ञानिक, असल में किसी भी वैज्ञानिक से मिल रहे थे। उस समय इतनी समझ नहीं थी की महिला और वैज्ञानिक, दोनों शब्द एक साथ हो सकते हैं। इस लिए भी उत्सुकता अधिक थी।

जब उन्हें पता चला कि मैं आर्किटेक्चर की पढ़ाई छोड़ कर गांव में काम करने गया हूं तो मुझे याद है कि स्वाति भाभी और विधु भाई खास तौर से मुझसे मिलने आए। आप सोचेंगे कि ये क्या लिखने कि बात है लेकिन मेरे लिए यह नए अनुभव थे विनम्रता के। अपने से कम उम्र के व्यक्ति को सम्मान देने के। स्वतंत्र विचारों को प्रस्थापित मान्यताओं से अधिक महत्व देने के। उन्होंने मुझसे मेरी कम उम्र के बावजूद बाकायदा ग्रामीण विकास की धारणाओं के बारे में एक सीरियस चर्चा की और बहुत सच्चाई से ग्रामीण भारत के बारे में मेरी समझ को जानने की कोशिश की। उस समय नहीं पता था कि वे आगे चल कर राजनीतिक कार्यकर्ता बन जाएंगे। यह बात भी मेरे लिए नई थी कि अमरीका में भौतिकी में पीएचडी करने वालों की भारत की समस्याओं में इतनी रुचि हो सकती है।

सामाजिक राजनैतिक कार्य में जो लोग नेतृत्व की भूमिका निभाते हैं उनमें विनम्रता और सहजता के गुण बहुत काम देखने को मिलते हैं। स्वाति भाभी में ये दोनों गुण उनके स्वभाव का हिस्सा थे। इन गुणों के चलते वो व्यक्तियों से विचारों का मतभेद होते हुए भी दोस्ती बना लेने की क्षमता रखती थीं।

समाजवादी जन परिषद से जुड़ कर उन्होंने सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक बदलाव की लड़ाई में अपना योगदान लंबे समय तक दिया। एक शोषणमुक्त और समता पर आधारित समाज की स्थापना के लिए अंत तक संघर्षरत रहीं। मेरी नजर में यह सोच भी बहुत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि अधिकतर मध्यमवर्गीय लोग किसी एन जी ओ या मुद्दे के लिए लड़ने कि लड़ाइयों में शामिल हो जाते हैं। इस एन जी ओ व मुद्दा आधारित लड़ाइयों के माहौल में उन्होंने राजनैतिक रास्ता चुना यह भी उनकी परिवर्तन की सोच को स्पष्ट करता है। और

उनकी भौतिकी की ट्रेनिंग के चलते समस्याओं कि गहराई तक पहुंचने व तार्किक रूप से विश्लेषण करने की क्षमता तो थी ही।

एक ही गिला है कि इनके जैसे जुझारू, सत्यशोधक व्यक्ति की देश की जनता के बीच और व्यापक पहचान नहीं बनी। जितनी बनी उससे और बहुत ज़्यादा होनी चाहिए थी। आज के इस समय में इनकी बहुत जरूरत थी देश को। इतनी दुर्लभ बूंद जिसको अभी और बहुत गागर भरने थे, बहुत जल्दी चली गईं।

उनका गोलमटोल हंसता बोलता चेहरा अचानक उभर आता है - 'और अमित, कैसे हो?' मैं ठीक हूं, आप भी ठीक रहिएगा। बहुत प्यार।

प्रणाम।

आधारशिला शिक्षण केन्द्र, मध्यप्रदेश

एक शोक वक्तव्य

स्वातिजी जैसे असाधारण व्यक्तित्वको चंद शब्दों में समेटना असंभव हैं। उनका जीवन, उनका योगदान, उनका समपर्ण, मानवता के महान कार्यों के लिए था। हमें बेहद दुःख है कि वह इस पृथ्वी को हमेशा के लिए छोड़ कर चली गई हैं। हम एक साहसी लड़ाकू व्यक्ति को खो चुके हैं। उनका आकर्षक व्यक्तित्व हमें बहुत याद आएगा। राजनीतिक निहारिका में वह एक चमकीले तारा जैसी थीं। उनका जाना समाजवादी जन परिषद (सजप) के लिए एक हृदयविदारक धक्का है। यह पार्टी छोटी है लेकिन इसके विचार बहुत ऊँचे है। इस पार्टी के, स्वातिजी और उनके जैसे कई देशभक्त व्यक्ति, जो हमे पहले छोड़ कर चले गए हैं, अभी भी हमारे मार्गदर्शक, दोस्त और दार्शनिक बने हुए हैं। इन लोगों ने अपने विचारों और कार्यों से हमें प्रेरणा प्रदान कीं।

मेरा नाम रंजना राय है और मैं उत्तर बंग तपशिली जाति आदिवासी संगठन (उत्जास) की अध्यक्ष हूँ। मेरे साथ हैं कृष्णा कान्त रोय, जो मानव अधिकारों के लिए काम करते है और सजप के सदस्य है। हम दोनों इस लेख के माध्यम से स्वातिजी को भावपूर्ण नमन और सलाम दे रहे है। स्वातिजी से हमारा परिचय तब हुआ जब वह 1983 में उत्जास के केंद्रीय सम्मलेन में सिलिगुड़ी आयीं। इससे पहले के उनके जीवन की जानकारी हमें नहीं है। इस सम्मलेन में उन्होंने उत्जास की उचित मांगो का समर्थन किया। इसके बाद वह हमारी सहकर्मी बन गयीं और हम सब मानव अधिकारों के लिए लड़ते रहें। अन्याय और शोषण को स्वातिजी ने कभी भी नजरंदाज़ नहीं किया। वह बराबरी, स्वतंत्रता, भाईचारा और लोकतंत्र के लिए हमेशा दिल और जान से समर्पित थीं, जो भगवान गौतम बुद्ध और संत कबीर के जीवन और दर्शन का सार भी हैं। दोनों भगवान बुद्ध और संत कबीर का वास्ता बनारस से हैं, जहाँ स्वातिजी रहती थीं और जो उनका कार्यशेत्र था। स्वातिजी समता संगठन की संस्थापक सदस्य थीं। यह संगठन मानवाधिकारों के तार्किक और विश्लेषक विचारों का एक भंडार था।

स्वातिजी हमेशा भारत के शोषित और उपेक्षित लोगों के साथ खड़ी रहीं। कई सारे जन आन्दोलनों में भाग लेने के साथ-साथ स्वातिजी इस मनुवादी व्यवस्था के सबसे निचले पायदान पर स्थित महिलाओं और दलितों पर जो शोषण और अत्याचार होता है, उस पर वह बुलंद आवाज़ उठाती थीं। स्वातिजी द्वारा लिखे गए लेख और उनका संघर्ष,इस दुष्ट ब्राह्मणवादी जाति व्यवस्था, उसकी कुरितियों, उसके बुरे रिवाज़ों और पितृसत्तात्मक हिन्दू समाज की बुराइयोंके खिलाफ था। स्वातिजी की जीवन गाथा इतिहास के पन्नो में दर्ज हो चुकी है। वह हमारे बांकी पहले गुज़र गये वीर नेताओं की तरह एक आकर्षक तारे के रूप में हमें याद रहेंगी। हमारे मन में उनके जीवन से जुडी यादें और देश के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिस्थितियों को बदलने में उनकी भूमिका अभी ताजा हैं। वह हम सब के लिए एक प्रेरणा और एक उदहारण है। हम आशा करते है कि स्वातिजी का जीवन दर्शन और उनका कार्य इस दुनिया में सदा याद रखा जाएगा।

रंजना राय, अध्यक्ष, उत्जास केंद्रीय कमिटी
कृष्णकांत राय, मानव अधिकार कार्यकर्ता
एवं सदस्य सजप
(अनुवाद- शिउली वनजा)

मेरी अनन्य दीदी

दूधनाथ राम

जब मैं अनन्य तथा महान स्त्रियों के बारे में सोचता हूं तो मेरे मस्तिष्क में मेरी मां के बाद, सबसे पहला ख्याल स्वाति दीदी का आता है। मैं खुद को सौभाग्यशाली मानता हूं कि मुझे दीदी ने, जोकि प्रतिभावान, नरम-दिल तथा सहानुभूतिपूर्ण महिला थी, ने अपनी परिवार का खास हिस्सा बनाया। दीदी के साथ बिताए हुए समय और उनके दिए गए प्रेम का विवेचन करना मेरे लिए कठिन है, क्योंकि, उनके प्रेम और अपनत्व को विश्लेषित करने के लिए मेरे पास शब्दों की कमी है। परंतु अगर मुझे उनको केवल एक शब्द में स्पष्ट करना हो तो वह शब्द होगा– घर। स्वाति दीदी से मुझे उम्मीद की किरण की अनुभूति होती थी।

स्वाति दीदी से मेरा परिचय 37 साल पहले हुआ था मेरा परिचय दीदी से अफलातून जी ने 1983 में करवाया था। मैं आज भी खुद को सौभाग्यशाली मानता हूं कि मेरा उनसे परिचय हुआ। सन 1983 में मैंने 12वीं कक्षा के उपरांत काशी विश्वविद्यालय स्नातक में दाखिला लिया बीएचयू के वातावरण से अपरिचित में वह युवा था जो कि गरीबी तथा समाज की भागदौड़ के बीच कहीं अपनी जगह को खोज रहा था। तभी मेरा परिचय स्वाति दीदी से हुआ। एक नए छात्र को उन्होंने जाति धर्म की पूछताछ किए बिना, बेझिझक अपने परिवार का हिस्सा बनाया।

स्वाति दीदी से मेरी राजनीति पर चर्चा नहीं होती थी, परंतु जब कभी जाति और धर्म के नाम पर शोषण की खबरें होती थी, तब उसे बता कर बहुत उदास तथा निराश होती थी। जाति तथा धर्म के आधार पर होने वाले शोषण को बताते हुए वह भावुक हो जाती थी। स्वाति दीदी स्वभाव से भावुक थी। दूसरों के दुख को गहराई से महसूस कर वह अक्सर भावुक हो जाया करती थीं।

कई अर्से पहले का एक वाकया है, यह वृत्तांत मेरे उनसे संपर्क में आने के बाद का है, जब स्वाति दीदी समता संगठन का हिस्सा थी, तब वह छित्तूपुर में दलित टोला में बच्चों को निशुल्क पढ़ाने जाती थी। मैं उनके इस कार्य से अत्यंत प्रभावित होता था। परंतु मैं मैंने कभी यह कार्य खुद नहीं किया।

स्वाति दीदी महिला महाविद्यालय की प्रवीण तथा दुखद अनुभूतियों को अक्सर साझा किया करते थीं। अच्छी अनुभूतियां वह जब दीदी गरीब तथा दलित छात्राओं को छात्रावास की सुविधा और पठन पाठन में मदद करती थीं। एक बार एम एससी के विद्यार्थियों ने आग्रह किया था की भौतिक विज्ञान का एक विशिष्ट अध्याय मैडम से ही पढ़ना हैं।

सुखद अनुभव व जब एक कठिन समय से गुजर रही थी। उस समय उन्होंने अपनी समस्याओं को, प्रख्यात पत्रकार नलिनी सिंह के धारावाहिक 'हेलो जिंदगी' पर अभिव्यक्त किया था। उसके उपरांत उनकी छात्राओ ने वह धारावाहिक देखकर उनकी प्रसंशा किया था। इस वाक्य को बताते हुए बहुत खुश हुई थीं।

दीदी आध्यात्मिक प्रवृत्ति की भी थी। वह अक्सर संकट मोचन मंदिर जाया करती थी। मैं भी कई बार उनके साथ मंदिर जाया करता था। सन 1984 के उपरांत मैंने उन्हें संकट मोचन मंदिर जाते नहीं देखा। कारण मुझे पता न था और ना ही मैंने पूछा। दीदी दुर्गा पूजा के आखरी दिन का उपवास रखती थी तथा दुर्गा पूजा में भी भाग लेती थी तथा पंडालों में भी जाया करते थीं।

सन् 1993 मैं मुझे केंद्रीय विद्यालय में नौकरी मिलने के उपरांत मैंने दीदी को खत लिखा जिसमें मैंने अनजाने में एक ऐसी बात लिख दी जिससे दीदी को दुख पहुंचा था। कुछ दिन बाद उन्होंने मुझे माफ कर दिया था। मैं अपनी उस नासमझी के लिए आज भी शर्मिंदा हूं। दीदी शालीन स्वभाव की महिला थी, जो दूसरों की अनजाने से की गई गलतियों को माफ कर देती थीं।

उनके जीवन में कुछ अनहोनी घटित हुई जो कि नहीं होनी चाहिए थी। उन घटनाओं का होना उचित ना था। उन्होंने दीदी के व्यक्तित्व के साथ न्याय नहीं किया। उनकी स्थिति को देखकर मेरा हृदय भारी हो उठा था। दीदी इन परिस्थितियों में मुझे बहुत साहसी और धैर्यवान प्रतीत हुई। वह महिला जिसने नारी सशक्तिकरण तथा सामान्य शिक्षा के लिए अत्यंत संघर्ष करती थी, उन्हीं स्वाति दीदी को इतना विपत्ति-ग्रस्त देख मुझे गहरा आघात पहुंचा। दीदी इस वेदना की हकदार न थी। मैं जिस मोहल्ले-बस्ती से आया था वहां यह सब रोज देखने को मिलता था।

दीदी के रिक्शा चालक को पंडित जी के नाम से जाना जाता था। वह दीदी को कॉलेज से घर और घर से कॉलेज ले जाया करते थे। दीदी उन्हीं के साथ कॉलेज जाया करती थी। दीदी उनका बहुत आदर सत्कार करती थी। पंडित जी सालों तक स्थाई रूप से दीदी को महिला

महाविद्यालय छोड़ते थे।

स्वाति दीदी और उनकी बहने अवियोज्य थीं। लगभग 3 वर्ष पहले मैं स्वाति दीदी की बड़ी बहन से मिलने आगरा गया था जहां उनका स्थाई घर है। दीदी के बहनोई बीएचयू के कृषि विभाग में डीन के पद से निवृत हुए थे। उनका देहांत करीबन 4 वर्ष पहले आगरा में हुआ। स्वाति दीदी की बहन, चित्रा मौसी बहुत बीमार रहती हैं। स्वाति दीदी हर दो महीने में उनके यहां चक्कर लगा लिया करती थीं। सबसे पीड़ा की बात यह है कि स्वाति दीदी की ही बड़ी बहन को उनके देहांत की खबर नहीं दी गई है।

स्वाति दीदी के अचानक बीमार होने की खबर मुझे 11 मई 2019 को सुबह 6:00 बजे बालू द्वारा में मिली थी। उन्हें दिल्ली के पुष्पावती सिंघानिया अस्पताल में भर्ती कराया गया था। तब हमें केवल यही जानकारी थी कि वह अचानक बेहोश होकर गिर गई थी। नेताजी तब बनारस में थे। दीदी के बीमार होने की खबर सुन वह दिल्ली तुरंत आए थे। कुछ दिन अस्पताल में जांच के बाद पता चला कि दीदी को ब्लड कैंसर है। पुष्पावती सिंघानिया अस्पताल से उन्हें तब राजीव गांधी कैंसर इंस्टिट्यूट में भर्ती कराया गया था। दीदी बीमारी के चलते भी कभी खुद को निराशा और दुख से प्रभावित नहीं होने देती थी। जब अस्पताल में लोग उनसे मिलने आते थे तब वह बहुत खुश होती थीं। अफलातून जी की बहन संघमित्रा ने भी दीदी का अस्पताल में महीनों देखभाल की। दीदी की बेटी प्योली ने उनके इलाज में रात दिन एक कर दिए थे। अफलातूनजी ने 9 महीने तक उनकी जिस प्रकार देखभाल की उल्लेखनीय है। मैंने उनको कभी थकते नहीं देखा।

दीदी का दिल्ली में लगभग 6 महीने इलाज चलने के बाद उनके कहने पर उन्हें उनके घर, बनारस वापस ले जाया गया था। 2 मई 2020 रात 8:00 बजे सर सुंदरलाल अस्पताल में उनका देहांत हो गया।

पी.जी.टी., केन्द्रीय विद्यालय संगठन

पढ़ाई व मैदानी काम, दोनों का अनुभव

शशि मौर्य

स्वाति दी को मैं पहली बार सन् 1985 में पिपरिया (ज़िला होशंगाबाद, म. प्र.) में मिली थी। उन दिनों मैं सिर्फ घरेलू महिला थी और अपने वैवाहिक जीवन की सबसे अहम समस्या से जूझने की कोशिश कर रही थी। ऐसे समय में स्वातिदी से मुझे बहुत हिम्मत मिली। उन्होंने मेरा हौसला बढ़ाया और अपने जीवन की समस्याओं को भी बांटा। ऐसा लगा कि मानों वे मेरी बरसों पुरानी दोस्त हों। उनका यह गुण मेरे दिल में बहुत गहरे उतर गया और हमेशा बना रहा। यदि चंदेक शब्दों में उनके बारे में मुझे कहना हो तो यही कहूंगी कि वे बहुत-बहुत ही अच्छी इंसान थीं।

मैं न टीचर हूं, न रीडर, न ही प्रोफेसर या अन्य कोई बड़ी डिग्री-धारी। मुझे गांव-बस्तियों में काम करना अच्छा लगता है। सितंबर 2018 में अभाशिअम के पटना राष्ट्रीय सेमिनार के दौरान जब स्वातिदी से मेरी समय-समय पर चर्चा हुई तो इन्हीं मुद्दों पर केंद्रित रही यानी, मैदानी स्तर पर काम करने के अनुभवों के बारे में। मेरे काम के बारे में वे दिवंगत सुनीलभाई से भी खबर लेती रहती थीं। सुनीलभाई और स्वातिदी दोनों उन बिरले लोगों में से थे जिनके पास पढ़ाई की ऊंची डिग्री और मैदानी काम दोनों का सघन अनुभव रहा है।

पिछले साल अभाशिअम की हुंकार रैली की पूर्व तैयारी बतौर जब आदिवासियों को लामबंद करने के लिए केसला (म. प्र.) जाने की बात तय हुई तो उन्होंने पूरे अधिकार के साथ ईमेल किया कि मैं अनिल के साथ वहां ज़रूर जाऊं। इतने अधिकारपूर्ण व आत्मीय तरीके से किए गए आग्रह को मैं कैसे टाल सकती थी। मुझे अच्छा लगा कि उन्होंने पूरे विश्वास के साथ मुझे अपनी इच्छा बताई।

फरवरी 2019 में दिल्ली की हुंकार रैली में हम गांधी शांति प्रतिष्ठान, दिल्ली के एक ही कमरे में रुके थे। हम दोनों में एक समान बात थी कि हम खाली नहीं बैठ सकते थे। कुछ-न-कुछ उपयोगी काम करते रहने की आदत थी। सो, उन्होंने कहा कि चलो हम भरे हुए शिक्षा-संबंधी मत सर्वेक्षण प्रोफ़ार्मा की जानकारी ही व्यवस्थित कर लेते हैं। तो बस, बिना किसी के कहे ही हमने काम शुरू कर दिया।

आज जब मैं उनके ऊंचे वैज्ञानिक शैक्षिक स्तर और ज्ञान की गहराई के बारे में जान रही हूं तो उनके प्रति श्रृद्धा और भी बढ़ जाती है। उन्हें अपनी किसी भी उपलब्धि का दंभ कभी नहीं रहा, उनकी सहजता ही उनकी सबसे बड़ी खूबी थी। लगता है मैंने अपनी सबसे अच्छी एकमात्र दोस्त को खो दिया है। (1 अगस्त 2020)

अ.भा.शि.अ.मं.

श्रद्धाञ्जलि : त्वम् तत् असि महीयसी जयति जय स्वाति!

डॉ. सुशील कुमार शुक्ला

आँसू से नम,
शब्द-पुष्पों की यह अवलि,
श्रद्धाञ्जलि है आपकी,
आपको नमन!
स्वाति किंबा स्वाती;
नक्षत्र एक आकाशीय,
चमकता सितारा/ देदीप्यमान/लाभकारी!
जलीय प्रकृति/ सरल/ सरस/ तरल/ सारस्वत भाव बोधी!
गहन औदात्य/ममता अकुण्ठ/नारी भङ्गी/सकरुण चेतस्!
....ऐसा कुछ कहता उसे, भारतीय ज्योतिष!
ऋत (न्याय) और जल (बुद्धि) के अधिष्ठाता वरुण,
इस नक्षत्र के अधिदेवता हैं, स्वामी हैं!
एवंविध यह जीव को बनाता है स्वाभिमानी/शिक्षा वृत्तिक!
देवि! स्वाती! इस आपके नाम में निहित यह अर्थाभास,
अहैतुक विधान है, सर्वज्ञ का
आपके पुण्यशील माता-पिता का!
आपके स्वभाव की तथता का पाठ यह,
उन्हें विगलित करता है, जो चल सके हैं साथ साथ!
स्वाति-जल की कोई बूँद एक,
सीपी के मुँह में बनती है जैसे मोती
महामत्त गजराज के कानों में गजमुक्ता,
फणियों के मुँह मणि,
खानों में खनिज,
बाँस वन में बंसलोचन,
पपीहे के मुँह में जीवन! अमृत!!
आपकी निष्कलुष रहनुमाई/ पथ-प्रदर्शन/
निदेशन/सांगठनिकता
अध्यापन/उठना-बैठना/ बोलना-बरतना;
धरोहर है, उनकी स्मृति की, चरितार्थता है सद् की!
उनके लिए मूल्य है, जो कभी साथ चल सके हैं,
या फिर जिन्हें चलना सिखाया आपने!
सुवर्ण पदक प्राप्त स्नातक उपाधि से आरंभ हुई
यूनिवर्सिटी ऑव् पिट्सबर्ग से एटॉमिक फिज़िक्स में
की गयी पी-एच्.डी.; आपकी,
अकादमिक विभव के द्वार खोल, स्वागतोन्मुख थी खड़ी,
पर, देश की माटी की पुकार रह न पायी अनसुनी,
आप लौटीं भारत!
समाजवादी समाज की नव रचना का अलख जगाने,
अनन्त संघर्ष का आलेख लिखतीं!
आपातकाल के बाद का दौर यह,
उत्पीड़ित वर्गों के ज़मीनी आन्दोलन को
खड़ा करने में आपकी महती भूमिका का मोहताज़ जो था!
विश्वविद्यालय रुड़की/जे.एन.यू./आई.आई.टी. हैदराबाद,
अन्ततः काशी हिन्दू विश्वविद्यालय और प्रत्यंत की
सुन्दर बगिया की वञ्चित मलिन बस्ती के बच्चों को
पढ़ाना/ संभाल देना;
शिक्षा-शिक्षण और समाज-प्रतिबद्धता के,
रंग बहुल कर्म-क्षेत्र रहे सदा आपके!
बॉयो इन्फार्मेटिक्स के नये शोध अनुशासन में हो प्रवृत्त,
बी.एच.यू. में इस विभाग के कल्पकों में अग्रगण्य रहीं आप!
'नारी एकता मंच' भी गठित हुआ साथ-साथ।
...तो निहित अकादमिक गौरव, कभी बाधा न बना,
समाजोन्मुख मानवीय चिन्तन में आपके!
स्त्री, दलित, आदिवासी, श्रमिक, कृषक; आपकी सामर्थ्य
के कायल रहे!
कर्म-क्षेत्र के विरोधी ध्रुवों की ऐसी संगति,
बैठा पाना कठिन है,
सीमित अर्थों में सही, 'योगिराज' होना है।
समाजवादी जन परिषद्/ भारत शिक्षा अधिकार मंच/ नारी
एकता मंच
आपके जन-प्रतिबद्ध कर्मयोग के विविध प्रत्यंत;
शिक्षा-शिक्षण कर्म, अध्यापन, अकादमिक वृत्ति, ...यह
सब?
किञ्चित् अधिक होना है;
अधिक यानि सविशेष!
...सिद्ध करना यह कि अध्यापन-गौरव का निकष समाज
ही है!
निश्चय ही, कोई अध्यापक आप जैसा,
संस्था और समाज के आकाश पर, उगता है कभी,
नक्षत्र बन देदीप्यमान! आपकी विभुता का नमन!

एक और व्यक्ति, आपमें निहित, सहज मानुस,
जो मेरा/ मेरी पत्नी/ परिवार का परिचित रहा है;
केवल दो वर्षों से पड़ोस में रहना/ बस इतना सा साथ;
तथापि, आते-जाते कहीं/ लिफ्ट में/ रास्ते में कभी,
आप दम्पति के पहले उठते हाथ अभिवादन में;
कुशल-क्षेम पूछ लेना/ होठों पर सहज स्मिति;
भावित करता रहा है, हमें अनवरत!
कभी शहर से बाहर जाते, घर का ख्याल रखने को कहना,
कभी घर में आकर बैठना/ पत्नी से बातें कुछ वैही ही
जैसे ममतालु समवयस्का मातायें/गृहिणियाँ करती रही हैं,
विमर्शों के सीमित से परिधि में।
कभी नयी बहू से मिलने आ जाना
एक बुलावे पे भोजन के लिए सहजता से पहुँचना,
कभी बाहर जाते वक्त पति की चिन्ता/
उनके संकोची होने की बात कहना।
बहुत सारे आत्मीय शेड्स् हैं; मानवीय निजता के!
इस विराट् अपनापे का शत शत नमन!
लें यह प्रणति मेरी!
यह श्रद्धाञ्जलि लें'!
त्वम् तत् असि महीयसी!
जयति जय स्वाती!!

(अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद से सम्बद्ध, आचार्य नरेन्द्रदेव किसान पी.जी. कॉलेज में प्राचीन इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग के पूर्व अध्यक्ष)

स्वाति हमारी बहू

कृष्णा मोहन्ती

जो काम बहुओं को सास के लिये करना पड़ता है, हमारा इतना दुर्भाग्य है कि हमे वही काम अपनी बहु के लिये करना पड़ रहा है। जब अफलातून ने मुझे स्वाति के बारे में कुछ लिखने को कहा - मेरी समझमें नहीं आया कहाँ से शुरू करूँ —

मेरी बड़ी बहन की छोटी बहू बनकर स्वाति आमतौर पर जिस प्रक्रिया से बहु आती है वैसे नहीं आई थी। अनेक संस्कार और बंधनों को तोड़कर मेरी दीदी के बेटे अफलातून की साथी बनी। मेरी जानकारी जितनी है वह अफलातून की राजनैतिक गुरु थी। बनारस हिन्दु विश्व विद्यालय में भौतिकी की अध्यापिका थी और साथ साथ समाजवादी जन परिषद की सक्रीय सदस्य थी पार्टी का काम करते करते एक दूसरे के नजदीक आये, आकर्षित हुए। सामाजिक और पारिवारिक आपत्ति और असहमति के बावजूद दोनों का प्रेम अविचल रहा। परिवार के कई बुजुर्ग उनको सहज भाव से ग्रहण नहीं कर पा रहे थे। उनके इस भावना को स्वाति ने बड़े ही परिपक्वता के साथ निभाया और हमारे परिवार के विचित्रताओं में बड़ी आसानी से शामिल हो गई। अफलातून के नाना नानी याने हमारे पिता नवकृष्ण चौधुरी, मां मालती सेन विश्वभारती, शान्तिनिकेतन में पढ़ाई करते समय मिले थे। पिताजी थे ओड़िशा के और मां थी बंगाली, 1927 में शादी के बाद दोनों ने ओड़िशा को अपना कर्मक्षेत्र बनाया। मेरी बड़ी बहन उत्तरा और नारायण देसाई 1945 मे तालीमी संघ, सेवाग्राम में बुनियादी शिक्षा में तालीम लेते वक्त मिले और 1947 में जीवनसाथी बने। उनकी बेटी संघमित्रा की शादी कोंकण के मूल निवासी सुरेन्द्र गाड़ेकर के साथ हुई और बड़े बेटा अफलातून का बड़ा भाई नचिकेता ने बिहार की बेटी को बहु बनाया। ऐसा एक सर्व भारतीय परिवार में स्वाति भी अपनी वैशिष्ट्य से सब के साथ घुल मिल गयी। वह पहली बार हमारी परिवार मिलन में आई जब हमारी बड़ी बेटी कल्पना की शादी तमिलनाड़ के निवासी लिंगा राजा के साथ हो रही थी। तब मेरी दीदी चल बसी थीं, पिताजी भी गुजर गये थे, पर मेरी मां मालती चौधुरी अंगुल, ओड़िशा में रहती थीं। वह 90 साल की थीं और बिमार रहती थी। इसलिये उनके स्थापित बाजी राउत छात्रावास, अंगुल में विवाह कार्यक्रम रखा गया। इस में महान्ति परिवार के सारे सदस्य, हमारे ताऊजी गोपबन्धु चौधुरी के परिवार के तीन पीढ़ी के सारे जन, देसाई परिवार और हमारे मामाजी याने सेन परिवार के कुछ जन शामिल हुये थे। इस पूरे समागम में भौतिकी वाले काफी लोग थे। उसमें स्वातिजी भी शामिल हो गईं। स्वाति को मिलाकर तीन बहू, दो बेटे और एक दामाद पदार्थ विज्ञान के डक्टरेट व उनमें से कई पोस्ट डाक्टरेट भी हैं। मेरे पति विभूति भूषण महान्ति रेडियो फिजिक्स के एम्. एससी.। और सबसे अलग मनमोहन चौधुरी स्कूल का कॉलेज या यूनिवर्सिटी गये बिना अपने अध्ययनों के बलबूते पर भौतिकी पर एक बहुत ही उपादेय किताब लिखी हैं। उनके मनमें जो भी सवाल आते थे बहुओं से प्रश्न करते थे, चर्चा भी चलाते थे। फिजिसिस्ट बहुओं के लिये उनके मनमें गर्व और आनन्द साफ दिखाई देता था। ये सारे

बौद्धिक चर्चा में स्वाति हिस्सा लेती थी। और संगीत में जब हिस्सा लिया तब पता चला कि अच्छा गाती भी है। बंगाली होने के नाते रवीन्द्र संगीत तो अच्छा गाती ही थी।

मेरी माँ एक क्रान्तिकारी और समाजवादी हो कर भी आफलू और स्वाति के संबन्ध को सहज भाव से नहीं ले पा रही थी। स्वाति ने मेरी मां की इस भावना को समझ कर बड़े ही सहज और सौम्य भाव से ग्रहण किया। इससे मैं काफ़ी प्रभावित हुई। इसके बाद बीते हुए सत्ताइस सालों में हम बीच बीच मे मिलते रहते थे, कभी वेड़छी, गुजरात में या ओड़िशा में। उसके सहज और मधुर स्वभाव के कारण उसने परिवार में सब के साथ संबंध बना लिया। मेरे जीजाजी नारायण भाई संत स्वभाव के थे, उन्होंने इस संबंधको सबसे पहले मान लिया था। मैने गौर किया कि कई विषय में मेरी और स्वाति की पसंद मिलती जुलती थी। आफलू की बड़ी बहन संघमित्रा प्राकृतिक रंगोसे खादी और हैन्डलूम कपड़ों के रंगाई, छपवाई और कलमकारी वगैरह का काम करवाती थी। कई बार स्वाति और मैं एक ही डिज़ाइन को पसंद करते थे। वह कपड़ा कम हो तो आपस में तय करना पड़ता था उसको कैसे बाँटे या तो व छोटी होने के कारण मैं पीछे हट जाती थी। ओड़िशा के संबलपुरी हैन्डलूम साड़ियाँ ही स्वाति ज्यादातर पहना करती थी और उसके पसंद बहुत परिमार्जित हुआ करते थे। 2018 में मेरे आँखों के आपरेशन करवाने आफलू की बड़ी बहन डॉ. संघमित्रा के पास वेड़छी गयी थी। मैं ठीक हो कर वापस आनेके पहले ही मेरे सौभाग्य से तब गर्मियों की छुट्टी में स्वाति, आफलू, बेटी प्योली, दामाद सोमेश और नातनी इमारा रोज़ा को ले कर वेड़छी आये। उनके साथ थोड़े ही दिन सही तीन पीढ़ियों के सान्निध्य में आनंदमें बीते। इमारा के साथ उसकी दिदु कितना उपभोग करती थी मैं देखकर आई थी। कौन जानता था कि यही हमारी आखिरी मुलाकात होगी।

मेरे बेटे की शादी में मेरी दीदी के तीनों बच्चों में से केवल आफलू और स्वाति आ पाये थे। अगर वे न आते मुझे तो दुख होता ही एक बहु रहने से शादी में जो रौनक रहा व न होता। आखिर बार करीबन दो साल पहले स्वाति आफलू के साथ दो दिन के लिये अंगुल आयी थी, यही उसका आखरी अंगुल आना था। तब उसकी तबियत ठीक नहीं थी। पैर में सुजन थे और पैरों में काफी दर्द भी था। वे दोनों समाजवादी जन परिषद की बैठक के लिये कलाहान्डि आये थे। नियमगिरि बचाओ आंदोलन के समर्थन में ये दोनों बीच बीच में आते थे। इस बार तबीयत की परवाह किये बिना ही आई थी। अंदर ही अंदर इतनी बड़ी बीमारी कब शुरु हुई किसी को पता भी न चला। अपनी राजनैतिक आदर्श में, घर में, परिवार के साथ कर्तव्य में स्वाभाविक भाव से सक्रिय रही। यही उसकी जिदंगी थी , यही सब जीवित रहते तक हम याद करते रहेंगे।

भावनात्मक मार्गदर्शक

डा स्वाति मेरे लिए सिर्फ एक नाम नहीं हैं। वो एक प्रेरणा हैं, वो प्यार हैं, वो अपने साथियों की चिंता और उनकी देखभाल का दूसरा नाम हैं। अपने राज्य से काफी दूर,उनके जैसे किसी व्यक्ति के संपर्क में आना और उनका प्यार और स्नेह मिलना, मेरे लिए एक दुर्लभ अनुभव था। वो अखिल भारतीय शिक्षा अधिकार मंच के हर व्यक्ति का निरीक्षण करतीं और ऐसे लोगों को पहचान लेतीं जो काफी संजीदा और प्रतिबद्ध हैं। फिर वो उनकों समझने में, उनके साथ संवाद करने में और उनका दिशा निर्देशन करने में काफी समय बितातीं। उनकी यह बहुत बड़ी खूबी थीं कि वो लोगों के छोटे से छोटे प्रयासों को समझतीं और उनकी सराहना करतीं। वो अखिल भारतीय शिक्षा अधिकार मंच में युवाओं को पहँचानने और उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए काफी उत्सुक रहती ताकि संगठन में नए विचार आयें और नई पीढ़ी में नेतृत्व विकसित हो सकें। अपने विषय के शोध में लगे हुए एक प्रोफेसर और जनसंघर्ष में गहरे रूप से शामिल एक कार्यकर्ता, इन दो व्यक्तित्वों का अनूठा मिश्रण थीं स्वाति जी। उनमें नेतृत्व और साधारण कार्यकर्ता के रूप मे काम करने, दोनों के गुण और प्रतिभा थीं। वो अपनी सोच और काम करने की शैली में काफी स्वतंत्र थीं। पर अपनी इस स्वतंत्र शैली साथ ही वो संगठन को मानने वाली, संगठन के प्रति वफ़ादार और जो भी निर्णय बहुमत से संगठन में लिए गए हैं उनका पालन नियम से करने वाली व्यक्ति थीं। उनका यूं आकस्मिक निधन एक बहुत ही क्रूर घटना है जो यह दिखाता है कि इस देश की स्वास्थ व्यवस्था कितनी कमजोर और खोखली है। उनके ऐसे अचानक चले जाने से समाजवादी जन परिषद और अखिल भारतीय शिक्षा अधिकार मंच को अपूरणीय क्षति हुई है। व्यक्तिगत रूप से मैंने एक ऐसी बहन को खो दिया जो बौद्धिक और भावुक रूप से मेरी मार्गदर्शक थीं। लाल सलाम स्वातिजी।

पी. बी. प्रिंस गजेन्द्र बाबू

(सदस्य, सचिवालय, अभाशिअमं) **(अनु. शिवली)**

मित्र और कॉमरेड स्वाति की स्मृति में

मधु प्रसाद

प्रथम दृष्टया आंखें धोखा भी खा सकती हैं। उस दोहरे बदन की, एक सुंदर सूती ढाकाई साड़ी पहने, चश्मा लगाए स्त्री को जो कि निश्चित ही बंगाली थीं, इस वेशभूषा से एक प्रबुद्ध छवि ही उभरती थी। और उनके सादे से 'बॉब' केश विन्यास से एक ऐसी महिला प्रोफ़ेसर का रूप उभर रहा था जिसे मैंने बिना किसी शंका के हमेशा से कोलकाता से उपजी प्रबुद्धता से जोड़ कर देखा था। किन्तु फिर भी, उन्हें देखकर जो रूप सबसे अधिक सामने आता वह एक ऐसी गृहणी का था जिसे अपनी पाककला पर और अपने परिवार पर समुचित ढंग से सम्पूर्ण नियंत्रण पर गर्व था।

शायद मुझे सीधे सीधे ये मान लेना चाहिए कि जब मैं पहली बार स्वाति से मिली, तो मैंने बड़ी ही आसानी से और बिना सोचे समझे ही एक बंधी बधाई प्रतिक्रिया का सहारा लिया था जिस पर मेरा पहले कभी ध्यान भी नहीं गया था। कुछ ही समय में मुझे इसका भली भांति भान हो चुका था कि यह उनका सबसे बड़ा गुण था, ताकत थी। ना जाने कैसे, बार बार स्वाति ने ही बड़ी सौम्यता से हमारे ऐसे विचारों को दरकिनार किया और हमारे उन मुखौटों को उजागर किया जिन्हें हम में से खा़सकर कई राजनैतिक अथवा आदर्शों से प्रेरित कार्यकर्ताओं ने सहज, अनिर्णयात्मक और पूरी तरह से वस्तुनिष्ठ होने के नाम पर पहन रखा था। और ऐसा वो हमेशा ही हम में एक होने की प्रबल अभिव्यक्ति के साथ करतीं। इस तरह उन्होंने कभी भी किसी को भी आहत किए बगैर हम सब में एक अभिनव जागृति पैदा की जिससे हमें किसी समस्या, अपने साथी रैडिकल और वो सभी लोग जिनके लिए हमारे मुहिम प्रतिबद्ध थे और जिन्हें हम उत्साहपूर्वक गतिशील करना चाहते थे, इन सभी को समझने में मदद मिली। यह एक विलक्षण गुण था और इसका अभाव हम सब बुरी तरह महसूस करेंगे क्योंकि इस मुश्किल समय में अब वे हमारे बीच नहीं हैं।

स्वाति पहले ही एक अनुभवी अभियानकर्ता और आयोजक थीं जब वो समाजवादी जन परिषद (सजप) की प्रतिनिधि के रूप में अ.भा.शि.अ.मं. से जुड़ी थीं। के सजप अ.भा.शि.अ.मं. से संबंध और उसके बुनियादी कार्य जो कि उस नव उदारवादी शिक्षा नीति की समीक्षा करनी थी जिनका ध्येय शिक्षा व्यवस्था का निजीकरण, व्यवसायिकरण, निगमीकरण ही था। साथ ही साथ दृढ़तापूर्वक कॉमन नेबर स्कूल सिस्टम की पक्षधरता जिसका ध्येय सबके लिए अनिवार्य, मुफ़्त और समान शिक्षा उपलब्ध कराना था, ये सब कुछ सजप नेता सुनील जी से हमारे संबंध जितना पुराना था। वह उस संस्थापक टीम का हिस्सा थे जिसने अ.भा.शि.अ.मं. की 2009 में स्थापना की थी। सुनील जी की अकस्मात असमय हुई मृत्यु से हम सब व्यथित हो उठे थे कि हमने एक महत्वपूर्ण कड़ी खो दी थी। परन्तु स्वाति और अफलातून के आंदोलन से जुड़ने के बाद ना सिर्फ़ समानता और सामाजिक न्याय के संवैधानिक मूल्यों पर आधारित एक शिक्षा प्रणाली की पक्षधरता और उसको बढ़ावा देने के हमारे साझा उद्देश्य ना केवल और भी विकसित हुए बल्कि साथ ही साथ सजप से हमारे संबंध सुदृढ़ हो गए। अ.भा.शि.अ.मं. के सभी मुहिम और संघर्षों में, भारत के बच्चों के शिक्षा के मौलिक अधिकार को संरक्षण देने और प्रोत्साहित करने की ओर स्वाति की संगठनात्मक क्षमताएं और गहरी प्रतिबद्धता ने सुनिश्चित किया कि सजप की देश व्यापी सभी यूनिट हमारे एक ही ध्येय -- समान और उत्तम शिक्षा के सर्वव्यापीकरण -- को बनाने और लागू करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकें। जिसके लिए केन्द्र और राज्य, दोनों ही सरकारें ज़िम्मेदार और उत्तरदायी हों।

मुझे याद पड़ती है एक कार्यशाला जो सितंबर, 2014 में बनारस में रखी गई थी। समस्त वैचारिक और सैद्धांतिक चर्चा में स्वाति हमेशा की तरह ही सक्रिय रहीं और उन्होंने राइट टू एजुकेशन एक्ट 2009 की तीखी आलोचना में अगुवाई की। फिर भी जब चर्चा कार्यवाही के कार्यक्रम की ओर मुड़ी जो हमें सरकार की नीतियों के विरोध में करनी थीं, और उन अनेक एक सी सोच वाले विभिन्न संस्थाओं में जिस एकता की ज़रूरत थी

जिससे कि उन्हें कार्यवाही में जुटाया जा सके, मुझे याद है वो स्वभावतया स्वाति जी ही थीं जिन्होंने सभी अनिवार्य बातों पर ध्यान खींचा। उन्होंने किसी भी सफल संघर्ष के लिए धन की आवश्यकता पर ज़ोर डाला। वो इस बात पर स्पष्ट रूप से ज़ोर डालती रहीं कि हर वो संगठन जो आंदोलन से जुड़ता है उसे एक वित्तीय प्रतीबद्धता सुनिश्चित करनी ही होगी और जिसे मानने को वो बाध्य भी होंगे, और तब ही हम अपने संघर्ष को मिलकर एक साथ आगे बढ़ा सकेंगे!

स्वाति वास्तव में एक वैज्ञानिक थीं। वो ना सिर्फ़ भारत और अमरीका के सबसे प्रतिष्ठित संस्थानों से उच्चतम स्तर तक शिक्षित थीं, और बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय जैसे महत्वपूर्ण शिक्षा संस्थान में कुछ वर्ष पूर्व अपनी सेवानिवृत्ति तक पढ़ाती रहीं, बल्कि उन्होंने वैज्ञानिक अनुसंधान के मनोभाव को अपनी हर बात में आत्मसात किया, भले ही वो अपनी प्रतिबद्धिताओं को तय करने में निर्णयात्मकता और तर्क में हो, जन आंदोलन के हर मोड़ पर ले जा सकने वाली निर्णय क्षमता में हो, या कि अपने समृद्ध और सक्रिय प्रतिदिन की दिनचर्या के प्रगाढ़तम निजी प्रसंगों से जुड़े रवैये में ही हो।

मुझे याद पड़ती है कोहिमा (2015/16 या 17) में एक चार दिवसीय सेमिनार में उनके द्वारा रखी गई एक प्रेजेंटेशन। उस सेमिनार को कोहिमा विश्वविद्यालय ने AIFRTE के साथ मिलकर आयोजित किया था। वह बायो- इंफॉर्मेटिक्स पर एक अग्रपंक्ती प्रस्तुतिकरण था और जिसे मेरे जैसा तकनीक की कम समझ रखने वाला दार्शनिक यदि संभव होता तो आसानी से छोड़ कर जा सकता था। मुझे रुकना पड़ा और तब मैंने पाया कि उनकी प्रखर और जीवंत वार्ता तो इसी बात पर केन्द्रित थी कि कैसे तकनीक अपने आप में कोई अंत नहीं है और ना ही वो अपने उद्देश्य तय कर सकने में सक्षम है। किसी भी अन्य ज्ञान की शाखा की तरह ही तकनीकी भी सामाजिक प्रक्रिया का ही एक हिस्सा मात्र है। हम किस प्रकार इसकी सुविधाओं का प्रयोग अपने ज्ञान को बढ़ाने और संयोजित करने में करते हैं, ये सामाजिक विकास और संघर्षों के प्रति हमारी स्वयं की स्थिति, रुचि और उद्देश्य द्वारा निर्धारित होता है। अपने श्रोताओं को एक तकनीकी विशेषज्ञ की 'निपुणता' से चमत्कृत कर देने जैसा आसान तरीका स्वाति ने कभी नहीं अपनाया। उन्होंने इस निपुणता को लोकतांत्रिक सहभागिता और निर्णय क्षमता के ढांचे में ही सदा रखा जिससे कि बेहतरीन तकनीकी हल तक पहुंचा जा सके।

मैं एक प्रगाढ़ आत्मीय स्वर पर समाप्त करना चाहूंगी। अपने अति सक्रिय अकादमिक, राजनैतिक और संगठन की ज़िम्मेदारियों निभाते हुए भी, उनके जीवन का सबसे सघन आनंद और जुड़ाव उनकी नातिन प्यारी इमारा थी। ना केवल उसके संग खेलते हुए या उसे हर तरह के खेलों में उलझाए हुए, बल्कि तब भी जब वो बस उसकी ताज़ा शरारतों के बारे में हमें देश के किसी अतिथि गृह या हॉस्टल के कक्ष में जहां हम किसी कार्यशाला या मीटिंग के लिए इकट्ठा होते, बतातीं तो उनकी आंखें चमक उठती और स्वर में एक निराला जोश आ जाता था। स्वाति के साथ मेरे सुखद और संतोषजनक संबंध में यदि कोई एक कसक है तो ये कि मैं उनके साथ अपने पोते के जन्म की खुशी साझा नहीं कर सकी। यदि किसी ने मुझे इस अद्भुत अनुभव के लिए तैयार किया था तो वो स्वाति थीं और उनका इमारा के साथ संबंध था। आज जब मैं अपने नन्हें कोनिल -- स्वाति, उसके नाम का अर्थ है पूर्णिमा के चांद की सुंदरता और आकर्षण -- को गोद में लेती हूं, मैं आपके आशीष और शुभकामनाओं की ऊष्मा को उसके साथ पाती हूं। आप अब भी हमारे जीवन के संघर्षों और आनंद को हमेशा की तरह साझा कर रही हैं, इस कठिन समय में भी।

आपकी क्षति ने एक खालीपन ज़रूर पैदा किया है पर आपकी स्मृति हमेशा प्रेरणा देती रहेगी। कुछ भी नहीं खत्म होगा, कुछ भी बेकार नहीं जाएगा। हमारे एक नए नारे के साथ आपको याद कर रही हूं, 'सब याद रखा जाएगा'. विदा मेरी प्रिय मित्र!

सदस्य, अध्यक्ष मंडल, अभाशिअमं
अनुवाद– अपर्णा अनेकवर्णा

अभी अभी सुनने को मिला कि स्वाति नहीं रहीं। बहुत सारी यादें साथ साथ उमड़ पड़ी। समय कैसे गुज़र जाता है और बीच में याद-दाश्त की खाई छोड़ जाता है। कुछ हंसी के लम्हे, कुछ दोस्ताना झगड़े, कुछ साथीपन का एहसास - इसी में ज़िंदगी कूदते हुए बीत जाती है। पूरे परिवार को मेरी तरफ से संवेदना।

दुनू (दुनु रॉय)

स्वाति, उनकी यादें और भविष्य की राह

डॉ. विकास गुप्ता

उम्र के फासले के बावजूद, मैंने हमेशा डॉ. स्वाति को सिर्फ स्वाति के नाम से ही सम्बोधित किया और इसलिए इस स्मृति-लेख में भी उसी दोस्ताना परंपरा का अनुसरण करना ही उचित समझता हूँ। मैंने उन्हें उनकी ज़िंदगी के आखिर के लगभग एक दशक में ही जाना। काश उनसे सीखने का मौक़ा कुछ पहले ही मिला होता! स्वाति का जाना केवल एक आंदोलनकर्ता का ही नहीं बल्कि एक दोस्त का जाना भी है; एक ऐसा दोस्त जो काफी कम समय के लिए मिला और जो अपनी असहमति जाहिर करने में कभी भी न चूका हो। लेकिन उन्होंने जो भी काम मेरे साथ बांटा उसे पूरी ईमानदारी के साथ निभाया।

वे अपने आप में एक आंदोलन थीं क्योंकि उनमें प्रभावित व प्रेरित करने की असीम क्षमता थी और वे खुद में भी लड़ाकू थीं। वे सभी किस्म की असमानताओं और अन्याय के खिलाफ एक ज़बरदस्त आवाज़ थीं। वे तमाम किस्म के प्रचलित पूर्वाग्रहों से मुक्त थीं। तमाम मौकों पर मैंने उनमें इंसानियत के उच्च मानदंडों का व्यवहार पाया। जब मैनें उन्हें मेरे बच्चों के साथ संवाद करते और खेलते देखा या जब जब वे अपनी नतनी की बात करती थीं तो उसमें बच्चों के प्रति बहुत प्रगतिशील रवैया झलकता था।

स्वाति के साथ मेरी मुलाकातों और चर्चाओं की शुरुआत 2014 में अखिल भारत शिक्षा अधिकार मंच के द्वारा आयोजित शिक्षा संघर्ष यात्रा के सिलसिले में हुई। (इससे पहले भी वो और मैं कुछ कार्यक्रमों में आमने सामने तो हुए होंगे, जैसे 2010 में अखिल भारत शिक्षा अधिकार मंच द्वारा आयजित पहले संसद मार्च के दौरान. शायद उनकी बेटी के साथ पहचान भी उसी दौर में कहें अनायास किसी कार्यक्रम के दौरान हुई)।

लेकिन ख़ास तौर पर मैं उनके संपर्क में तब आया जब शिक्षा संघर्ष यात्रा का समापन भोपाल में हुआ। उनके माध्यम से समाजवादी जन परिषद् के अन्य साथियों से भी दोस्ती हो गयी। उससे पहले इसका माध्यम स्वर्गीय सुनील भाई थे।

स्वाति ने इतना ज़बरदस्त दोस्ताना दबाव डाला की न चाहते हुए भी जुलाई 2015 में महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ (बनारस) में उनके साथियों द्वारा आयोजित एक सेमिनार में विश्व व्यापार संगठन के GATS समझौते पर बोलने को तैयार हो गया। मुझे अब भी याद हैं की सेमिनार के बाद देर रात तक मिलनेवाले लोगों का तांता लगा रहा और गरमागर्म चर्चाएं चलती रही व स्वाति हमारे साथ बनी रहीं।

मैं पिछले कुछ वर्षो से राजा शिव प्रसाद सितार-ए-हिन्द पर एक ऐतिहासिक शोध में व्यस्त हूँ। उनकी कर्मभूमि भी बनारस थी, इस काम में स्वाति व प्रोफेसर महेश विक्रम की मदद मुझे हमेशा याद रहेगी। उन्होंने मुझे कई ऐसे लोगों से मिलवाया जो बहुत मददगार साबित हुए। इसका एक अन्य लाभ यह हुआ की मेरा स्वाति के साथ संपर्क और गहरा होता गया। इनमें से एक हैं डॉ. लोलार्क द्विवेदी, जिनकी मदद को बयान करने के लिए मेरे पास उपयुक्त शब्द भी नहीं हैं : किस तरह वे निस्वार्थ भाव से मुझे नागरी प्रचारिणी सभा के पुस्तकालय लेकर गए और किस तरह बारम्बार वो मुझे राजा शिवप्रसाद सितार-ए-हिन्द के मौजूदा उत्तराधिकारियों से मिलवाते रहे हैं। एक बार तो उन्होंने अपने से भी कहीं ज़्यादा उम्रदराज़ पंडितजी को भी मेरी मदद के लिए शामिल कर लिया जो हमारे साथ कई जगह गए और जिन्होंने खुद भी कोई 50 साल पहले इसी शख्सियत पर शोध किया था। जब भी मेरी यह किताब छपेगी, तो उसमें इन सभी का और मूलतः ये माध्यम खोलने के लिए स्वाति का महत्वपूर्ण योगदान होगा। यह सब ये भी एक बार फिर स्थापित करता है की शोध कार्य बाज़ार की वस्तु नहीं, वरन सामाजिक सरोकार की मद है क्योंकि वह सामाजिक सहयोग से पूरी की जाती है। यही स्वाति का मानना था और इसी बात को कहने के लिए उन्होंने मुझे ऊपर उल्लिखित सेमिनार में बुलाया था। जब वो मेरे ऐतिहासिक शोध में इतनी मददगार थीं, तो अपने विज्ञान के विद्यार्थियों पर कितना ध्यान देती होंगी?

अपने शोध कार्य के सन्दर्भ में एक बार 2015 में मैं अलाहबाद गया था। वहां से वक्त निकाल कर मैं स्वाति व अफलातून से मिलने बनारस में उनके घर आया। लोहिया और किशन पटनायक के बारे में लम्बी चर्चा हुई और स्वाति व अफलातून ने अलग-अलग आंदोलनों के कई यादें भी साझा कीं। इस चर्चा ने मुझे यह अहसास दिलाया की स्वाति, अफलातून तथा अन्य राज्यों में मेरे इस तरह के संपर्कों के द्वारा मिलने वाली प्रेरणा स्वरूप मुझे आज़ादी के बाद के सामाजिक आंदोलनों के इतिहास का एक पाठ्यक्रम तैयार करना चाहिए। जब भी मैं ऐसा करने में सफल होऊंगा, तो उसमें स्वाति का वैचारिक योगदान अमूल्य होगा।

इसी दरमियान एक और बहुत महत्वपूर्ण घटना घटी। इलाहबाद उच्च न्यायलय ने 2015 में यह आदेश दिया की सरकारी कर्मचारी, अधिकारी, जन-प्रतिनिधी व वे अन्य सभी लोग जो राज्य के खजाने से किसी भी किस्म की कोई भी सहायता पाते हैं, वे सभी अपने बच्चों को उत्तर प्रदेश सरकार के द्वारा संचालित प्राथमिक स्कूलों में ही पढ़ने भेजें। तभी इन स्कूलों का सुधार हो सकेगा। स्वाति को इस निर्णय में बहुत संभावनाएं दिखी। उन दिनों वह अखिल भारत शिक्षा अधिकार मंच के साथ जुडी तो थीं, लेकिन अभी उन्होंने सक्रीय रूप से काम करते हुए उत्तर प्रदेश में कोई समूह गठित नहीं किया था। जब मैंने प्रोफेसर अनिल सद्गोपाल से यह चर्चा की कि इस मुद्दे पर हमें उत्तर प्रदेश में आंदोलन खड़ा करना चाहिए तो हमारे सामने एक दिक्कत थी। उस समय तक अखिल भारत शिक्षा अधिकार मंच का उत्तर प्रदेश में कोइ ख़ास आधार नहीं था।

लेकिन हमारी पहल पर मंच ने इलाहाबाद में इस विषय पर एक राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित करने का फैसला कर लिया। अन्य संपर्कों के अलावा, अब हमने स्वाति से बड़ी भूमिका की उम्मीद लगाना चालू कर दिया। उनके साथियों जैसे प्रोफेसर महेश विक्रम, डॉक्टर नीता चौबे, व रमन जी ने अलाहबाद में हमारी जान-पहचान प्रोफेसर त्रिपाठी व अन्य कई साथियों से करवा दी जिन्होंने इस राष्ट्रीय सम्मेलन को आयोजित करवाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। यही नहीं, इनमें से तमाम लोग हमारे आंदोलन के स्थाई अंग बन गए।

एक तरफ तो अलाहबाद उच्च न्यायलय के इतने ज़बरदस्त फैसले के बावजूद उत्तर प्रदेश सरकार के कानों पर कोइ जूँ तक नहीं रेंगी और दूसरी तरफ बहुत तेज़ी से उसने 5000 हिंदी माध्यम स्कूलों को अंग्रेजी माध्यम में परिवर्तित करने की प्रक्रिया पूरी कर ली। स्वाति इसके खिलाफ आंदोलन में बहुत सक्रीय थीं। हालांकि यह अलग बात है कि हम इस आंदोलन को बहुत आगे नहीं बढ़ा सके। स्वाति भाषिक गैर - बराबरी के सख्त खिलाफ थीं। वे मानती थीं कि सभी भाषाएं हर प्रकार के ज्ञान सृजन और संचार का उपयुक्त ज़रिया बन सकती हैं। वे बहु-भाषी बुद्धिजीवी वर्ग की उस पीढ़ी का हिस्सा थीं जो अब लुप्त हो रही है। वे हिंदी, अंग्रेजी और बांग्ला भाषाएं जानती थीं। अमेरिका से विज्ञान की पढ़ाई करके आने के बाद भी भारतीय भाषाओं में उनका पूरा भरोसा था। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि अभी हाल ही में आंध्र प्रदेश उच्च न्यायलय के द्वारा मातृ भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाने के सन्दर्भ में दिए गए निर्णय ने हस्तक्षेप की संभावनाएं फिर से खोल दी हैं।

शायद भाषा के सवाल में इस दिलचस्पी के कारण ही, अपनी बीमारी के बावजूद, उन्होंने व्हाट्सअप पर यह लिख कर मुझे चौंका दिया की वे जुलाई के महीने में अखिल भारत शिक्षा अधिकार मंच के द्वारा आयोजित उस सम्मलेन में भाग लेंगी जहां भाषा और पाठ्यक्रम के जटिल मुद्दों पर चर्चा होगी। यह अलग बात है कि ना तो बीमारी की वजह से स्वाति हमारे बीच रहीं और ना ही महामारी की वजह से यह सम्मलेन ही आयोजित हो सका।

स्वाति व अन्य साथियों ने शिक्षा के सवाल पर एक कार्यशाला आयोजित की और उसमें मुझे प्रोफेसर अनिल सद्गोपाल के साथ बनारस आने का एक और मौका मिला। अन्य लोगों के अलावा इस बार मेरी ख़ास दोस्ती वाहिद अंसारी साहिब के साथ हो गयी।

जब 2018 में अखिल भारत शिक्षा अधिकार मंच ने मुझे अपने संगठन सचिव की ज़िम्मेदारी सौंपी तो प्रोफेसर अनिल सद्गोपाल और मैंने स्वाति से यह आग्रह किया की वे हमारे सचिव मंडल का हिस्सा बन जाएं। ऐसा आग्रह करने से पहले हम थोड़ा घबराए भी। कारण यह था की क्या अपनी उम्र व स्थान की वजह से वे सचिव मंडल की सदस्यता जैसे पद को स्वीकार करेंगी। लेकिन वे खुशी-खुशी मान गईं। दरअसल वे सुनील भाई के बाद इस आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करके शायद उनके साथ भी एक किस्म का जुड़ाव महसूस करना चाहती थी। दूसरे शब्दों में वे उनके काम

को आगे बढ़ाना चाहती थीं। उन्हें सचिव मंडल में शामिल करना शायद मेरी सबसे अच्छी खोज थी। उनका असामायिक निधन एक अपूरणीय क्षति है। वे हर काम को ज़िम्मेदारी के पूरे अहसास के साथ करती। यदि कोई चुनौती आ जाए तो तुरंत उस पर चर्चा करके आगे बढ़ जाती थीं।

सच तो यह है की उन्हें मुझसे तब शिकायत होती थी जब मैं उन्हें कोई काम नहीं बता पाता था। जब 2019 में हुंकार रैली की तैयारी के लिए वे दिल्ली पहुँची और मैं उन्हें तुरंत ही कोई काम नहीं सौंप सका तो वे नाराज़ हुईं। पहले मुझे बुरा लगा।

लेकिन फिर मुझे समझ में आ गया कि यह उनकी कर्मठता का प्रतीक है। वैसे भी हुंकार रैली की तैयारी में उन्होंने अग्रिम भूमिका अदा की थी। उन्होंने पूर्वी उत्तर प्रदेश में अ.भा.शि.अ.मं. के सांगठनिक विस्तार के लिए बैठक भी आयोजित की।

स्वाति ने मुझे बताया था की किस प्रकार समाजवादी आंदोलन के कई साथी हमारे इस फैसले से खुश नहीं थे की हमने हुंकार रैली की तारीख 3 फेब्रुअरी से बदलकर 18 फेब्रुअरी 2019 कर दी थी। लेकिन उन्होंने ही मुझे यह बताकर हर्षित कर दिया था की समाजवादी जन परिषद् की राष्ट्रीय कार्यकारिणी में मेरे द्वारा दिए गए स्पष्टीकरण के बाद यह साथी पूरे जोश के साथ हुंकार रैली के प्रचार के काम में लग गए थे। वे सजप और अ.भा.शि.अ.मं. के बीच एक महत्वपूर्ण संपर्क सूत्र थीं। अब किसी अन्य साथी को यह भूमिका निभानी होगी। उससे अपेक्षित होगा की वह सुनील भाई और स्वाति के काम को आगे बढ़ाए। कैबिनेट के द्वारा एक खतरनाक राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के मसौदे को मंज़ूरी मिलने के बाद यह और भी ज़रूरी हो गया है यदि इस के विरुद्ध आंदोलन खड़ा करना है तो।

हां यह बताना भी उचित होगा कि अ.भा.शि.अ. मं. में सुनील भाई व्यक्तिगगत तौर पर भी लोगों को जोड़ना चाहते थे। उनके जाने के बाद जब अ.भा.शि.अ.मं. ने 'अभियान के साथियों' (Campaign Associates) को जोड़ने की योजना पर काम शुरू किया तो एक डर यह था कि कहीं सदस्य संगठन इसे गलत नज़र से न देखें। स्वाति की पहल पर सजप के कुछ साथियों ने अपने आप को अ.भा.शि.अ. मं. के अभियान के साथी के रूप में पंजीकृत करवाया और हमारे डर से हमें निजात दिलवाई।

आखिर में एक चुटकी लेकर बात को ख़त्म करना शायद स्वाति की खुशमिजाज़ शख्सियत के मुताबिक़ होगा। एक बार वे हमारे घर आईं। मेरी पत्नी ने यह सोचकर कढ़ी चावल बनाए कि वे तो उत्तर प्रदेश से हैं। लेकिन स्वाति ने हमें आश्चर्य चकित कर दिया।

उन्होंने कहा की उन्हें कढ़ी पसंद ही नहीं हैं। तब मुझे उनके बंगाली होने की याद आई।

(इतिहास विभाग,सामाजिक विज्ञान संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय में कार्यरत हैं तथा अ.भा.शि.अ. मं. के संगठन सचिव हैं।)

उन जैसी संवेदनशील दृष्टि दुर्लभ

सुरजित एस.थोकचोम

मैं लिखने बैठा तो मेरे दिमाग में कॉमरेड स्वाति का हंसमुख चेहरा और हमेशा दिलासा देने वाली उनकी आवाज गूंजने लगी। वे भले सदेह मौजूद न हों, लेकिन वे हमारे दिलों में जिंदा हैं। उन्हें गंवा बैठने का शुरुआती दुख-दर्द अब धीरे-धीरे इस पक्की उम्मीद और संकल्प में बदलता जा रहा है कि उनके मिशन और नजरिए को आगे ले जाना है।

मैं कई साल पहले अभाशिअमं के एक कार्यक्रम में पहली बार कॉमरेड स्वाति से मिला और कुछ साल के दौरान हम करीबी दोस्त बन गए। दरअसल प्री-शिक्षा यात्रा की बैठक के दौरान मेरे वहां से निकलने के पहले हल्की-सी विनम्र बहस उनसे हुई थी। मुझे महसूस हुआ कि वे कुछ अलग नजरिए वाली प्रतिबद्ध नेता हैं। उस दिन मुझे यह मालूम नहीं था कि वे अनोखी अकादमिक शख्सियत भी हैं। बाद में हम कई बार मिले और हर मुलाकात हमें नजदीक लाती गई। हम अनेक मुद्दों पर चर्चा किया करते और अभाशिअमं के संगठनात्मक ढांचे और वैचारिक पहलुओं की समीक्षा किया करते थे। कॉमरेड स्वाति मातृभाषा तथा बहुभाषी समाज के संदर्भ में भाषा के मुद्दे, समुदायों में वैवाहिक संबंधों, विवाह

संस्था, और नए भारत के निर्माण के लिए एक वैकल्पिक मोर्चे की जरूरत पर गहरी समझ विकसित करने में प्रेरणास्रोत रही हैं।

मेरा जन्म '60 के दशक में मणिपुर के सामाजिक अलगाव के माहौल में हुआ। मेरे जन्म के पहले ही नगा आंदोलन चरम पर था और मेरे जन्म के साल भर बाद स्वायत्त मणिपुर के लिए सशस्त्र आंदोलन शुरू हो चुका था। मेरे दादा और दादी ने मुझे यह नहीं बताया कि मैं जिस देश का हूं, उसका नाम भारत है। अलबत्ता, मैं जन्म से भारतीय नागरिक हूं। मैं प्राथमिक स्कूल में था तो लोगों को इंकलाब जिंदाबाद के नारे लगाते देखता था। स्कूल में छात्राओं की संख्या न के बराबर थी। सामाजिक और राजनैतिक आंदोलनों में छात्रों की शिरकत आम बात थी। कई तरह के आंदोलन थे, मसलन, अलग राज्य का आंदोलन, भाषा आंदोलन, भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन, खेल आंदोलन वगैरह। इन आंदोलनों के साथ महिला आंदोलन भी था। लेकिन कोई आंदोलन पुरुष प्रधानता को चुनौती नहीं देता था। हालांकि मैंने कई तरह के आंदोलन देखे लेकिन मैं समता को कभी सही अर्थों में आत्मसात नहीं कर पाया था। मैंने कभी इस बारे में सोचा नहीं, ऐसा नहीं है। मैं बचपन में अपने पैतृक स्थान पर कई क्रांतिकारी महिला नेताओं से वाकिफ हुआ। बाद में मैं शिक्षा आंदोलन से जुड़ा तो मेरी मुलाकात कई प्रगतिशील रुझान वाली महिला नेताओं से हुई। अलबत्ता कई प्रतिष्ठित महिला नेताओं के साथ मैंने काम किया लेकिन मेरे दिमाग में स्त्री-समता के बारे में कहीं कुछ खुलना बाकी रह गया था। कॉमरेड स्वाति ने मेरे दिमाग का वह कोना खोलने और समता की समझ को नए सिरे से विकसित करने में काफी मदद की। कॉमरेड स्वाति, मैं हमेशा आपका कर्जदार रहूंगा!

कॉमरेड स्वाति की विविध विषयों में पकड़ और अपने उद्देश्य के प्रति गहरी राजनैतिक प्रतिबद्धता अपने सहमना लोगों में बेजोड़ थी। स्वाति इस विचार की गहरी पैरोकार थीं कि भावनाएं कुल जमा अनुभवों का ही सार होती हैं, कि लोक ज्ञान भावनाओं और अनूभूति से जुड़ा होता है, और लोगों का अचानक गुस्से में फट पड़ना लंबे समय से संचित वंचना और उपेक्षा का ही शायद सार-संक्षेप होता है, जैसा अक्सर महिला कार्यकर्ताओं में देखा जाता है। इसलिए नाराज होने का अधिकार एक बुनियादी अधिकार है। इससे कॉमरेड स्वाति और मैं दोनों ही सहमत थे।

नगालैंड में वे एक भाषा सेमिनार में पहुंची थीं। वहीं शिलांग में हमारी मुलाकात हुई। भाषा के मुद्दे पर हमारी विस्तार से चर्चा हुई। मैंने पाया कि वे सही मायने में बहुभाषी हैं, सिर्फ बांग्ला सहित कई भाषाओं में बोलने-लिखने की क्षमता के कारण ही नहीं, बल्कि मजदूर वर्ग और महिलाओं की भाषाओं (बोलियां ही नहीं) के प्रति उनमें गहरा लगाव था। जैसे समाज में वर्ग-विभाजन है, भाषाओं का भी वर्ग विभाजन है। हमने चर्चा के दौरान अध्यापन-शैली की रूपरेखा तैयार की, जिसमें हर विषय की पढ़ाई को भाषा सिखना ही माना जाएगा। अब, मैं बुनियादी आपसी संवाद के तरीकों से संज्ञानात्मक विकसित भाषा में महारत हासिल करने की प्रक्रिया के तहत बहु विषयक ज्ञान की पढ़ाई के संबंध में प्रयोग कर रहा हूं तो मेरी बात सुनने और एक वैकल्पिक अध्यापन कला का ढांचा तैयार करने में मदद के लिए उनका आभारी हूं, जिसमें हम समाज को भाषा की प्राकृतिक वास स्थान मानकर चलते हैं। आज, अगर वे जिंदा होतीं तो मैं बड़े गर्व से उन्हें अपनी मैदानी प्रयोगशाला को देखने के लिए बुलाता, ताकि वे देख पाएं कि उन्होंने जो रूपरेखा तैयार करने में मेरी मदद की थी, वह विचार कितना कारगर हो पाया है।

मेरे प्रति उनका रुझान कभी अकेले का नहीं था। वे अपने पति, बच्चों और अपनी पार्टी की प्रतिनिधि थीं। उनकी शख्सियत में एक सामूहिकता थी, जो आम तौर पर अपने पुरुष राजनैतिक साथियों में नहीं देख पाता। स्वाति बेहद दिलचस्प महिला थीं। उनका नजरिया सीखने को प्रेरित करता था। ज्यादातर लोग कोई ढांचा देखते हैं, तो उसके आकार-प्रकार, उसकी कारीगरी और कई वर्षों में अंतराल की उसकी फीकी पड़ती आभा पर गौर करते हैं। लेकिन स्वाति की दृष्टि कुछ अलग थी, वे उसके पार जाती थीं, जो आंखों से दिखता था, वे उस ढांचे के निर्माण की प्रक्रिया, मजदूरों के श्रम और पीड़ा के अलावा यह भी जानने की कोशिश करती थीं कि ढांचे के निर्माण के दरमियान कैसी सामाजिक, राजनैतिक और मानसिक स्थितियां रही होंगी। उनकी दृष्टि संवेदनशील, मानवीय और सबसे बढक़र क्रांति की मशाल जलाने की क्षमता रखती थी।

कॉमरेड स्वाति से सबसे महत्वपूर्ण सबक यह सीखा कि निजी और सार्वजनिक जीवन किसी तरह का फर्क या विरोधाभास नहीं होना चाहिए। उनके लिए

समता और न्याय की लड़ाई सिर्फ जीवन का एक उद्देश्य ही नहीं, बल्कि वही पूरी जिंदगी था, निजी और सार्वजनिक दोनों। उनके साथ लंबे समय तक सफर में हमराह रहे लोग कितने खुशनसीब होंगे!

स्वाति जी बेहद मानवीय, संवेदनशील थीं और अपने जीवन की तमाम उलझनों औा तकलीफों के बावजूद वे लगातार मेरी सेहत के बारे में पूछा करती थीं। जब वे बीमार थीं तो मैं भी उनकी लगातार खबर पूछने की सोचता ही रहा मगर कभी-कभार ह्वाट्सऐप पर मैसेज के अलावा कुछ नहीं कर पाया। यह सोचकर मुझे काफी दुख होता है, मैं दिल से कितना चाहता था कि वे जल्दी ठीक हो जाएं। उनकी असमय विदाई बहुत खल रही है।

वे मेरा काफी ख्याल रखती थीं। हमेशा मेरी बात सुनतीं और हमेशा मदद को तैयार रहतीं। कॉमरेड स्वाति के मन में पूर्वोत्तर के लोगों के प्रति खास लगाव था और हम हमेशा विकल्प की बातें किया करते थे। उन्होंने लोहिया की समाजवादी क्रांति के विचारों से मेरा परिचय कराया, जो हमेशा हमें राह दिखाते रहेंगे। लेकिन अफसोस! वह सफर अधूरा रह गया। मेरे लिए उनकी याद जिंदगी की एक थाती की तरह बनी रहेगी।

अब वे सदेह भले मौजूद नहीं हैं लेकिन बतौर राजनैतिक कार्यकर्ता, शिक्षक, शिक्षाविद, दोस्त के नाते वे हमेशा हमारे दिल की गहराइयों में मौजूद रहेंगी। वे क्रांति की जीती-जागती मिसाल थीं।

(सदस्य, सचिवालय, अभाशिअमं)

अनुवादक- हरिमोहन मिश्र

यादों के झरोखे से...

डॉ मुनिज़ा रफ़ीक़ ख़ान

तकरीबन तीस साल पहले मै डॉ स्वाति (जिन्हें मैं स्वाति दी कहती हूँ) से पहली बार बनारस में आयोजित एक सेमिनार मे मिली। महिला मुद्दो पर स्वाति दी ने अपनी बात रखी, जो मुझे पसंद आई। मैंने उस सेमिनार मे मुस्लिम महिलाओ से संबन्धित सवाल पूछा था, जिसका जवाब उन्होने दिया और मुझे संतुष्ट किया। सेमिनार खत्म होने के बाद स्वाति दी ने बुलाया, और मेरा परिचय लिया तथा लड़कियो की समस्याओ पर बातचीत की। मिलकर खुशी के साथ साथ उत्साहवर्धक भी हुआ। वो बहुत आत्मीयता से मिली। अपना परिचय दिया कि वो बीएचयू मे भौतिक शास्त्र पढ़ाती है और एक सामाजिक कार्यकर्ता भी है , अपना पता दिया और कहा कि सक्रिय रहो और कभी भी मिल सकती हो, हम लोग मिलकर कुछ करेगे। मेरे ऊपर उनका एक अच्छा प्रभाव पड़ा। मेरे घर का माहौल तो महिलाओ के प्रति उदार था ही, सामाजिक जीवन मे भी स्वाति दी जैसे लोगो से मिलने पर सोच और पक्की हो गई। छात्र जीवन मे ही मैंने भी सोच लिया कि महिलाओ की स्थिति मे सुधार के लिए कुछ करना चाहिए।

नारी एकता

सन 1990 के आस पास मे स्वाति दी और प्रो कमरजहां (जिनहे हम क़मर आपा कहते है) ने बनारस मे महिलाओ के बीच काम करने के लिए नारी एकता नामक संस्था का गठन किया। क़मर आपा अध्यक्षा, स्वाति दी सचिव और मुझे कोषाध्यक्ष बनाया गया। नारी एकता ने बीएचयू परिसर व परिसर के बाहर महिलाओ व छात्राओ से संबन्धित मसलो को हल करने का काम किया, और जल्द ही लोग, विशेष कर बीएचयू की छात्राए इससे परिचित हो गई। एक मसला जो इस संस्था के लिए यादगार बन गया वो मुझे आज भी याद है। बीएचयू परिसर मे शाम के वक़्त किसी छात्रा से एक बुर्के वाली लड़की ने मदद मागी। लड़की अपना घर छोड़ कर भागी हुयी थी और एक रात के लिए कही रुकना चाहती थी। छात्रा ने उसे स्वाति दी के घर पहुचा दिया जो बीएचयू परिसर मे ही विश्व विद्यालय द्वारा आवंटित आवास मे रहती थी, और उस लड़की से कहा कि यही तुम्हारी मदद कर सकती है। स्वाति दी ने उस लड़की को अंदर बुलाया। लड़की कि उम्र लगभग 15 साल थी और मऊ ज़िले की रहने वाली थी। मुस्लिम परिवार की ये लड़की अपने ही रिश्तेदार द्वारा यौन उत्पीड़न के कारण घर से भाग आई थी। लड़की की किस्मत अच्छी थी जो स्वाति दी के यहाँ पहुच गई। नारी एकता संस्था ने इस मसले को हल करने की सोची। सबसे पहले हमलोगो ने लड़की से ये लिखवाया की वो खुद से अपना घर छोड़ कर आई है और यहा रह रही है। दूसरे दिन स्वाति दी, क़मर आपा और मै उस

लड़की को लेकर बनारस के एसएसपी से मिले और पूरी बात बताई। हमलोगो ने कहा कि इसे सरकार द्वारा चलाये जा रहे नारी संरक्षक केंद्र मे हमलोग नहीं रखना चाहते है, कुछ रोज़ अपने यहा रखेगे और फिर मऊ जाकर समस्या को समझ कर परिवार वालों को सुपुर्द करेगे। एसएसपी ने मामले को समझा और नारी एकता से जुड़े हमलोगों को कुछ दिनों के लिए लड़की को अपने घर रखने की छूट दे दी। स्वाति दी ने इस केस को हल करने की ज़िम्मेदारी ली और हमलोगो ने पूरी मदद की। गरीब घर की इस कमसिन लड़की ने अपने चाचा द्वारा हो रहे यौन उत्पीड़न की जो पूरी कहानी बताई वो सुनने के बाद हमलोगों ने मऊ जाकर उसके परिवार वालों से मिलने की सोचा। चूकि हम सब नौकरी करते थे इसलिए जब सभी की छुट्टी हो तभी जाया जा सकता था। इस कारण वक्त कुछ और गुज़र गया। इस बीच स्वाति दी और क़मर आपा को बनारस से बाहर मीटिंग के लिए जाना पड़ गया और वो लड़की हमारे यहा कुछ दिन रहने के लिए आ गई। अपने घर पर एक भागी हुई लड़की को रखने के मुद्दे पर मेरी अम्मा ने सवाल खड़ा कर दिया कि तुम और तुम्हारी दोस्तो को पुलिस पकड़ेगी तब तुम लोगो को समझ मे आयगा। कहने लगी 'क्या ज़रूरत है इसे यहा रखने की , पता नहीं क्या करके घर से भागी है , चोर हो सकती है' वगैरह वगैरह। ऐसे समय स्वाति दी ने मेरी अम्मा से बात किया और समझाया। स्वाति दी और कमर आपा के लौटने के पश्चात उस लड़की को लेकर हमलोग मऊ गए, उसके परिवार वालों से मिले और माँ से बात करके सब कुछ समझाया। मिलने पर ये महसूस हुआ की माँ को पहले ही सब पता था लेकिन मजबूर थी क्योंकि लड़की के पिता नहीं थे और चाचा घर चलाने मे मदद करते थे। यही चाचा इस लड़की से गलत संबंध रखते थे। माँ ने आश्वासन दिया कि अब कुछ नहीं होगा, और जल्द ही कोई लड़का देख कर उसकी शादी कर देगी। चाचा से भी हमलोग मिले और कहा कि अगर कुछ हुआ तो पुलिस मे एफ़आईआर कर देगे। इस बीच हमलोग बराबर लड़की का हाल लेते रहे जबतक की उसकी शादी नहीं हो गई। एक बच्ची, जिसकी ज़िंदगी बर्बाद हो सकती थी, सिर्फ स्वाति दी द्वारा सूझ बूझ से लिए गए फैसले से बच पायी।

सद्भाव अभियान

1989 से 1992 तक देश मे बाबरी मस्जिद को लेकर सांप्रदायिकता का माहौल काफी गरम था और जगह जगह सांप्रदायिक दंगे हो रहे थे। इस दौरान बनारस शहर में सात बार दंगे हुए और सात बार कर्फ्यू लगा। लोहता और मदनपुरा क्षेत्र में दंगों के दौरान कई जानें गईं। इस माहौल ने अंसारी बुनकर और हिन्दू साड़ी गद्दीदारों के बीच भी तनाव बढ़ा दिया। बनारस मे हर साल दंगे होना जैसे निश्चित हो गया था। सांप्रदायिक ताकते स्थानीय लोगो मे हिन्दू मुस्लिम एकता को ख़त्म करने की साजिश कर रही थी। 1989 से लेकर 1992 मे बाबरी मस्जिद की शहादत तक हर साल बनारस मे जाड़े के दिनो मे दंगे होना और करफ़ू लगना जैसे आम बात हो गई थे। आखिरकार 6 दिसंबर, 1992 को बाबरी मस्जिद गिरा दी गई। ऐसे समय बनारस मे शांति व्यवस्था बनाय रखने के लिए हमलोगो ने सद्भाव अभियान नाम से शहर मे कई कार्यक्रम चलाए। सद्भाव अभियान की संयोजिका मै थी, और मैंने देखा की सद्भाव अभियान द्वारा चलाय जा रहे कार्यक्रमों मे स्वाति दी की महत्वपूर्ण भूमिका रहती थी। पर्चा बनाने का काम तो जैसे उनके नाम के साथ जुड़ गया था। सभी संप्रदाय के लोगो को पूरा भरोसा था कि डॉ स्वाति जो लिखेगी वो सही होगा। सांप्रदायिक तनाव के माहौल मे मोहल्ला मीटिंग करनी हो, शांति मार्च निकालना हो, रैली करनी हो, दंगा ग्रस्त इलाक़ो का दौरा करना हो , राहत सामाग्री बाटनी हो, धरना देना हो, उपवास रखना हो या फिर सांप्रदायिक राजनीतिक पार्टियो के खिलाफ आवाज़ उठानी हो, वो कभी पीछे नहीं हटी। 1992 मे बाबरी मस्जिद के गिराय जाने के बाद लोहता मे हिन्दू मुस्लिम दंगे मे काफी लोग मारे गए और डॉ अनीस अंसारी की मौत भी इसी दंगे मे हुई। हमलोगो ने दंगे मे पीड़ित लोगो को राहत पहुचाने का काम किया। चंदा इकट्ठा करने से लेकर राहत बाटने तक स्वाति दी सक्रिय भूमिका मे रहती थी। एक विद्वान प्रोफेसर के इस तरह सक्रिय रहने पर दूसरों को बहुत बल व उत्साह मिलता था।

साझा संस्कृति मंच व स्त्री सरोकारों का मंच (महिला समन्वय)

बनारस मे आज भी सक्रिय साझा संस्कृति मंच की स्थापित सदस्या डॉ स्वाति स्त्री सरोकारों का मंच (महिला समन्वय) की संयोजिका भी थी। महिला समन्वय फरवरी सन 2000 मे बनारस शहर मे हुये वॉटर फिल्म की शूटिंग सांप्रदायिक ताकतों द्वारा हिंसात्मक तरीक़े से रोक

दिये जाने पर, खुल कर सामने आई। फिल्म की निदेशिका दीपा मेहता व मुख्य कलाकारों शबाना आज़मी व नन्दिता दास के साथ समर्थन और रैली मे इसलिय भाग लिया, क्योंकि हम अभिव्यक्ति की आज़ादी पर विश्वास रखने वाले लोग थे। स्वाति दी के नेतृत्व मे हमारी मांग शासन से थी कि वो अपनी सुरक्षा मे फिल्म की शूटिंग पूरी करवाए और तोडफोड़ करने वाले सांप्रदायिक लोगो को गिरफ्तार करके कानूनी कारवाई करे।

सान 2000 में ही संवासिनी कांड का पर्दाफाश करने मे भी स्वाति दी की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। फ़ेक्ट्स फ़ाइंडिंग से लेकर धरना, प्रदर्शन व कोर्ट तक की लड़ाई मे वो विश्वविद्यालय से छुट्टी लेकर आती थी। बनारस मे 2000-01 में संवासनी कांड हुआ था। शिवपुर स्थित नारी संरक्षण गृह की संवासिनियों से अनैतिक देह व्यापार का धंधा कराये जाने की एसीएम चतुर्थ की रिपोर्ट पर 24 मई, 2000 को वहां की अधीक्षिका श्यामा सिंह समेत अन्य लोगों के खिलाफ एफआइआर दर्ज कराई गई थी। तत्कालीन एएसपी डॉ जी के गोस्वामी ने अलग अलग चरणों मे विवेचना पूरी करते हुए 14 आरोपितों के खिलाफ अनैतिक देह अधिनियम की धारा 3, 4, 5, 6, 8, 9 तथा 15 के तहत अदालत में आरोपपत्र दाखिल किया था। इनमें कुछ नामचीन लोगों को भी आरोपित किया गया था। बाद में उक्त बहुचर्चित कांड की पुलिसिया जांच पर अंगुलियां उठने पर प्रदेश सरकार ने इसकी जांच सीबीआइ से कराने का आदेश दिया।

सीबीआइ ने 4 अप्रैल, 2001 को दिल्ली स्पेशल पोलिस इस्टेबलिशमेंट एक्ट की धारा 6 के तहत एफआइआर दर्ज कर अपनी विवेचना शुरू की थी। लगभग ढाई साल तक विवेचना करने के बाद सीबीआइ ने 12 अगस्त, 2003 को अदालत में अंतिम आख्या प्रेषित की। उस दौरान सीबीआई ने लगभग चार सौ से ज्यादा गवाहों का बयान दर्ज किया। हाईकोर्ट से अनुमति लेकर उन संवासिनियों का कलम बंद बयान भी दर्ज किया, जिन्होंने पूर्व में पुलिस को भी कलमबंद बयान दिया था। पुलिस ने जहां आरोपितों को दोषी ठहराया वहीं सीबीआइ ने सभी को क्लीनचिट दे दी थी। हालाकि मुकदमा आज भी क़ायम है।

संघर्ष की साथी : हमारी ताक़त

लोकनायक जयप्रकाश नारायण द्वारा 1960 में स्थापित दी गंधियान इंस्टीट्यूट ऑफ स्टडीस (गांधी विद्या संस्थान) संस्था पर दुर्भाग्य से 1990-91 से कुछ ऐसी आवांछनीय फासीवादी ताकतों की नज़र पड़ गई, जो संस्थान मे चल रहे गांधी शोध और समाजशास्त्रीय शोध को रोकना चाहते थे और साथ ही संस्थान की स्थायी एवं अस्थायी संपत्तियो पर कब्जा करना चाहते थे। संस्थान को बचाने के लिए लंबा संघर्ष संस्थान के कुलसचिव के नाते सीधे मुझे करना पड़ा या यू कहे की आज भी कर रही हूँ। संस्थान को गलत ताकतों से बचाने हेतु समय समय पर लोगो से सहयोग मिलता ही रहा है। लगभग 20 वर्षों के इस संघर्ष मे बहुत उतार चढ़ाव आए। समय समय पर स्वाति दी से चर्चा होती थी और उनके सुझावो से हिम्मत बंधती थी। 2008 मे 6 साल तीन महीने के लिए जब मेरे घर की बिजली काट दी गई, धमकिया मिलती थी और कई एफ आई आर दर्ज करी गई तो हौसला और हिम्मत देने वालों मे स्वाति दी भी थी। मुझे याद है कि एकबार उन्होने कहा था कि 'ये फासीवादी ताकते तुम्हें परिसर से हटाना चाहती है और इनका मुक़ाबला करना आसान नहीं है , पर तुम अगर हट गई तो इनकी जीत होगी'। अक्सर जब वो घर आती थी और मेरी अम्मा से मिलती थी तो अम्मा मेरी शिकायत करते हुये कहती थी कि ' इसे समझाओ कि ये संस्थान की लड़ाई और मुकदमा छोड़ दे और समझौता कर ले''। इस पर स्वाति दी उनसे मेरी बड़ी तारीफ करती थी और कहती थी कि 'आप को अपनी बेटी पर नाज़ होना चाहिए कि वो बहादुरी और मजबूती से इन गलत ताकतों का मुक़ाबला कर रही है। अपने पिता को पड़ी है, हमलोग उसके साथ है पर एक माँ के नाते आपका फ़िकरमंद होना भी लाज़िम है'। अम्मा, जो स्वाति दी को बड़ा सम्मान देती थी, फिर कुछ नहीं कहती थी। मेरे घर वो जब भी आती थी मुझसे कम अम्मा से ज़्यादा बाते करती थी, और अम्मा को ये बहुत अच्छा लगता था।

स्वाति दि की समझ जितनी महिला मुद्दो पर थी उतनी ही सांप्रदायिकता और जातिगत सवालो पर थी। अपनी इस समझ के साथ वो कभी भी और किसी से भी सम्झौता नहीं करती थी। वो एक निष्पक्ष ,निडर, साहसी और सक्रिय राजनीतिक महिला तो थी ही, साथ ही एक बेहतर इंसान भी थी। मै उन्हे भूल नहीं पाऊँगी।

कुलसचिव, गंधियन इंस्टीट्यूट ऑफ स्टडीस, राजघाट, वाराणसी

स्वाति दी को याद करते हुए

लाल्टू

स्वाति मुझसे बड़ी थीं, पर मैं उन्हें नाम से ही बुलाता था। उनसे पहली मुलाकात 2009 में हुई। वे ट्रिपल-आई-टी-हैदराबाद में छः महीने के लिए अतिथि प्रोफेसर बन कर आई थीं। जुलाई में जब वे पहुँचीं तो मैं रॉयल सोसायटी के अनुदान से शोध के काम में ब्रिस्टल यूनिवर्सिटी गया हुआ था। लौटने पर उनसे परिचय हुआ। उनके बारे में मुझे पता नहीं था। चूँकि बहुत सारे हिंदुस्तानी वैज्ञानिक विज्ञान से इतर हिन्दी में लिखने और राजनीति के विषयों में मेरी रुचि जानकर प्रशंसा करते हुए भी नाक-भौं सिकोड़ते हैं, मैं आम तौर पर किसी नए वैज्ञानिक से मिलने पर सतर्क सा रहता हूँ। हो सकता है कि उनको भी ऐसी चिंता रही हो। इसलिए शुरु में हमारी बातचीत औपचारिक रही। हमारे संस्थान में वैज्ञानिक शोध का केंद्र नया खुला था। मेरे अलावा दो और स्थाई अध्यापक थे। नए किस्म के शैक्षणिक प्रोग्राम के प्रयोग चल रहे थे। अब मुझे याद नहीं है कि स्वाति ने कोई कोर्स पढ़ाया था या नहीं, पर इतना याद है कि हमारे यहाँ आने के कुछ समय पहले वे जे एन यू में स्कूल ऑफ लाइफ साइंसेस में काम कर चुकी थीं और वहाँ बायो-इन्फॉर्मेटिक्स पर उन्होंने कुछ नए शोध किए थे। उसी दिशा में आगे बढ़ते हुए हमारे केंद्र में वरिष्ठ अध्यापक अभिजित मित्रा के साथ मिलकर कुछ काम करने का उनका इरादा था।

धीरे-धीरे हम आपस में खुलकर बातें करने लगे, तो एक दूसरे की रुचियों और चिंताओं का पता चला। यह जानकर कि वे समाजवादी जन परिषद में हैं, मुझे खुशी हुई, क्योंकि मैं योगेंद्र यादव को अच्छी तरह जानता था। पंजाब विश्वविद्यालय में मेरे आने के दो साल बाद योगेंद्र ने पढ़ाना शुरू किया था और वहीं पी एच डी भी कर रहे थे। मैं भारत जन विज्ञान जत्था की चंडीगढ़ इकाई का संयोजक था, और योगेंद्र ने हमारी मदद की थी। इसके अलावा भी कई बार हमलोगों ने साथ काम किया था। सुनील से मैं शायद दो बार मिला था, पर उनसे अच्छा परिचय न था। बहरहाल स्वाति और मैं अक्सर साथ बैठकर समकालीन विज्ञान और समाज पर चर्चा करते। एक बार लाइब्रेरी के सामने चलते हुए उनके पैर में मोच आ गई। हम सब लोग चिंतित थे कि कहीं कोई फ्रैक्चर न हो गया हो, पर मामूली चोट थी। शायद तभी उनके जीवन-साथी अफलातून कुछ दिनों के लिए आए। यह जानकर कि अफलातून नारायण देसाई के बेटे हैं, मैंने बतलाया कि 1985 में वतन लौटते हुए मैंने नारायणजी को ख़त लिखा था और उन्होंने अपने जवाब में मुझे सामाजिक कामों की चुनौतियों पर सतर्क किया था। जैसे-जैसे हम बातें साझा करते चले, हमारी दोस्ती बढ़ी और मैं उन दोनों के स्नेह से प्रभावित हुआ। मैने अफलातून से पानी की समस्या पर व्याख्यान करवाया और हिन्दी में उनके भाषण को मैंने मौके पर गैर-हिन्दी-भाषियों के लिए अंग्रेज़ी में अनुवाद किया।

उन दिनों हमारे कैंपस में अध्यापकों के लिए मकान बने नहीं थे। मैं कैंपस से बाहर रहता था। स्वाति कैंपस में ही गेस्ट हाउस में रहती थीं। मैं अकेला था, इसलिए अक्सर होस्टल में ही डिनर करता था। सोमवार से शनिवार तक अध्यापकों के लिए लंच की व्यवस्था थी और हम साथ खाते थे। एक बार स्वाति और अफलातून मेरे घर आए और हमने घर पर ही साथ भोजन किया और देर तक बातचीत की। तरह-तरह की गतिविधियों पर हमने नोट्स साझा किए। भाषा की राजनीति, मुल्क में बढ़ता फासीवाद, वामपंथियों में बिखराव आदि कई विषयों पर देर तक हमलोगों ने चर्चा की। उसी साल हैदराबाद में ओस्मानिया विश्वविद्यालय में एक सभा में अखिल भारत शिक्षा अधिकार मंच की स्थापना हुई थी। तब विदेश में होने की वजह से इस बारे में मुझे जानकारी नहीं थी। समाजवादी जन परिषद शुरू से ही मंच का सदस्य संगठन रहा है। बाद में जब मैं मंच से जुड़ा तो स्वाति से दिल्ली, नागपुर जैसे शहरों में मंच की सभाओं में मुलाकात होती। तब मैंने उनके राजनैतिक कार्यकर्ता और प्रखर वक्ता के व्यक्तित्व को देखा-जाना। 2010 के आस-पास दिल्ली में किताब मेले में उनकी बेटी प्योली से भी मुलाकात हुई और इस तरह उनके साथ मेरा पारिवारिक सा रिश्ता हो गया था।

जनवरी 2018 में मैं आई-आई-टी-बी-एच-यू के फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम में व्याख्यान देने गया तो फिर उनसे मुलाकात हुई। वे और अफलातून मुझे डिनर के लिए कहीं ले गए और एक ठिठुरती शाम उन्हीं के स्नेह के ताप की याद बन कर रह गई। मिलते रहने के अलावा फ़ोन पर अक्सर हमने बातें कीं। ज्यादातर शिक्षा अधिकार मंच और मंच की पत्रिका 'तालीम की लड़ाई' के काम पर ही बात होती थी। मैंने हमेशा उनको साथी की तरह जाना और दूर रहते हुए भी उनसे भरपूर अपनापन रहा। अफलातून ने बतलाया था कि हमारी बांग्ला में बातचीत से वे बहुत खुश रहतीं।

स्वाति की रूहानी मौजूदगी हमारे साथ है और हमेशा रहेगी। यादों के साथ हम हँसते हुए आपस में बात करते रहेंगे। संकट के हालात में यही हमारी ताकत है कि उन जैसे साथियों का प्यार हमें मिला।

सदस्य, सचिव मंडल, अभाशिअमं

अलविदा स्वातिजी!

सहजता और अपनापन कभी नहीं भूला जाएगा!

- सुभाष गाताडे

कोविड काल में अपने जिन आत्मीयों - जिन्हें कोविड का संक्रमण नहीं हुआ था और जिन्हें अपनी बीमारी के लिए वक्त.पर इलाज नहीं मिल सका - हम सभी ने खोया, उनमें स्वाति सिन्हा शायद अग्रणी थीं, जिन्होंने 2 मई को अंतिम सांस ली।

यह सही है कि वह मल्टिपल माईलोमा नामक कैंसर की बीमारी से ग्रस्त थी और एक साल से उनका इलाज चल रहा था, लेकिन अफलातून के मुताबिक ऐसी स्थिति नहीं थी कि उनकी बीमारी प्राणघातक स्थिति में पहुंची थी। अगर सुंदरलाल अस्पताल का आई सी यू वॉर्ड बाकी मरीजों के लिए भी उस वक्त.खुला होता तो उस स्थिति में भी उन्हें बचाया जा सकता था और कुछ अरसा और वह हम सभी के बीच रहतीं, भले ही हम सभी से मिल नहीं पाती अलबत्ता फेसबुक के जरिये उनके सूरतेहाल की जो तस्वीरें हम तक पहुंचती थी, उससे उनके होने का पता चलता रहता।

और यह होना महज होना नहीं था।

मैं समझता हूं कि आज का यह जो एक किस्म का अंधेरे का दौर है, उस समय अपने किसी समानधर्मा साथी का कहीं सुदूर 'होना' भी कितने मायने रखता है।

बहरहाल, अब वह हमारी यादों का हिस्सा बन गयी हैं।

उनके तमाम आत्मीय, उनके तमाम सहमना लोगों के पुराने हो रहे अलबमों में से वह आज भी झांकती देखी जा सकती हैं।

उनसे मेरी पहली मुलाकात याद नहीं है। इतना जरूर कह सकता हूं कि विगत साढ़े तीन दशक से मैं उन्हें जानता था।

80 के दशक के मध्य में -जब एक छोटे अन्तराल तक आदिवासी इलाकों में सक्रिय रहने के बाद - जब मैं काशी हिन्दू विश्वविद्यालय लौट कर वामपंथी सक्रियताओं में नए सिरेसे मुब्तिला हुआ, उन्हीं दिनों स्वातिजी से मुलाक़ात हुई थी।

यूं तो हम लोग थोड़ी भिन्न धाराओं से ताल्लुक रखते थे, वह अगर किशन पटनायक आदि की अगुआई में सक्रिय समाजवादी आन्दोलन की अग्रणी कार्यकर्ती थी, तो मैं वामपंथ की इन्कलाबी धारा से ताल्लुक रखता था, लेकिन मैंने व्यक्तिगत सम्वाद में, अन्तर्क्रिया में ऐसी दूरी को कभी महसूस नहीं की थी। इतना मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि लंका / काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के पास का वह क्षेत्रा/ के आगे नगवा की जिस गली में उनका मकान था, वह मुझ जैसे कार्यकर्ताओं के लिए कभी भी वहां धमकने का स्थान था।

उनकी बेटी प्योली- जो इन दिनों एक युवा वकील है और नागरिक अधिकार के मसले पर अपनी आवाज़ बुलन्द करते देखी जा सकती है–का जन्म उन्हीं दिनों मकान में हुआ था। एक दिन मैं कोई सूचना देने उनके घर पहुंचा तो देखा कि वह नन्हीं प्योली उनकी गोद में है। उन दिनों उनका बेटा ऋलीन चन्द साल का रहा होगा, जो स्कूल जाया करता था। इसी मकान में मेरी मुलाक़ात उनकी भांजी स्मिता से हुई थी, जिन्होंने बाद में समाजवादी आन्दोलन के कार्यकर्ता - जिनका कुछ साल पहले इन्तक़ाल हुआ–सुनील से शादी की थी। बाद में दोनों मध्यप्रदेश के ग्रामीण इलाके में बस गए थे, जहां उन्होंने अपनी सक्रियताओं को आगे बढ़ाया।

अब तो चीज़ें निश्चित ही बदल गयी होंगी, लेकिन उन दिनों विदेशों में अध्ययन कर लौटने वाले अध्यापकों का एक शगल रहता था यह सुनाने का कि वह फलां फलां मुल्क में गए थे और उन्होंने कितनी नायाब दुनिया देखी है। होता यह भी था कि विदेश की पढ़ाई खतम कर लौटे अध्यापक अरसे बाद भी गोया नोस्टाल्जिया में जीते रहते थे। स्वातिजी की यह खासियत थी कि आपसी संवाद में उन्होंने कभी भी यह जताने की कोशिश नहीं की कि उन्होंने अमेरिका के युनिवर्सिटी आफ पिटसबर्ग से एटॉमिक फिजिक्स में अपनी पीएचडी पूरी की है और वहां उन्होंने कितने साल बिताये और वहां क्या देखा।

समाजवाद के विचारों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता

थी कि अमेरिका में रह कर वहां बेहतर जिन्दगी जीते रहने के बजाय उन्होंने भारत आना कुबूल किया और आन्दोलन से जुड़ने का निर्णय लिया।

उन दिनों विश्वविद्यालय में गतिविधि विचार मंच नाम से एक तंज़ीम हम लोगों ने कायम की थी और उसकी सक्रियताओं में उन्हें जब बुलाया जाता वह पहुंच जाती थी।

याद किया जा सकता है कि अस्सी के दशक में भी विश्वविद्यालय में महिला अध्यापक अधिक संख्या में नहीं थी और ऐसे अध्यापक - फिर चाहे पुरूष हों या स्त्री हों - नाममात्र के ही थे, जो विद्यार्थियों के धरने प्रदर्शन में पहुंच कर उनके साथ अपनी एकजुटता प्रदर्शित करते थे। आई टी के अंग्रेजी विभाग के प्रोफेसर आर एस शर्मा थे, जो बिना संकोच पहुंच जाते थे। स्वातिजी ऐसे ही गिने चुने अध्यापकों में शुमार की जा सकती थीं।

कुछ ऐसे मुददे भी सामने आए जिनमें महज विद्यार्थियों की ही नहीं बल्कि अध्यापकों की, कर्मचारियों की भी अच्छी खासी भागीदारी दिखी, वीणा तिवारी हत्याकांड ऐसा ही एक मसला था, जब विश्वविद्यालय के अस्पताल में कार्यरत डॉक्टर तिवारी नामक शख्स ने - जो विश्वविद्यालय परिसर में ही रहता था - अपनी पत्नी की हत्या की थी और मामले को रफा दफा करने की कोशिशों के खिलाफ जुलूस निकले थे।

वीणा तिवारी का यह हत्याकाण्ड कुछ अन्य वजहों से भी याद रह गया है।

बताया जाता था कि पूर्वांचल में सक्रिय एक माफिया गिरोह का हत्यारे डॉक्टर पर वरदहस्त था, इसलिए कुछ लोगों ने इस मामले में गवाही देने से इन्कार किया था। उन दिनों उर्दू विभाग में प्रोफेसर कमर जहां पढ़ा रही थीं, अभियुक्त तिवारी के सामनेवाले ब्लॉक में रहती थीं। जो लोग इस मुददे को फॉलो कर रहे थे, बाद में बता रहे थे कि डॉक्टर के खिलाफ गवाही देने में या सत्य को उजागर करने में उन्होंने संकोच नहीं किया।

80 के दशक का उत्तरार्द्ध और 90 के दशक का पूर्वार्द्ध राम मन्दिर-बाबरी मस्जिद के इर्दगिर्द खड़ी मुहिम के इर्दगिर्द केन्द्रित हो चला था, जिसकी छायाओं से वाराणसी शहर कैसे अछूता रह सकता था। इस दौरान हम लोगों ने मिल कर आपसी सदभाव बनाये रखने और साम्प्रदायिक शक्तियों का मुकाबला करने के लिए एक साझी मुहिम चलायी थी। अपनी अपनी कम ताकत के बावजूद जुलूस निकाले थे, सम्मेलन किए थे।

इराक पर अमेरिकी आक्रमण (1991) के बाद दुनिया भर में जो जनाक्रोश उमडा था, उसकी अनुगूंज वाराणसी भी पहुंची थी। हम लोगों ने भी एक जुलूस का आयोजन किया था। अफलातून, स्वातिजी तथा हम कई अन्य मित्र, सहमना संगठनों के प्रतिनिधि शामिल थे।

सरकारें भी कैसे काम करती हैं, वाराणसी प्रशासन को हमारा यह आयोजन नागवार गुजरा था और हम सभी को गिरफतार किया गया था और कैन्ट स्टेशन के पास बने पुलिस स्टेशन में ले जाया गया था।

निश्चित ही यह गिरफ्तारी प्रतीकात्मक थी और कुछ घंटे वहां बिठाये रखने के बाद हमें छोड़ दिया गया।

वर्ष 1992 के नवम्बर में मैंने वाराणसी को अलविदा कहा और दिल्ली आया।

अफलातून तथा स्वातिजी के समाचार मिलते रहते थे। आपस में संवाद भी चलता रहता था, अलबत्ता उसकी मात्रा लगातार कम हो रही थी।

2015 में उनसे आखरी मुलाकात हुई। उन दिनों बीएचयू आई टी में अध्यापनरत डा संदीप पांडेजी ने आचार्य नरेन्द्रदेव संस्थान के तहत एक कार्यक्रम रखा था, केमिकल इंजिनीयरिंग डिपार्टमेंण्ट के एक हॉल में एक व्याख्यान होना था।

वाराणसी स्टेशन पर पहुंचने के बाद संदीपजी के साथ जब हम विश्वविद्यालय परिसर पहुंचे तो हमारा सबसे पहला ठिकाना स्वाति-अफलातून का मकान था, वह रिटायर हो चुकी थीं और अपने फ्लैट में शिफ्ट होने का इन्तजार कर रही थी।

हमेशा की तरह उसी अपनापन के साथ, सहजता के साथ उन्होंने मेरी और अंजलि की खातिरदारी की थी।

ऐसा प्रतीत भी नहीं हुआ था कि हम लगभग 23-24 साल बाद मिल रहे हैं।

पिछले साल उन्हें कैंसर ने जकड़ा और रफता रफता उसकी जकड़न तेज ही होती गयी।

अगली बार जब वाराणसी जाना होगा तो निश्चित ही सुना लगेगा कि इस शहर में हमारी एक कॉमरेड नहीं रही।

न्यू सोशलिस्ट इनिशिएटिव

स्वातिजी की याद में

- अंजलि सिन्हा

तकरीबन पांच साल पहले वाराणसी जाना हुआ था तो स्वातिजी से मिलने उनके घर हम लोग चले गए थे।

अभी बी एच यू कैम्पस वाला घर उनके पास था लेकिन कुछ ही महीनों में वो और अफलातून अपने नए घर में शिफ्ट करनेवाले थे। जब उनके घर में दाखिल हुए तो बरबस ही ध्यान आ गया कि लगभग 30 साल पहले हम अक्सर ही उनके यहां जाते थे। कैम्पस के बाहर वो जिस घर में रहती थीं उसमें हमारा आना जाना था। यूं तो वे अलग संगठन से और विचारधारा से जुड़ी थीं और हम लड़कियां जो उनके यहां जाते थे अलग संगठन में थे। विश्वविद्यालय में हम लोग विद्यार्थी थे और वे टीचर थीं, महिला कॉलेज में भौतिक विज्ञान पढ़ाती थीं। लेकिन उनके व्यक्तित्व और स्वभाव का ही तो कमाल था कि टीचर के घर हम सब बेहिचक पहुंच जाते थे। तब फोन करने का जमाना नहीं था और नाश्ता खाना का समय हो तो वह भी मिल जाता था। हमें तो उनके बनाये ब्रेड कटलेट का स्वाद आज भी याद है। उनकी बेटी प्योली छोटी थी, उसे नहीं याद होगा कि हम उससे बचपन में मिलते थे।

स्वातिजी चूंकि टीचर थी तो हमें महिला कॉलेज में जब भी कोई प्रोग्राम करना होता था तो हॉल बुक करने के लिए टीचर के दस्तखत़ की जरूरत पड़ती थी। हम लोग निवेदनपत्र लेकर उन्हीं के पास जाते थे और वे बिना सवाल किए कि क्या करना है हस्ताक्षर कर देती थीं। तब ऐसा था भी नहीं कि कैम्पस में आप को कुछ कार्यक्रम करना इतना मुश्किल हो जितना आज विश्वविद्यालय में बना दिया गया था। हम लोगों ने महिला महाविद्यालय में नाटक का मंचन किया था तब भी वे हमारी हौसला आफजाई के लिए पहले ही आकर एकदम सामने के लाइन में बैठ गयी थीं।

एक बार की बात है हम ज्योतिकुंज छात्रावास में रहते थे, वहां उनके संगठन नारी एकता से जुड़ी एक छात्रा भी रहती थी। जैसा कि संगठनों के बीच प्रतियोगितात्मक और काफी हद तक दुश्मनाना रिश्ता होता था, उसका प्रतिबिम्ब एक बार दिखाई दिया। उसने एक दिन छात्रावास में कई जगह हम लोगों के बारे में अनाप शनाप लिख कर पोस्टर लगा दिया, उस पोस्टर में हम तीन साथियों को नामकरण भी उसने किया था ''गुंइयां, भुइंया और चुंइया।' पोस्टर पर हम लोगों के कार्टून टाईप चित्र भी बना दिए थे। इस मामले में वह सृजनशील थीं।

बहरहाल हम लोग नाराज होकर शिकायत करने स्वातिजी के पास पहुंचे थे, उन्होंने आराम से घर में बिठाया, पूरी बात सुनी और बोली कि यह गलत है। मैं उस लड़की से बात करूंगी, आप लोग चिन्ता न करें, अपने संगठन का काम करें।

संगठनों के संयुक्त प्रदर्शनों में वह होती ही थीं, लेकिन हम लोग अपने कार्यक्रमों में भी उनको बुलाते थे और वे आती थीं। उन्होंने यह महसूस नहीं होने दिया कि वो टीचर हैं और हम आम विद्यार्थी।

जब उनके नहीं रहने की खब़र मिली तो लगा कि हमने अपने एक साथी को खो दिया है।

स्त्री मुक्ति संगठन

डॉ. स्वाति के निधन से एक शून्य बन गया है

समाजवादी जनपरिषद की उपाध्यक्ष और अखिल भारत शिक्षाधिकार मंडल की सदस्य डॉ. स्वाति का 2 मई 2020 को निधन हो गया। गुर्दों को बुरी तरह नाकाम करने वाली, बहुत ही कम होने वाली मल्टीपल माइलोमा नामक कैंसर की बीमारी से बहादुरी से जूझते हुए उनकी साँस छूटी। वे नारायण देसाई की पुत्रवधू थीं, उनके छोटे बेटे अफलातून से उनका विवाह हुआ था।

हमें इस अनोखी बात पर गौर करना चाहिए कि एक शख्सियत ने विज्ञान और वैज्ञानिक सोच की राह पर चलते हुए सक्रिय राजनीति, समाज में बराबरी और इंसाफ के लिए जमीनी जद्दोजहद में भी हिस्सा लिया। जब इतिहास में ऐसी मिसालें ढूँढ़ी जायेंगी, तो ऐसे किरदार के एक उम्दा प्रतिनिधि के तौर पर डॉ. स्वाति को उनकी यह ऐतिहासिक जगह देने से कोई इनकार नहीं कर पायेगा!

अ.भा. सर्वसेवा संघ का शोक प्रस्ताव

स्वाति यानी औरताना गुफ्तगू

रॉबर्टा क्लिपर

जब मैं बच्ची थी, मैंने अपनी माँ से कहा कि काश मेरी एक बहन होती। उसने कहा, 'जानती भी हो, क्या माँग रही हो!' उसकी दो बहनें थीं और वह दोनों से हताश हुई थी। उसके दो भाई भी थे, और मेरा एक भाई था।

मुझे अपने भाई से कोई शिकवा न था। मुझे खुशी थी कि मेरा एक भाई है। पर वह भाई था। भाई से गुफ्तगू नहीं होती। पर मेरी माँ को और बच्चा जनने की ख्वाहिश न थी। इसलिए मैं खुद अपनी बहनें इकट्ठी करती रही। पर जब तक मैं हैदराबाद में रहने न आई, मुझे पता न था कि औरतों के साथ दोस्ती करने का मतलब बहनें बनाना है।

डॉ0 स्वाति मेरी उन बहनों में से थी। मैं जब उससे मिली तो मैं 57 साल की थी। मैं इंटरनैशनल इंस्टीटिउट ऑफ इन्फॉर्मेशन टेक्नोलोजी में फुलब्राइट-नेहरू फेलोशिप लेकर पढ़ाने आई थी। स्वाति वहाँ रीसर्च कर रही थी। जवानी में की गई गल्तियों से सीखते हुए इस उम्र में दोस्त बनाने की कोई उम्मीद मुझे न थी। दोस्ती तो हमेशा एक तोहफा है।

डॉ0 हरजिंदर सिंह (कवि लाल्टू) ने हमारा परिचय करवाया। हम डाइनिंग रूम में लंच कर रहे थे। स्वाति बोली, 'बढ़िया कि एक और स्त्री से बातचीत कर रही हूँ।' मैंने इस पर गौर नहीं किया था कि IIIT में ज्यादातर अध्यापक पुरुष थे। हालाँकि भाई-बहनों में फ़र्क करना मैं बचपन में ही सीख चुकी थी, मुझे हमेशा फ़र्क नज़र नहीं आते। उस कमरे में मैं अकेली अमेरिकन थी, और यह बात भी बहुत कम ही मेरे ज़हन में आती थी। हम सभी भाई-बहन हैं, पर हम हमेशा भाई-बहनों जैसा बर्ताव नहीं करते हैं। पर स्वाति ने जो कहा, मैं समझ गई : उस कैंपस में एक और बहन मिली थी - दो तोहफे! - जिसने कभी कहा था कि हम 'औरताना बातें कर' सकती हैं।

स्वाति और मैंने फिर मिलने और 'औरताना बातें करने' का तय किया। यह फैसला हर रोज़ कैंपस में और बाहर लंच और डिनर करने तक बढ़ा। मुलाक़ातों में हम अकसर खान-पान पर बातें करतीं। वह मुझे फ़ोन करती और कहती, 'मैं एक पपीता ले आई हूँ। तुम्हें चाहिए?' मैं उसे चाय पर बुलाती। वह पूछती कि अगर मैं कैंपस में शाकाहारी भोजन से तंग आ चुकी हूँ तो क्या कैंटीन में डिनर करना चाहूँगी - वहाँ चिकेन मिलता है। विकल्प कम ही थे। कभी एक किलोमीटर चलकर इंद्रानगर जाते, जहाँ कैंपस के सबसे पास की दुकानें थीं। वहाँ के दो रेस्तराँ में से एक में हम खाना खाते। अक्सर हम शहर में कहीं जाने की हिम्मत कर लेते।

जाहिर है हमारी रुचियाँ खाने तक बँधी न थीं। हमें एक दूसरे से लगाव था। हम एक दूसरे से अपनी बातें साझा करते। मैंने उसे अपने असफल विवाह और टूटे दिल की कहानी सुनाई तो उसने कहा, 'चलो, मैं तुम्हें अपनी कहानी सुनाती हूँ। पर तुम इस बारे में लिखोगी नहीं।'

तो मैं उस बारे में लिखूँगी नहीं। बस यही कि स्वाति मेरे तजर्बे में देखी सबसे बड़ी हिम्मत वाली, आज़ाद-खयाल, और स्नेहमयी स्त्रियों में से है। उसकी समझ और विनोद भरी बातें मुझे पास खींचती थीं। एक सच्ची बहन की तरह उसकी ताकत और सहनशीलता भी मेरे लिए आदर्श थे।

राइडर यूनिवर्सिटी से साल भर की छुट्टी के बीच में, जहाँ मैं अध्यापन करती हूँ, फैकल्टी यूनियन अगले अकादमिक वर्ष के लिए अधिकारियों का चयन कर रही थी। संस्थान से मोल-तोल करने वाली इकाई के अध्यक्ष ने मुझे ईमेल भेज कर पूछा कि क्या मैं अगले इकरारनामा के लिए अध्यक्षता करना चाहूँगी। यही वह वक्त होता है जब यूनियन के सदस्य काफी तनाव में होते हैं और यूनियन अधिकारियों को काफी मेहनत करनी पड़ती है। मुझे यह एक आम बात लगी कि जो मीटिंग में नहीं आया, उसे किसी कमेटी में डाल दो - और फिर उसका अध्यक्ष बना दो। मैंने जवाब में लिखना चाहा, 'क्या आप मुझे इस लिए पूछ रहे हैं कि मैं हजारों मील दूर बैठी हूँ और इस पर बहस नहीं कर सकती?' पर स्वाति ने गैरबराबरी और नाइंसाफी से जूझने की मिसाल

पेश की थी और उससे प्रेरित होकर मैंने भागीदारी निभाने की सोची। सबकी भलाई के लिए मैं हर संभव ज़िम्मेदारी लेने को तैयार थी कि उस यूनिवर्सिटी में मेरे साथी अध्यापकों को इंसाफ मिले, जहाँ प्रशासन के लोग अध्यापकों की तुलना में दो या तीन गुना - कुलपति तो छः गुना - तनख़्वाह लेते थे। तो मैंने जवाब टाइप किया, 'हाँ,' और वह पद स्वीकार किया। अंग्रेज़ी के प्रोफेसर की नौकरी में मैंने आखिरी बेहतर इकरारनामा के लिए लड़ाई लड़ी।

हम सियासत और तहज़ीब पर भी बातें करते थे। काश कि हम और संपर्क में रहते। ऐसा होता तो जिस मुल्क में मैंने जन्म लिया, वहाँ पहली स्त्री-राष्ट्रपति बनने की दावेदार महिला से जिस तरह एक अयोग्य और बेढंगे बंदे ने चुनाव हड़प लिया, इस बारे में कितनी बातें नहीं की होतीं!

मैं लंबे अरसे से भारत में दीवाली का माहौल देखना चाहती थी, और इसमें स्वाति मेरी गाइड थी। उसने मुझे कैंपस के एक मकान की निचली दीवार पर जलते दीए दिखलाए। और श्री राम की कहानी सुनाई। फिर हमने इंद्रानगर में डिनर खाया।

जब प्योली वहाँ आई, हम उसे सलार जंग म्यूज़ियम ले गए, फिर चारमीनार देखा और चूड़ी बाज़ार में सैर की। हमने काँच की चूड़ियाँ खरीदीं।

हैदराबाद की एक शाम मुझे हैदराबाद पोएट्री सोसायटी से आमंत्रण पर जाना था। स्वाति मेरे साथ आई। इस अंजुमन में शहर के उम्रदराज (यानी मेरे हमउम्र या मुझसे बड़े) ज्यादातर रूमानी और विक्टोरियन जमाने की अंग्रज़ी शायरी पढ़ते हैं, ऐसा मुझे लगा। 'अगर कोई मर्द तुम्हें शायरी पढ़ने के लिए किसी मकान में ले जाने आ रहा है,' स्वाति ने कहा, 'और गाड़ी मे ले जाएगा, तो तुम्हें एक साथी की ज़रूरत है।' आखिर वह बहन थी। एक बंदा एक पुरानी गाड़ी लेकर आया, जिसमें फट चुकी सीटें कंबल से ढँकी हुईं थीं, और उसने कहा, 'मेरा नाम जुल्फिकार है, आप मुझे जुल्फी कह सकती हैं।' वह गाड़ी में हमें एक पुरान मकान में ले गया, जहाँ पश्चिमी सूट या रेशमी अचकनें पहने मर्द और रेशम की साड़ियाँ और सलवार-कमीज़ पहनी औरतें बिल्कुल साफ औपचारिक अंग्रेज़ी में बातें कर रहे थे। वे शराफत से बातें सुनते; उनके चेहरों पर सलवटें थीं, जो उम्र ही नहीं, बल्कि इस सदमे से उभरी थीं कि मैं वर्ड्सवर्थ या ब्राउनिंग की नहीं, बल्कि अपनी लिखी नज़्में पढ़ रही थी। जुल्फी हमें वापस ले आया तो मैंने स्वाति से कहा, 'मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं रूथ प्रवर झाबवाला के किसी उपन्यास में सैर कर आई हूँ।' तब तक नई दिल्ली में साइरस झाबवाला के घर चार बार जा चुकने के बावजूद मुझे नहीं लगता कि हिंदुस्तान में अपने तजर्बों के झाबवाला के बयानात मैं समझ पाई थी।

अक्सर मैं स्वाति को ज़बरन शॉपिंग के लिए साथ ले जाती। मैं ज्यादा कपड़े लेकर नहीं आई थी, क्योंकि मैं हिंदुस्तानी सूती कपड़े वापस ले आना चाहती थी। उसने मुझे कह रखा था कि उसे पूछे बिना मैं रजाई न खरीदूँ। जब भी मैं भारत में खरीदी सलवार-कमीज़ें पहनती हूँ, मुझे उसकी सलाह याद आती है, 'तुम हरे और नीले रंग के कपड़े ज्यादा खरीद रही हो। कोई और रंग भी पसंद करो।' रजाई खरीदने में उसने मेरी मदद की। वह लाल रंग की थी।

तब से ग्यारह साल बीत गए हैं। वह रजाई पुरानी हो गई है, जैसे हमारे जिस्मों के साथ होता है। जिस्म भी पुराने पड़ जाते हैं, ताकि हम उन्हें त्याग सकें। ऐसा न हो तो रूह आज़ाद कैसे हो पाएगी?

मेरे ऊँचे, सँकरे घर में एक जुलूस वाली तस्वीर है, जिसमें दो हाथी और उनके हौदों पर महावत और लोग बैठे हैं। साथ में ग्यारह लोग चल रहे हैं, जिनमें से चार एक पालकी में एक औरत को उठाए हुए हैं। उनके पीछे कस्टर्ड-आइस-क्रीम की तरह चकराती पहाड़ियाँ हैं, जिन्हें देखकर मुझे हैदराबाद की भूरी पहाड़ियों पर चट्टानें याद आती हैं। एक सफेद किला बिल्कुल आस्मां जैसी नीली नदी पर खड़ा है, और किनारे पर हरी पहाड़ियाँ उठती दिख रही हैं। घर की सीढ़ियों तले छोटी सी सँकरी जगह पर यह आयताकार तस्वीर बिल्कुल सही लगी दिखती है। स्वाति ने सुझाव दिया था कि इसे कहीं खुली जगह में लगाऊँ, पर मैंने इसे वहाँ लगाया ताकि जब भी मैं सीढ़ियों से उतरूँ तो मैं इसे देख सकूँ- और सुबह से कई बार मुझे उतरना ही होता है - और इसे देखकर मुझे स्वाति की याद आती है, जिसने मुझे यह उपहार में दिया था। मुझे याद नहीं कि वह किस दिन के लिए था, मेरा जन्मदिन, दीवाली या कि मेरे अमेरिका वापस आने के थोड़ा पहले उसके बनारस लौटते वक्त या कि जब वह ऋलीन की शादी के लिए अमेरिका आई थी। न्यूयॉर्क में ऋलीन और डॉली की शादी में जाकर मुझे खुशी हुई थी। और भी ज्यादा खुशी मुझे मिली जब साठ मील दक्षिण की ओर चलकर स्वाति मुझसे मिलने

आई।

संपर्क में न रह पाने की एक कीमत तो यही थी कि जब मैंने जाना कि स्वाति मेरे पहले चल बसी तो मुझे सदमा हुआ। इस पहली प्रतिक्रिया के बाद मेरे जिस्म के गहरे अंदर दर्द होने लगा। मैंने उससे बातचीत जारी नहीं रखी थी। अब उसकी आवाज़ मैं इस जीवन में और नहीं सुन पाऊँगी। फुलब्राइट फेलोशिप के बाद मैं दो बार ही हिंदुस्तान लौटी थी। दूसरी बार प्योली की शादी पर आई थी। इस बार स्वाति ने मुझे एक बैंगनी-कत्थई साड़ी दी थी, जिसे मैंने तब से कई बार पहना है। चूँकि इसके बाद मैं कभी भारत नहीं लौटी, मुझे न्यू जर्सी में ब्लाउज़ सिलाना पड़ा। मेरी पहली बनारस यात्रा पर स्वाति के घर के पास खरीदी बनारसी साड़ी के लिए सिलवाई ब्लाउज़ की तुलना में अब दर्जी ने दो-तीन गुना ज्यादा पैसे लिए। स्वाति को पता चलता तो उसने इस पर मुझे बहुत कुछ कहा होता। पर दर्जी ने पीठ पर ऊनी गाँठों की पलियाँ बनाकर ऐसी बढ़िया कारीगरी की कि मुझे वह भा गया। साड़ी तो मेरे पसंदीदा रंगों में खूबसूरत है ही। जब भी मैं इसे पहनने का मौका निकाल पाती हूँ, तो उसे और प्योली को याद करती हूँ।

नीचे उतरते हुए राजपूतों के जुलूस को देखकर उसे याद करती हूँ। उसकी समझ, हँसी, खूबसूरती याद आते हैं। काश कि मैं संपर्क में रहती। किसको पता होता है कि कब कोई बहन खो जाएगी। पर सचमुच कुछ नहीं खोता, हालाँकि भौतिक हर कुछ खो जाता है, और मुझे लगता है कि जीवन में हमारी पहली मुलाक़ात भी एक पुनर्मिलन थी। रोचक बात यह कि ऐसा हिंदुस्तान में होना था, जीवन में इतनी देर से होना था, इतनी दूर से और इतने कम वक्त के लिए होना था। मुझे पक्का यकीन है कि हम फिर मिलेंगे, पर उम्मीद करती हूँ कि जब मिलें तो हमारे जिस्म जरा जवाँ हों और हम एक दूसरे के क़रीब रह पाएँ, ताकि हम जब मर्जी मिल कर बातचीत कर सकें।

(अंग्रेजी की लेखिका व अध्यापिका)

(अनुवाद– लाल्टू)

हम सबकी प्रिय : स्वाति दी

मंजू देवी

उनके व्यवहार को यादकर आज भी लगता है कि चलो स्वाति दी के घर हो लेते हैं। हम सभी 'नारी संरक्षण गृह' में लड़कियों/महिलाओं के जीवन के उधेड़बुन को बहुत अपनेपन से सुनते थे। उस समय तो समझ में नहीं आता था कि स्वाति दी महिलाओं के लिए आत्म निर्भरता की बात इतनी क्यों करती हैं? आज लगता है कि स्त्री का आत्मनिर्भर होना अति आवश्यक है। यदि स्त्री आत्मनिर्भर होगी तो अपनी पसदन्द का जीवन जी सकती है। हम सभी मिलकर स्त्री जीवन पर चर्चा करते थे क्योंकि मैं महिला अध्ययन केन्द्र में ग्रामीण स्वच्छता एवं स्वास्थ्य शिक्षा ''परियोजना में कार्य करती थी, जहाँ स्वाति दी ''विशेषज्ञ'' के रूप में प्रायः आती रहती थीं।

आज उनके साथ रहकर किये हुए बहुत से काम याद आते हैं। लगता है फिर से उन कार्यों को शुरू करूँ, जिसमें हम शामिल नहीं हो पाये थे। यह सच है कि बहुत सी चीजें बदल गयी हैं। पता नहीं टीम में वह सहजता होगी या नहीं? अब तो पूरा समाज ही बहुत बदल गया है। वर्तमान समय में कौन असली है और कौन नकली इसको पहचानना भी बहुत मुश्किल है। ऐसे समय में स्वाति दी के लिए कुछ शब्द हैं—

बहुत सरल
बहुत सहज
सबको प्यार करने वाली
आत्मविश्वासी
नेतृत्व देने वाली
हँसमुख
विचारक
मिलजुल कर कुछ नया करने वाली
नये विचार देने वाली
समूह को साथ लेकर चलने वाली
सबकी सुनने वाली
ऐसी स्वाति दी को बहुत-बहुत याद।

ए-9/123, प्रहलाद घाट, वाराणसी
मो. 09839527783

स्वाति जी एक याद : प्रेरणाभरी

अलका निगम

अन्दाज़े से न नापिये किसी की हस्ती को।
ठहरे हुए दरिया अक्सर गहरे होते हैं।।

स्वाति जी के व्यक्तित्व को समझने में शायद गलती हो जाय इसलिए उनको समझने के स्थान पर यदि महसूस करें तो उनके दिल की धड़कन से आप जरूर वाकिफ हो जायेंगे जैसे मैं हो गई थी।

मैं स्वाति जी से अपने पति प्रोफेसर अश्वनी कुमार निगम की सहकर्मी होने के नाते केवल विभागीय स्तर पर परिचित थी। फिर मैंने उनको अपने क्लब की एक मित्र के घर देखा। मेरी यह बंगाली मित्र अत्यन्त हँसमुख व मुक्त स्वभाव की होने के कारण सबके साथ अच्छे रिश्ते रखती थी। यह बताने पर कि स्वाति उनकी बहन हैं मेरी आश्चर्यभरी आँखें देखकर वे हँसने लगीं और बोलीं सबको यही लगता है कि हम बहनें कैसे हो सकते हैं। वह एकदम गोरी, स्वाति साँवली, वह खिलखिलाती, यह स्पष्टवादी व गम्भीर दिखने वाली, वह नो बाउण्ड्रीज, यह नो फरदर बियांड दिस लाइन वाली। फिर एक दो बार मैं व स्वाति जी साथ रिक्शे पर घर आये। मैं उनका पक्का पैसे का हिसाब देखकर घबड़ा गई। और शायद इसी घबराहट के कारण उनसे मेरी मित्रता नहीं हो पाई हालाँकि उनका गरिमामय व प्रभावशाली व्यक्तित्व मुझे आकर्षित करता था।

और फिर अचानक एक काले तूफान ने मुझे अपनी चपेट में ले लिया। मेरा सितारों से भरा घोंसला जो रंग बिरंगे इन्द्रधनुष पर झूल रहा था, झटके से टूटकर पत्थरों पर गिर पड़ा। मैं और मेरे दो बेटे, पैरों के नीचे से खिसकती रेत पर खड़े थे जब मेरे पति हम लोगों को छोड़कर चले गये। जिनकी आँकों में हम दोनों को देखकर प्रसन्नता होती थी या फिर रश्क, सभी दुःखी थे। कौन आया कौन गया। नहीं मालूम। कान कुछ-कुछ पकड़ पा रहे थे किन्तु समझ नहीं पा रहे थे— 'हाय कैसे अकेले रहेगी', 'इतनी लम्बी जिन्दगी पड़ी है' 'बच्चों का क्या होगा'। दिमाग एक चीज पकड़ पाया— 'अब मुझे बच्चों को बड़ा करना है।' मैं उस समय इंगलिश डिपार्टमेन्ट में रीडर थी किन्तु जब डॉ. आर.सी.पी. सिन्हा रजिस्ट्रार थे मुझसे मिलने आये तो मैंने उनसे कहा मुझे नौकरी दे दीजिए, बच्चे पालने हैं! वह दुःखी मन, सर पर हाथ रखकर चले गये। तब एक आवाज आई जो मुझे समझ में आ गई वह स्वाति जी की थी, 'अलकाजी और मेरी माँ के बीच कुछ नहीं बदला है।' पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलती रहने वाली, अकेली स्त्री की इस दयनीय परिस्थिति को बदलना ही शायद स्वाति जी के जीवन का ध्येय था। एक स्त्री को निराशा के धुँधलके से निकालकर, आत्मसम्मान की खुली हवा में लाकर, उसकी गरिमा वापस करने का प्रयत्न यदि एक दूसरी स्त्री करती है तो वह निश्चय ही एक प्यार भरा दिल, खुली सोच, दृढ़ इच्छाशक्ति व कर्मठ जीवन की स्वामिनी होगी। मेरा अपना दुःख, अपने जीवन साथी से विछोह का दर्द, अपने बच्चों के भविष्य के सामने तिरोहित हो गया था। मैं इतनी विक्षिप्त थी कि भूल गई थी कि मेरे पास एक प्रतिष्ठित नौकरी है। मुझे किसी के आगे हाथ फैलाने की आवश्यकता ही नहीं है।

यहाँ पर स्वातिजी अचानक एक अत्यन्त भीमकाय दैत्य ''दोहरे मापदण्ड'' से ग्रसित स्त्री जाति ''बेचारी'' वाली छवि की ओर इंगित कर बैठीं। अबला अर्थात् बल रहित स्त्री, पुरुष की बलशाली छत्र-छाया में ही रहनी चाहिए चाहे वह उनकी माँ की कठिन आर्थिक दशा में हो चाहे अलका की सम्पन्न। अबला जीवन किसी भी परिस्थिति में रख दो 'हाय' कहानी उसकी एक ही होगी— ''आँचल में दूध'' और 'आँखों में पानी''। बाद में मुझे पता चला कि स्वाति जी जब डेढ़ साल की थीं तभी उनके पिता दिवंगत हो गये थे। शिक्षित किन्तु डिग्रीविहीन माँ ने निश्चय ही कठिन परिस्थितियों में बच्चों का बड़ा किया होगा। स्वातिजी की आत्म-सम्मान से लबरेज शख्सियत व परिष्कृत रुचि उनके संस्कारी बचपन का बखूबी बयान करती है। पीढ़ी-दर-पीढ़ी....।

मेरी कई दोस्तों ने मेरे पास आना कम कर दिया था। कारण–'आपकी दशा देखी नहीं जाती थी।' एक व्यक्ति जो प्रतिदिन दो-तीन माह तक आया वह भी स्वाति। कभी समोसे लाकर मुझसे चाय बनवाने या केवल इधर उधर की बातें करने। चाय तो बहाना था। वह मुझे अतिशीघ्र रोजमर्रा की जिन्दगी में वापस लाना चाहती थी।

एक महीने बाद मेरे छोटे बेटे का आईएसई की परीक्षा के पहले स्वाति जी के बेटे ने जो ग्रीटिंग कार्ड भेजा था उसका मजमून हम तीनों को अभी तक याद है— 'You are a lion's cub' और मेरा बेटा हँस दिया। उस समय यह छोटे-छोटे तिनके हमारे लिए वट-वृक्ष के सहारे जैसे थे और उसमें सबसे बड़ा हाथ था स्वातिजी का! केवल सतह पर फुलझड़ी तो सब छोड़ सकते हैं किन्तु गहराई के अँधेरे नें दिया जलाकर प्रकाश कर देना जिससे मार्ग दिखाई पड़े स्वाति जी की शख्सियत का ही कमाल हो सकता है। हम सब ईश्वर के करिश्मों से वाक़िफ हैं। मालूम है कि वह अंड से निकले पक्षी के बच्चे को भी असीम आकाश का विस्तार नापने की क्षमता देता है किन्तु उसकी चोंच में दाना डालकर पंखों को फैलाने में भी कोई सहायता करता है जैसे स्वाति जी ने मेरी कलाई पकड़ कर की थी। इतनी दूर तक साथ निभाने के लिए स्वातिजी आपको धन्यवाद!

हाँ एक बात और उन्होंने मुझे सिखाई। जब एक बार मैंने उनसे कहा इतनी लम्बी जिन्दगी अकेले कैसे कटेगी? वह बोलीं आप छोटे-छोटे समय के लक्ष्य बनाइये और उतना ही देखिये, पूरा जीवन तो किसी ने देखा भी नहीं है। अब मैं एक नहीं अनेक छोटी-छोटी, उछलती-कूदती जिन्दगियाँ जीती हूँ बजाय उस एक, लम्बी, बोझिल, नीरस जिन्दगी के। कदम तो निरन्तर उसी दिशा में, उसी राह से गुजर रहे हैं किन्तु यात्रा मुमकिन व सहज हो गई है। एक बार फिर से धन्यवाद स्वाति जी!! आप जैसे लोग किसी को जिन्दगी में किसी मकसद से आते हैं— "I believe a bit of the reason is to throw little torches out to lead people through the dark."

अफसोस! ज्यादा वक्त साथ नहीं बिता पाए...

डॉली दफ्तरी

स्वाति जी मेरी सास थीं। मैं उनसे पहली बार 2012 में मिली थी, जब उनके बेटे ऋत्लीन और मैंने जिंदगी साथ जीने का फैसला किया था। संयोग से, मैं सुनील भाई से पांच साल पहले जेएनयू में एक कार्यक्रम में मिली थी और उनके भाषण से गहराई से प्रभावित हुई थी। लिहाजा, ऋत्लीन का सुनील भाई से जुड़ा होना, उसके पक्ष में विश्वास मत जैसा था। ऋत्लीन और मैं अमेरिका में थे और हमारे अभिभावक भारत में। मैं जल्दी ही स्वाति जी जिन्हें मैं मां कहती थी, से ई-मेल के जरिए बातचीत करने लगी। मां के ई-मेल में हल्का स्पर्श और जिंदादिली हुआ करती थी। उन्हें शब्दों और भाषा में गजब की महारत थी। उनकी आवाज तो लाजवाब थी। मैं बतौर समाज विज्ञानी शब्दों में उलझी रहती थी और उनकी महारत देख मैं हैरान थी। हम पहली दफा आमने-सामने उन गर्मियों में ऋत्लीन के न्यूयॉर्क के घर में मिले थे। हमारे सामने गर्मजोशी से भरीं, खुले दिल की, उदार महिला थीं, जिनके मन में पहले से कुछ नहीं था। न्यूयॉर्क में बस थोड़ा समय ही साथ बीता था। 2012 की सर्दियों में ऋत्लीन और मैं भारत आए एक और जश्न में शामिल होने। ऋत्लीन की बहन प्योली की शादी सोमेश से हुई और फिर हमारे ब्याह का साझा रिसेप्शन हुआ। मां उस आयोजन के अनेक पहलुओं में जुटी हुई थीं। देश और दुनिया भर से आए परिजनों और दोस्तों के सफर और ठहरने के इंतजाम, कैटरर तय करना, छोटी-बड़ी रस्मों की व्यवस्था, बड़े रिसेप्शन के इंतजाम वगैरह। मैंने तब योजना बनाने और उसके क्रियान्वयन की उनकी महारत से भी परिचित हुई। लेकिन उन्हें जिंदादिली और गर्मजोशी सबसे अलग बनाती थी। मेरे लखनऊ से आए दोस्त मां के गहरे लगाव, हर बारीकी पर ध्यान देने वगैरह से काफी प्रभावित थे। मां हमें सबसे अधिक याद उन मूल्यों के लिए आती हैं, जो हम दोनों में समान थे। दुनिया को देखने का प्रगतिशील नजरिया, सामाजिक परिवर्तन और सामाजिक न्याय के प्रति प्रतिबद्धता, धर्मनिरपेक्षता, नारीवाद, और सामाजिक समता वे मूल्य हैं। कभी-कभार कुछ मुद्दों की बारीकियों पर हमारे मतभेद होते थे लेकिन वे सहमना लोगों के बीच वाद-विवाद जैसे थे।

मां के व्यंजनों की तो बात ही क्या है, जैसा कि बहुतों को पता होगा, उनकी यह महारत भी लाजवाब थी। उनकी रचनात्मकता, दूसरों का खयाल रखना और 'कामकाज' में व्यस्तताओं के बावजूद सबके लिए सुलभ रहना जैसे गुण बिरले थे। मुझे बस यही अफसोस है कि हम ज्यादा वक्त साथ नहीं बिता पाए। मैं उनके अन्य योगदान के बारे में इस विशेष अंक को पढ़कर जानूंगी। मेरा सौभाग्य है कि ऐसी मां मुझे मिलीं।

प्राध्यापक, समाजकार्य, बॉस्टन, अमेरिका

ऐसा कहाँ से लाएँ कि तुझसा कहें जिसे

कमरजहाँ

स्वाति जी का चले जाना हम सबका जाती नुकसान है। काफी समय से उनकी जानलेवा बीमारी की खबरें मिल रही थीं पर मेरी हिम्मत नहीं हुई कि उन्हें फोन कर देती। किसी किसी मौके पर सभी भाषाओं के सभी शब्द बेकार हो जाते हैं। बस एक डरावने लम्हे का इन्तज़ार रह जाता है। आखिर वह समय भी आ गया और हम सबने उन्हें खो दिया।

वह एक सादा मिज़ाज निडर बेबाक, बेखौफ़, पक्के इरादे की जुझारु महिला थीं। बनारस उनकी कर्मभूमि थी और इस शहर को ऐसे व्यक्तित्व की ज़रूरत भी थी।

बनारस बुनियादी तौर पर धार्मिक और तिजारती शहर है और व्यवसाय का मतलब है या तो बहुत सा पैसा या गरीबी। विश्वस्तर पर अपनी पहचान बनाने वाला शहर कभी आत्मनिर्भर नहीं हो सका। लखनऊ जैसे शहर से 1972 में बी.एच.यू. जाकर और बनारस को क़रीब से देखकर मालूम हुआ कि केवल किताबी ज्ञान से समाज नहीं बदल सकता। भारत के कई और शहरों की तरह बनारस की महिलाओं की दशा भी दयनीय थी और इसमें तब्दीली लाने के लिए महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना ज़रूरी था। सार्थक पहल के लिए मैंने कई छात्र और छात्राओं को अपने घर में रखा जो बी.एच.यू. में उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते थे। पर इतने बड़े शहर में 15-20 छात्राओं को शिक्षित करके समाज में सुधार नहीं लाया जा सकता। आवश्यकता इस बात की थी कि इस विचार को साझा करने के लिए अपनी जैसी महिलाओं को एकत्रित करके इस काम को विस्तार दिया जाए। परिसर में ऐसी शिक्षिकाएँ बस गिनती की थीं। उसी समय सन् 79 में महिला कालेज में स्वाति जी की नियुक्ति हुई। एक जुझारू महिला में जो विशेषाएँ होना चाहिए, स्वाति उस पर खरी उतरती थीं। मुझे भी ऐसी ही साथी की तलाश थी। और इस तरह नर नारी समता की स्थापना हेतु सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन के लिए प्रतिबद्ध संगठन ''नारी एकता'' की बुनियाद पड़ी। मैं इस संगठन की अध्यक्ष और स्वाति जी इसकी सचिव नियुक्त हुई। डा. मुनीज़ा रफ़ीक़ खाँ (अध्यक्ष, इंस्टीट्यूट ऑफ गाँधियन स्टडीज) इस संस्था की कोषाध्यक्ष बनीं। यह पूर्णता एक निजी संस्था से जुड़ गई है और अपना सक्रिय योगदान दिया। सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक स्तर पर बनारस की कई संस्थाएँ और महिला संगठन भी शामिल हुए। और यह काम राजघाट और रामनगर तक फैल गया। बी.एच.यू. के अलावा बनारस का शिक्षित ताजिर और बुद्धजीवी तबक़ा भी हमारे साथ आता गया।

इन तमाम कामयाबियों में स्वाति जी का सादगी भरा व्यक्तित्व और अपनी बात को सही ढंग और मजबूती से रखने का अंदाज़ काम आया। दिसम्बर 2006 ई0 में बाबरी मस्जिद का हादिसा पेश आया। इसका असर पूरे देश पर पड़ा, फिर बनारस इससे अछूता कैसे रह सकता था। सदियों से यह शहर बुनकरों की कला के लिए प्रसिद्ध रहा है। हिन्दू-मुस्लिम ताने-बाने की तरह इस शहर में रहते आए हैं। कबीर और तुलसी की परम्पराएँ इस शहर का गौरव रही हैं।

साल 2006 पूरे देश के लिए अभागा रहा। ताना-बाना बिखरने लगा, उलझने लगा। शीर-ओ-शक्कर रहने वाले हिन्दू मुस्लिम इन्सानियत नहीं बल्कि जाति से पहचाने जाने लगे। पूरे शहर पर कर्फ़्यू लागू था। पुरुष सरकारी कर्मचारी होने के कारण सक्रिय नहीं हो सकते थे इसलिए महिलाओं ने एक विजय जुलूस निकाला। यद्यपि यह जुलूस मुख्य द्वार से आगे न जा सका और पुलिस ने उसे रोक दिया मगर हमारी संस्था अपने ही घर में हार गई।

बनारस से सटा एक छोटा सा गाँव है 'लोहता'। यह गाँव कभी नही ंसोता। चौबीस घण्टे मशीनों की तेज आवाज़ें ही इसकी ज़िन्दगी का सुबूत देती हैं। मगर ग़रीबी इनका मुकद्दर है। लोहता ें एक छोटा सा स्टेशन है जिसके एक ओर हिन्दू और दूसरी ओर मुस्लिम आबादी है। दिसम्बर 1992 ने दूरियाँ बहुत बढ़ा दी थीं। रेलवे लाइन लक्ष्मण रेखा का काम करती थी जिसके दोनों ओर लोग एक दूसरे को शक की निगाह से देखने लगे थे। तनाव इतना था कि लाइनमैन भी ताला डाल कर भाग जाया करता था। हमारी पूरी टीम इस तनाव को दूर करने के लिए दिन भर बिना खाए पिये रेलवे लाइन पर बैठी रहती

थी। इस पूरे अभियान में बी.एच.यू. के छात्र और छात्राओं का योगदान क़ाबिले तारीफ था। वह हमारी ताकत बनकर तमाम कष्ट झेलते रहे पर हार न मानी लेकिन बिना स्थानीय सहायता के यह तनाव दूर करना मुमकिन न था। वह लोहता जो चौबीस घंटे करघों की आवाज़ से जागता रहता था, मौत के सन्नाटे में बदल गया था। कई दिनों की कोशिस के बाद दोनों ओर के बड़े और समझदार लोगों से बातचीत करके उन्हें क़रीब लाया गया और करघों का शोर जो लोहता की पहचान था, फिर से जारी हुआ।

बनारस गलियों का शहर है। कहीं एकतरफा आबादी है तो कहीं मिली-जुली। शहर के संभ्रान्त, सम्पन्न और शिक्षित लोगों की बहुत सी कमेटियाँ बनाई गईं जो अपने-अपने मुहल्लों की रखवाली बनीं और इन तमाम कोशिशों का नतीजा यह निकला कि बनारस हर तरह के ख़तरे से बच गया।

इन तमाम व्यस्तताओं में उन्होंने कभी घर और बच्चों को नज़रअंदाज़ नहीं किया। बेटा अच्छी शिक्षा पाने के बाद अमेरिका में सर्विस कर रहा है और बेटी प्यूली सुप्रीम कोर्ट की वकालत करके दलितों, पिछड़ों और महिलाओं के अधिकारों के लिए जंग छेड़ हुए है। इस मामले में वह स्वाति से भी दो हाथ आगे है।

मेरे एक बुज़ुर्ग प्रोफ़ेसर कहा करते थे कि मरने वाले का चेहरा कभी न देखा करो। ज़िन्दगी भर की ख़ूबसूरत यादें एक मरे हुए चेहरे में सिमट कर रह जाती है और जब भी उसे याद करोगी, वही मृत चेहरा सामने आ जायेगा। अच्छा हुआ कि मैंने उनका आख़िरी दीदार नहीं किया। मेरी निगाहों में आज भी उनका सादा व्यक्तित्व, हँसता हुआ चेहरा और तमाम लोगों को अपना समझने की उदार सोच ही दिखाई देती है।

इस सिलसिले में परिसर में रहने वाले दो शिक्षकों का ज़िक्र अनुचित न होगा। अपनी पत्नियों के साथ उनका व्यवहार महिला उत्पीड़न के दायरे में आता था। पत्नियाँ रोती हुई आईं तो मैंने और स्वाति जी ने उनके घर जाकर सीधा संवाद किया। भविष्य ख़तरे में देख कर उन्होंने माफ़ी माँगी और फिर कभी ऐसा व्यवहार नहीं किया।

और अंत में एक व्यक्तित्व जो उनकी कामयाब जिन्दगी का भागीदार बना और ज़िन्दगी से मौत तक के सफ़र में हर क़दम पर मजबूती से डटकर खड़ा रहा, उनके सपनों को पूरा किया वह है अफ़लातून। जो वैचारिक तौर पर सदा एक दूसरे के पूरक बने रहे।

भूतपूर्व प्रो. एवं अध्यक्ष, उर्दू विभाग, बी.एच.यू.

एक अपूर्ण किन्तु अटूट रिश्ता

रुनु

स्वाति एक प्रोफेसर, स्वाति एक राजनैतिक और सामाजिक कार्यकर्ता, स्वाति एक लेखिका, स्वाति एक वैज्ञानिक, स्वाति एक सकुशल वक्ता स्वाति एक माँ ....न जाने और भी कितनी पहचान होंगी डॉ स्वाति के कितने ही परिचय जुड़े हुए हैं स्वाति के साथ....स्वाति एक नक्षत्र भी है जो आसमान में चमकता दमकता रहता है।

और भी बहुत मुश्किल है उस शख्सियत और रिश्ते के बारे में लिखना जिसे हमने पूरा जीया ही न हो ... पर मेरे लिए वो आज भी एक एक दोस्त ही है, थी और रहेगी भी।

मैं बात कर रही हूँ डॉ स्वाति की जिन्हें हमने दैहिक रूप से थोड़े दिन पहले चाहे खो दिया है, पर उनके साथ बिताये वो खूबसूरत पल ताजे हैं और जीते जी कभी भी नहीं मुझे छोड़ सकेंगे।

महिला समाख्या मानव संसाधन मंत्रालय के शिक्षा विभाग द्वारा संचालित एक फ्लैगशिप कार्यक्रम था और 1988-89 में महिला समाख्या कार्यक्रम कागजों से निकल कर। गुजरात, कर्णाटक और उत्तर प्रदेश में अपनी जमीन ढूंढ रहा था। इस कार्यक्रम को स्थानीय NGOs और शक्तियों के सहयोग द्वारा चलाया जा रहा था। मार्गदर्शन की मदद के लिए राज्य स्तर पर State Resource Group (SRG) और जिले सत्र पर District Resource Groups (DRG) बनांये जा रहे थे जिसके लिए जन और महिला आन्दोलन से जुड़े कार्यकर्ताओं को खोजा जा रहा था। बनारस जिले से डॉ स्वाति जो बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में प्राध्यापिका थीं उनका नाम सभी ने बड़े उत्साह से सुझाया।

मैं कार्यक्रम के शुरुआत से जागोरी की प्रतिनिधि के रूप में इसे जमीन पर उतारने के काम में सेवापुरी ब्लॉक में जुटी थी, उसी दौरान नोडल एजंसी के रूप में काम कर रही सघन क्षेत्र विकास समिति में बनारस के कार्यकर्ता और सुधि जनों के साथ एक बैठक आयोजित हुई जिसमें

बी.एच.यू. और कई और कार्यरत संस्थाओं ने शिरकत की, इसी बैठक में स्वाति से मिलना पहली बार हुआ था। बैठक के दौरान स्वाति से जितनी भर पहचान हो पायी उतने से ही हमे लगा था कि शायद हमे उतर प्रदेश के लिए राज्य परियोजना निदेशक मिल गयी है, पर स्वाति राजी नहीं हुईं। उनके इस फैसले के पीछे वजह कोई भी रही हो पर जागोरी और नेशनल ऑफिस की टीम को खेद हुआ। इसी बैठक में हमें स्वाति की भारत के उत्तर प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्र की जमीनी समझ और राजनैतिक परिपक्वता से परिचय हुआ। पर राहत की बात थी कि हमारी कार्यशैली उनको भा गयी और हम इन औपचारिक बैठकों के बाहर भी मिलते रहे। जान पहचान दोस्ती की और बढ़ रही थी। स्वाति का महिला समाख्या के प्रति रुझान बढ़ रहा था। इसी सिलसिले में स्वाति कभी कभी जागोरी द्वारा आयोजित स्थानीय कार्यकर्ताओं के साथ चल रही कार्यशाला में आती रही और रूचि से सक्रिय भागीदारी करती रही। पूरे समूह से उनकी पहचान गाढ़ी हो रही थी। टीम को वो हर वक़्त मदद देने के लिए तैयार थीं और हमे भी एक सुदृढ़ साथी मिल गयी। स्वाति की रूचि को देखते हुए हम भी उन्हें प्रशिक्षणों में आमंत्रित करते रहे।

जागोरी की भूमिका महिला समाख्या राष्ट्रीय कार्यालय के साथ समन्वय बनाते हुए संभावित कार्यकर्ताओं का हर स्तर पर चिन्हित करना, और उनके लिए प्रशिक्षण आयोजित करना था। इसीके चलते राष्ट्रीय स्तर के एक आवासीय प्रशिक्षण में उत्तर प्रदेश की तरफ से स्वाति ने भी भाग लिया। सबसे मिलकर और गाँव में जड़ें पकड़ रहे कार्यक्रम को देखते हुए स्वाति धीरे धीरे बनारस की टीम का एक अटूट हिस्सा बन गयीं। महिला समाख्या से दूर हुए पर ये दोस्तियां आज भी कायम हैं।

इसी प्रशिक्षण में एक अभ्यास के दौरान एक ऐसा हादसा हुआ जिसे मैं आज तक भुला नहीं पायी। ये अभ्यास एक खेल के माध्यम से था जहाँ कुछ को छोड़ सभी प्रतिभागी आँखें बंद कर फर्श पर बैठते जैसे की वो राह में पड़े पत्थर हों, एक प्रतिभागी को स्वेच्छा से इन पत्थरों के बीच में से आँखे बंद कर चलने के लिए बुलाया जाता। बैठे हुए प्रतिभागियों को बिना कुछ आवाज किये इधर उधर खिसक कर चलने के लिए राह बनानी होती। धीरे धीरे खेल और पेंचीदा होता जाता। खेल का उद्देश्य था की खेल के बाद अनुभवों के आधार पर हम चर्चा करें कि हम ने कैसा सहयोग पाया और दिया? नेतृत्व में किस प्रकार की सहयोग की आवश्यकता होती है? इत्यादि .....इस अभ्यास में स्वाति ने चुनौती स्वीकार की आँख में पट्टी बाँध कर बाधाओं के बीच से चलने की। ....हम बेहद खुश और चुनौती स्वीकार कर स्वाति भी उत्साहित .... स्वाति की बहुत सी ताकतों में से ये एक प्रमुख ताकत रही है जिसे हमने पग पग पर देखा है ...

खेल के दौरान आँख बाँध कर चलने और चलने वालो बैठे हुए प्रतिभागियों की उसे गिरने से बचने की कोशिशों के बीच खिलखिलाहट को कोई रोक न सकीं। स्वाति भी मस्ती में चलती रहीं और अचानक वो ठोकर खाकर गिर पड़ा...एक जोर का ठहाका ..स्वाति के चेहरे को न जाने किसने स्याह कर दिया....वो नज़रें नीची कर खेल से बहर आकर बैठ गयी और फिर फूट- फूट कर रोने लगी ....बाकि सभी को अपनी किये का अहसास तुरंत हुआ ...पर स्वाति का रोना रुका नहीं ...तभी मुझे अहसास हुआ की ये दर्द सिर्फ इस खेल के संदर्भ में नहीं है...इसका एक इतिहास है....अनकहा और अनसुना .... और यहीं से स्वाति के साथ एक अटूट रिश्ते की शुरुआत भी हुई ....उसके आंसू मेरे सीने में भी टीस पैदा कर रहे थे ....एक औरत होने के नाते हमें दरकिनार कर देना और हम पर ताने और फब्तियां कसकर अपमान करना, समाज ने और परिवार ने खूब किया है, अक्सर किया है, जिसे हम अपने सीने में छुपाये रखते हैं, दबाये रखते है पर किसी नाजुक मोड़ पर शायद जहाँ से सम्वेदना की उम्मीद हो वहां वो बाँध टूट जाते है ....इसी टूटन से मेरी और स्वाति की दोस्ती ने एक नया मोड़ लिया...रिश्ता जो अभी कच्चा सा था पक्का होने लगा, रिश्ता एक आपसी भरोसे का, एक दूसरे को सम्मान करने का और सरल सहज दोस्ती का पास नहीं भी रहे पर रिश्ता एक बना ही रहा ....रहेगा...स्वाति तुम्हे भूल पाना आसान नहीं है ...

धीरे धीरे स्वाति के दूसरे कई मानवीय मूल्यों से भी परिचय होता गया। ...जात पात के भेदभाव को न मानते हुए उससे किसी भी स्तर समझौता न करना, शादी में पति-पत्नी के बीच सत्ता के संबंधों की बारीकी से पहचान कर पाना, अपने राजनैतिक मूल्य और सिद्धांतों को जीवन में जीना और चुनौतियों का सामना करना, बिना लाग लपेट स्पष्ट बात करना और फिर हंस के गले मिलना ताकि मतभेद के चलते इंसानी रिश्तों में कड़वाहट न रहे ये स्वाति स्वतः ही करती थीं ....स्वाति की वो मस्ती, वो बच्चों जैसी खिलखिलाहट याद करती हूँ तो दर्द कम हो जाते हैं ....

(नारीवादी सामाजिक कार्यकर्ता)

मेरी चहेती छात्रा और मित्र

जेम्स नॉर्मन बाईस्ली

प्रिय अफलातून,

कई हफ्ते पहले उस दुखद खबर पर जवाब न दे पाने के लिए मैं माफी चाहता हूं। वह खबर इस कदर हिला देने वाली थी कि मैं सोच ही नहीं पाया कि क्या कहूं और फिर मेरे दिमाग में उठ रही कई सारी बातें शांत हुईं।

स्वाति मेरी चहेती शिष्याओं में एक थीं और पारिवारिक मित्र बन गईं। मेरी पत्नी और मैं उस दौर को बढ़े चाव से याद करते हैं जब हमारे परिवार पिट्सगर्ग और कोलोराडो के बाउल्डर में साथ-साथ वक्त बिताए थे। मुझे अफसोस है कि मैं सिर्फ दो बार ही बनारस में उनसे मिल सका, जिसके बीच पच्चीस साल का फासला था। लेकिन मैं खुश हूं कि उन्हें भारत लौटने पर आप मिले। मैं दूसरी बार बनारस आया तो आपके घर पर निमंत्रण पाकर गौरवान्वित हुआ था।

स्वाति बेहद उदार थीं और अपने छात्रों तथा अपने समाज का खास ख्याल रखती थीं। दुखद है कि विश्वविद्यालय से उन्हें और दूसरी महिला अध्यापकों को वह मदद नहीं मिलीं, जिसकी वे हकदार थीं। मुझ पर स्वाति का एक कर्ज यह भी है कि उन्होंने गंगा किनारे रामनगर किले में पूर्व महाराजा से मुझे मिलवाया। वे प्रतिबद्ध विद्वान और बेहद विनम्र थे। आज की सरकारों और विश्वविद्यालयों के कई मुखिया कितने गुरुर में रहते हैं। हम घंटे भर बतियाते रहे और दिलचस्पी के कई विषय धर्म से लेकर विज्ञान तक निकल आए।

मौजूदा यात्रा प्रतिबंधों और मेरी अपनी स्वास्थ्य समस्याओं के चलते इसमें शक है कि भारत दोबारा लौट पाऊंगा या नहीं। लेकिन मेरे लिए यी भारी खुशी होगी कि ऋलीन और प्योली एक बार संपर्क साध पाऊं। क्या आपके लिए उनका ई-मेल साझा करना संभव है?

आशा है, इस कठिन दौर में आप अपना संयम बनाए रख पा रहे होंगे। मेरी पत्नी जैकी भी पिछले साल अप्रैल में गुजर गईं। हम अभी भी उसके बिना जिंदगी पटरी पर लाने की कोशिश कर रहे हैं। लेकिन हमें अपनी कई साल की यादों का सहारा है। आशा है, आप भी अच्छे दिनों को याद कर रहे होंगे।

आप और पूरे परिवार को आशीर्वाद।

नॉर्मन

(पिट्सबर्ग विश्वविद्यालय, अमेरिका में डॉ. स्वाति के शोध पर्यवेक्षक)

स्वाति दत्ता – एक संक्षिप्त शब्दचित्र

मृदुल मोदी

स्वाति से मेरा प्रगाढ़ परिचय कोई बहुत सुदीर्घ नहीं था। वह लगभग तीन वर्षों तक रहा जब वह अविवाहित ही थीं। संभवतः इसीलिए मेरे मन में वह अब भी स्वाति दत्ता ही हैं। हम पहली बार सन् 1967 में आईआईटी में मिले जहां उन्होंने भौतिकी में स्नातकोत्तर कोर्स में दाखिला लिया था और मैंने मेटालर्जी में। आरंभिक संकोच के खत्म होते ही हम अक्सर मिलते -- लगभग हर सोमवार से शुक्रवार -- पर यहां बस हम दोनों ही नहीं होते।

आईआईटी कैंपस में स्थिति अजीब सी थी। समग्र छात्र समूह में 18-19 वर्ष के आयुवर्ग में लगभग 2500 या उससे भी अधिक छात्र थे। जबकि छात्राओं की संख्या 1966 में 5 से अधिक नहीं थी। और तब, 1967 में कुछ आठ दस छात्राओं ने विभिन्न इंजीनियरिंग और अन्य विज्ञान कोर्स में दाखिला लिया। जैसे कि अपेक्षित था, सभी युवा छात्रों में अत्यधिक उत्साह था।

फिर भी, सभी प्रभावशाली छात्रों से मेरी ही मित्र मंडली के सातों सदस्यों का परिचय सबसे पहले हुआ। वो परिस्थितियां और उनसे उपजे बाद के घटनाक्रम अत्यंत रोचक और रोचक रहे। आज उनका ज़िक्र होना ही चाहिए।

एक शाम, समय बिताने की मंशा से हम सातों राधाकृष्ण उडुपी तक चलते हुए जा रहे थे। जैसे ही हम गर्ल्स हॉस्टल के पास से गुज़र रहे थे, हमारे सदा के जोशीले और तनिक दीवाने अगुवा सुनील ने चिल्ला कर कहा, कि हम सब कॉफ़ी के लिए जा रहे हैं और क्या कोई कन्या हमारे साथ चलना पसंद करेंगी? और मेरे आश्चर्य की तब सीमा ना रही जब उनमें से पांच हमारे साथ आ गईं। सब कुछ कितना सरल था! रोचक घटना लौटते हुए घटी। हम किसी फ़िल्म के गीत की चर्चा कर रहे थे और बहस इस बात पर हो रही थी कि फ़िल्म थी कौन सी। लड़कियां एक नाम पर डटी थीं और हमारे अनुभवी और चालाक नेता अनिल, जिनकी एक महिला मित्र पहले से ही थीं, दूसरे नाम पर इसरार कर रहे थे। मुझे पता था अनिल गलत था पर शायद जीवन के सबसे समझदार निर्णायों में से एक लेते हुए, मैं चुप रहा। अंत में ये तय हुआ कि सही जवाब का पता लगाया जाए और हारने वाली टीम जीतने वाले को दूसरे दिन राधाकृष्ण में कॉफ़ी पिलाएगी। अनिल का प्लान कामयाब हुआ और उसके बाद से ही हम बारहों लोग हर शाम साथ बिताने लगे।

सभी लड़कियां बेहद मेधावी थीं। आईआईटी में दाखिले के लिए उन्हें ऐसा होना भी था। हमारी ये मुलाकातें हमेशा शाम को ही होती। दिन भर हम अपने अपने कठिन पठन पाठन में व्यस्त रहते।जब भी हम साथ होते तो हमारी बातचीत कभी भी बहुत तकनीकी, बहुत प्रबुद्ध, या बहुत राजनैतिक या ही बहुत निजी नहीं होती पर वह कभी भी अनाप शनाप भी नहीं होती। स्वाति और ज्योति दोनों ही बहुत तेज़, मेधावी, हाजिर जवाब और आपने बात को पुरजोर अंदाज़ से रखने वालों में से थीं। उमा और वासंती थोड़ा शांत थीं, पुरुषों के साथ थोड़ा संकोच से भर जाती थीं पर इस नए अनुभव से धीरे धीरे सहज होना सीख रही थीं। अरुणा अधिकतर एक अबूझ स्पेस में होती, जहां कभी कभी तो उन तक पहुंचना असंभव सा होता। जैसे जैसे हम सब एक दूसरे को जानने लगे हम बारहों में एक ऊष्म, दोस्ताना जुड़ाव बनता गया। चूंकि हम सभी लड़के एक समूह में ही उनसे मिला करते थे तो उनमें से किसी से भी तब एक अलग आत्मीय जुड़ाव असंभव ही था।

1968 के पूर्वार्द्ध में हम सात में से चार उत्तीर्ण हो कर चले गए, और पीछे बस शरद, राकेश और मैं बचे। ज्योति और सुनील की तबतक सगाई हो चुकी थी। उसके छः महीनों के बाद स्वाति और राकेश की भी सगाई हो गई। उन्हीं छह महीनों में मैं स्वाति को भली भांति जान सका। हम सब कई शामों में साथ होते। तब ही मैंने उनका अपने भाई बहनों से गहरा जुड़ाव, हिंदी और अंग्रेज़ी में उनका धाराप्रवाह होना, संगीत के प्रति उनके प्रेम, और उनके मानसिक जोड़ घटाव -- वैज्ञानिक और तार्किक युक्तिवादी मानसिकता के साथ ही साथ सामाजिक असमानताओं के प्रति प्रतिबद्धता -- दोनों ही, और हमेशा ही एक खदबदाता हुआ हास्यबोध का ज्वालामुखी, एक बेलौस ठहाका जो गंभीरता के पतले ऊपरी सतह को तोड़ता हुआ उभर आता था, इन सबको जान सका। राकेश से जुड़ने के बाद वो सामाजिक मुद्दों में और भी सक्रिय हो गईं।

आईआईटी से उत्तीर्ण होने के बाद मेरा उनसे संपर्क कम होता गया। हम उनके भाई के मुंबई के कोलाबा स्थित आवास पर मिला करते थे जहां दादा और बोउदी हमेशा आत्मीयता से हमारा स्वागत करते थे। राकेश के साथ उनका विवाह, पुत्र ऋजु का जन्म, उसे दूर रह कर पालने की कठिनाइयां, उनका विदेश प्रवास, बनारस में बसना, मेरी पत्नी भारती से पहली स्नेहसिक्त भेंट, प्योली का जन्म, बनारस हिन्दू विशवविद्यालय में अध्यापन, तलाक, अफलातून से विवाह, समाजवादी जन परिषद की गतिविधियां, बच्चों के विवाह, सेवानिवृत्ति, 2017 में हमारा बनारस आना और स्वाति अफलातून के साथ ठहरना और उनके अंतिम दिन, सब मेरे मन मस्तिष्क पर एक झटके से घूम रहे हैं। उनका देहावसान इतने हाल ही में हुआ है कि उसके बारे में लिखना तो क्या उसे स्पष्टता से याद कर पाना भी मेरे लिए असंभव है।

मैं हृदय से क्षमाप्रार्थी हूं कि शायद मैं पैंतालीस वर्ष पहले घटी हुई बातों को स्पष्टता से कह भी पाया या नहीं। उनकी आत्मा को शाश्वत शांति मिले।

(आई.आई.टी., मुम्बई के दिनों के मित्र)

अनुवादक– अपर्णा अनेकवर्णा

मेधा, हास्यवृत्ति तथा अन्याय का प्रतिकार

विद्यानन्द नान्जुन्दैया

मेरी स्वाति जी से मित्रता पचास साल पहले ही शुरू हो गई थी। हालांकि हमने इस मित्रता को 15-20 साल पहले दुबारा पुनर्जीवित किया। मेरे ज़हन में उनकी सबसे ज्वलंत यादगार अपने सहपाठी काल के हैं। हम सबसे पहले 1967 के जून या जुलाई महीने में मिले थे, जब हम दोनों आई॰आई॰टी॰ बॉम्बे के एम.एससी. भौतिक-शास्त्र के पाठ्यक्रम में दाखिला ले रहे थे। यह एक छोटा क्लास था, मुश्किल से एक दर्जन छात्र रहे होंगे। स्वाति दो महिला छात्रों में एक थीं, दूसरी थीं ज्योति ठकार (अगर आज के समय के जीव विज्ञान के कक्षाओं के लिंग अनुपात को देखेंगे तो इसका विपरीत मिलेगा)। ये दोनों ही मेधावी, मित्रवत् और सुखद व्यक्तित्व की थीं। इनके सामाजिक हुनर तो पुरुष छात्रों से काफ़ी ज़्यादा थे। दोनों की खासियत थी कि दिल खोल कर हंसती थीं, खास़कर हमारे एक और सहपाठी प्रकाश कृपलानी से जब सामना होता था और वे कुछ ऊटपटाँग बातें करते थे, जो बाद में पता चलता था की सिर्फ़ टांग खींचने के लिए किया गया है।

कुछ को छोड़ कर हममें से सबके लिए यह पहला मौक़ा था जब हम ऐसे भौतिक-शास्त्रियों के गहन सम्पर्क में आए थे जिन्होंने मूलभूत खोज की थी और जिनके शोध-पत्र भी प्रकाशित हुए थे। भौतिक शास्त्र के सिद्धांतों के बारे में उनकी दक्षता और कई मौक़ों पर उनके शिक्षण कौशल (यहाँ मैं ए एस महाजन और पी पी काने का ज़िक्र करना चाहूँगा) के हम सब क़ायल थे। सवाल पूछने से स्वाति कभी भी हिचकती नहीं थी और जबतक जबाब उनके समझ न आ जाए, छोड़ती नहीं थीं। उनके व्यक्तित्व में मेधा, हास्यवृत्ति, उदारता और ग़लत के विरुद्ध खड़े होने का अद्भुत संगम था। इन गुणों के कारण वे अपने सहपाठियों के बीच जल्द ही लोकप्रिय हो गयीं (लेकिन ये सभी अध्यापकों के लिए ऐसा नहीं था)। वे सही मायनों में एक बहिर्मुखी प्रतिभा थीं, कभी भी किसी भी विषय पर बहस के लिए तत्पर। अभी याद करता हूँ तो शायद ही कभी स्वाति से मिला हूँ जब वे मुस्कुरा नहीं रही हों और किसी के साथ बहस में करते हुए अपनी बात को तर्क के आधार पर मनवा न लें। जब हम दोनों अपने पीएच. डी. के लिए अमेरिका चले गए तो सम्पर्क टूट सा गया, गाहे-बगाहे हमारे एक आम-दोस्त, विवेक मोंटेरो, जो सेंट ज़ेवियर्स कालेज में मुझसे एक साल पीछे के क्लास में था और शायद स्वाति के साथ ही अमेरिका में अपनी पी एच डी कर रहा था, उसके माध्यम से कुछ हाल-चाल पता चल जाता था।

क़रीब तीस सालों के अंतराल के बाद संयोग से हम एक बार फिर तब मिले जब मैं बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के दौरे पर था। हमें एक दूसरे को पहचानने में कुछ पल लगे। मुझे आश्चर्य भी हुआ और आश्वस्त भी की इतने सालों बाद भी स्वाति ने अपने उन सभी गुणों को बरकारार रखा था जिनके लिए मैं उन्हें याद करता था। उनसे व्यक्तिगत तौर पर मिलना और विचारों के आदान-प्रदान ने मेरे उत्साह को एक बार फिर ताज़ा कर दिया। उनमें अन्याय से लड़ने और भविष्य के प्रति आशावादिता अभी भी उतनी ही तीव्र थी जैसा मैंने बरसों पहले महसूस किया था। कुछ साल पहले बंगलोर के सेंटर ऑफ़ ह्यूमन जेनेटिक्स में जब एक सेमिनार में वे बोलीं तो हमारे छात्र उन जैसे व्याख्याता से पढ़ नहीं पाने का अफ़सोस करने लगे। जब स्वाति अपने अध्यापन सेवा से सेवानिवृत्त हुईं तो मुझे लिखा 'मैं हठी हूँ, इतनी आसानी से धुंधली नहीं हो जाऊँगी'। मेरे लिए स्वाति यही सार है।

एक आफ़सोस रहेगा की मेरा स्वाति के साथ पिछले साल भर से पत्राचार नियमित नहीं रहा जिस कारण मई में उनके गिरते स्वास्थ्य के बाबत मैं अनभिज्ञ रहा। मुझे खुशी है की स्वाति जी के जीवन और कार्यों को संकलित किया जा रहा है। आशा करता हूँ बी एच यू के उनके शैक्षिक और सामाजिक उपलब्धियों को इस संकलन में अवश्य समाहित किया जाएगा ताकि स्वाति कितनी असाधारण व्यक्तित्व थीं, यह दस्तावेज गवाह रहे।

(प्रोफेसर, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइन्स, बंगलुरु)

अनुवाद– भारत भूषण चौधरी

स्वाति की याद में

अनु वेणुगोपालन

पहली दफा स्वाति से मैं 2005 में मिली थी। मैंने एंड्रयू से एक भौतिकशास्त्री का जिक्र सुना था, जिसकी बॉयो-इन्फॉरमेटिक्स में काम करने की भारी दिलचस्पी है और इसी सिलसिले में जेएनयू में आ रही है। वे दिन 'बॉयो-इन्फॉरमेटिक्स सेंटर' (बीआइसी) की गहमागहमी के दिन थे और सेंटर में एंड्रयू के छात्रों का एक बेहद जीवंत और सक्रिय समूह था। उनके साथ दोपहर और रात का भोजन और चाय के दौर हमारी जिंदगी का हिस्सा बन गए थे। एंड्रयू तो अपने शोध में गहरे धंसे थे, मैं चार साल की मीरा की हंसी-खुशी में खोई हुई थी, जो मेरी जिंदगी का बुलंद खुशनुमा एहसास थी, वरना कश्मीरी गेट तक आने-जाने के थकाऊ सिलसिले और 18 साल के बच्चों से भरे क्लास को पढ़ाना बोरियत भरा था। ऐसे ही एक दिन डिनर में हमारे सामान्य गैंग के अलावा एक और की व्यवस्था करने की बात आई। हमारी कार में स्वाति बैठीं और हमारा परिचय हुआ। वे खुश और उत्साहित दिख रही थीं। उन्होंने मुझसे कहा कि वे बनारस में हैं और एक साथी भौतिकशास्त्री से मिलकर खुश हैं। मुझे याद है कि मैंने पूछा कि वे बनारस से ही हैं। उनका जवाब था कि वे मध्य प्रदेश की बंगाली हैं। मैं तपाक से कहा, ''अरे वाकई! किशोर कुमार की तरह?'' उनकी आंखें खिल उठीं और मेरी समझ से वही वह पल था जिसमें कायम हुआ विशेष जुड़ाव लगभग डेढ़ दशक तक जारी रहा।

स्वाति खुशमिजाज और हमेशा गर्मजोशी से भरी रहती थीं। उन्हें देखकर कोई भी फौरन जान जाता कि उनका दिल बच्चे की तरह कोमल है। वे युवाओं में भी और उम्रदराज लोगों में भी घुलमिल जाती थीं। वे युवा छात्रों, वरिष्ठ प्रोफेसरों हर किसी से एक भाव से बात कर पातीं। मुझे कभी एहसास ही नहीं हुआ कि उनकी उम्र कितनी है। वे खूबसूरत साडि़यां पहनती थीं। हंसी-मजाक की तो उनमें गजब की काबिलियत थी। उनकी कई कहानियां सुनकर तो हम लगभग लगातार हंसते ही रहते थे। एंड्रयू, मैं, छोटी-सी मीरा, बीआइसी का छात्रों का गैंग और स्वाति मानो एक छोटा परिवार बन गए थे, जो हमेशा बीआइसी और कावेरी हॉस्टल के हमारे घर के बीच चहलकदमी करते रहते।

स्वाति जब भी दिल्ली आतीं, अक्सर हमारे घर ही ठहरा करतीं। मीरा से उनका खास लगाव बन गया था और जब भी वे आतीं उसके लिए छोटा-मोटा भी कुछ लेकर आतीं। बाद में वे मुझसे कहा करती थीं कि बॉयो-इन्फॉरमेटिक्स और जेएनयू से जुड़ने का सबसे अच्छा तोहफा हमारी दोस्ती है। समय बीतने के साथ मैंने जाना कि स्वाति का संसार बहुत व्यापक है और उनका अकादमिक क्षेत्र तो उनकी काफी व्यापक और उद्देश्यपूर्ण जिंदगी का एक हिस्सा भर था। मैं उनकी जिंदगी के सिद्धांतों, उनकी विचारधारा, उनकी राजनैतिक सक्रियताओं, उनके परिवार के बारे में जाना। स्वाति के जीवन के कई पहलू हैं। उनके जरिए हमने अफलातून जी को जाना, जो देश में सबसे ऊंचे कद के गांधीवादी नारायणभाई देसाई के पुत्र हैं, उनके अद्भुत बच्चों प्योली और ऋजू, उनकी 'नतिनी' शिवली और 'नाती' इकबाल से परिचय मिला। शिवली और इकबाल दोनों जेएनयू में ही पढ़ते थे। हमने शिवली और इकबाल के पिता सुनील भाई को भी जाना-समझा। हम हमेशा ही जेएनयू में अनोखे सुनील स्मृति व्याख्यान सुनने स्वाति के साथ जाया करते।

हम भौतिक शास्त्र के बारे में भी बातें किया करते और स्कूल ऑफ फिजिकल साइंसेज में कई सेमिनारों में भी साथ-साथ जाते। उन्होंने हमें कई किताबें दी थीं। मीरा के लिए हिंदी में कहानियों की किताबें ले आई थीं। मैंने सुना है कि वे अद्भुत अध्यापक रही हैं। काश! मैं भी उनका कोई लेक्चर सुन पाती। स्वाति लगातार ई-मेल के जरिए मुझसे संपर्क बनाए रखती थीं। वे कभी त्यौहारों खासकर क्रिसमस और ओणम पर हमें शुभकामनाएं देना नहीं भूलती थीं। जब भी किसी अकादमिक विषय पर उन्हें एंड्रयू से जवाब नहीं मिल पाता तो वे उसकी प्रति मेरे मेल पर भी भेज देती थीं, ताकि मैं जवाब देने को एंड्रयू का जीना मुहाल कर दूं। वे हमेशा बड़े प्यार और स्नेह के साथ मुझे लिखा करतीं और अंत में 'स्वाति' लिखा होता था लेकिन मुझे वह खास ईमेल हमेशा याद रहेगा जिसके अंत में वे जाने-अनजाने 'अम्मा' लिख गई थीं। मुझे मालूम था कि वे अनजाने में ही लिख गई हैं लेकिन मैंने उसका जिक्र

उनसे कभी नहीं किया। वह मेरे दिल को छू गया था और हमेशा यादों में बना रहता है।

समय के क्रम में उनका जेएनयू में आना काफी घट गया, लेकिन जब भी वे दिल्ली आतीं, हमसे थोड़ी देर के लिए भी मिलने जरूर आती थीं। मैं अपने युवा दिनों में खूब घूमा करती थी और ट्रेन यात्राएं भी अच्छी लगती थीं। लेकिन हमारी जिंदगी में मीरा आई तो मेरी यात्राएं कम हो गईं और ट्रेन से आने-जाने में तो एक तरह से विरक्ति-सी हो गई थी। लेकिन जब स्वाति का 2012 में महिला महाविद्यालय में लेक्चर देने का न्यौता आया तो मैं इनकार नहीं कर सकी। मैं ट्रेन से एक दिन के लिए बनारस गई और पहली दफा बीएचयू को देखा। अब लगता है, काश! कुछ दिन और स्वाति के साथ बिता पाती तो बनारस और बीएचयू को कुछ बेहतर जान पाती और स्वाति के घर जाकर उनके चर्चित 'कटहल' के कटलेट का स्वाद उड़ा पाती।

हमारे संपर्क कईं बार बहुत दिनों तक नहीं हो पाते थे मगर वे कभी अपनी जिंदगी की अहम घटनाओं में हमें जोड़ने से नहीं चूकती थीं। ऋजु की डॉली से शादी, प्योली की सोमेश से शादी और सबसे बढ़कर इमारा रोज का जन्म। हमें इमारा के पहले जन्मदिन की पार्टी की खुशनुमा यादें ताजा हैं। काश! हम कुछ फोटो ले पाते। इमारा के हमेशा हंसते कोमल चेहरे में मानो अपनी नानी जैसी अद्भुत आंखें हैं। मैं आखिरी बार स्वाति से तब मिली थी जब वे दिल्ली आई थीं और हमने साथ-साथ डिनर किया था। एंड्रयू शायद बेंगलूरू गए थे। स्वाति ने मुझे फोन पर बताया कि उन्हें कुछ चाइनीज खाने का मन कर रहा है। हम मीरा के साथ वसंत विहार में गोल्डन ड्रैगन में गए और मजेदार डिनर किया। तब मुझे यह कहां पता था कि यह हमारी आखिरी मुलाकात है!

काफी बाद हमारी फोन पर बात हुई थी, जब स्वाति अपनी भतीजी स्मिता के लिए दिल्ली में कोई व्यवस्था करने में जुटी थीं। स्मिता बीमार थीं और एम्स में भर्ती थीं। हालांकि स्वाति की अपनी सेहत गड़बड़ चल रही थीं, फिर भी उन्हें स्मिता की चिंता ज्यादा थी। अगले कुछ महीने मेरे लिए अंधियारे जैसे थे। मैं जिंदगी की सबसे कठिन संघर्ष में उलझी थी। उसी दौरान वह हृदयविदारक खबर आई कि स्वाति नहीं रहीं। सहसा विश्वास ही नहीं हो पाया, आज मेरे लिए उसे स्वीकार कर पाना कठिन है। आज, मैं खुद को सौभाग्यशाली मानती हूं कि मैं स्वाति को जानती हूं, ऐसी स्त्री जो अपनी अलग लकीर कायम की, जिसे जिंदगी से प्यार था, एक विनम्र नारीवादी, एक अकादमिक जिसने अपनी पसंद की राह चुनी। बड़ी विनम्रता के साथ वैसा ही जीवन जीया, जैसा चाहती थीं। हमारे दिल में उनकी यादें हमेशा बनी रहेंगी और अफलू जी, प्योली, ऋजु और इमारा रोज से हम परिवार की तरह जुड़े रहेंगे।

जी.जी.एस. इन्द्रपस्थ विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

अनुवाद– हरिमोहन मिश्र

पेंचीदे विषय को सरल कर देने वाली...

मैं सम्माननीय स्वाति मैम के निधन की खबर सुनकर सन्न रह गई। वे विचारवान और उदार थीं। जब भी मुझे अपने करिअर के बारे में सलाह की जरूरत होती, मुझे मालूम था कि कभी भी उन्हें बेझिझक फोन कर सकती हूं। मेरे मन में स्वाति मैम की यादें हमेशा ताजा रहेंगी। वे अपने देश और विदेश में शोध के अनुभवों और किस्सों से हमारा मनोबल बढ़ाया करती थीं। मुझे आज भी सिस्टम्स बॉयोलॉजी (एम.टेक बॉयो-इन्फारमेटिक्स, 2012) की अपनी पहली क्लास याद है, इस बेहद पेचीदे विषय को उन्होंने कैसे एकदम सरल तरीके से समझा दिया था। मैंने तो सोचा भी नहीं था कि इस विषय में कभी पास भी कर पाऊंगी, लेकिन मुझे पूरे अंक (50/50) मिले। मुझे आज भी याद है कि कैसे मुस्कराते हुए उन्होंने जांचा हुआ हमारा सिस्टम्स बॉयोलॉजी का उत्तरपुस्तिका दिखाई थी। उन्होंने मुझे अपने केबिन में बुलाया और मेरी पीठ थपथपाई। उन्होंने कहा, ''वाह, प्रियंका! बहुत खूब!! मुझे तुम पर गर्व है। मैं ढूंढ़ रही थी कि कोई छोटी-सी गलती भी तो मिले लेकिन नहीं खोज पाई। तुमने तो आधा अंक काटने का मौका भी नहीं छोड़ा। ऐसा इन दिनों बिरले ही देखने को मिलता है।''

स्वाति मैम बेहद सम्मानित अध्यापक थीं और उनका जाना हम सबके लिए भारी क्षति है। आज वे भले हमारे बीच नहीं हैं लेकिन विज्ञान बिरादरी और उनके विद्यार्थियों पर उनका गहरा असर बना रहेगा। मेरी श्रद्धांजलि!

प्रियंका कुमारी

पी.एचडी, लीग विश्वविद्यालय, बेलजियम, यूरोप

स्वाति : उत्साह, विनम्रता, गर्मजोशी

राम रामस्वामी

पहली दफा मैं स्वाति से 1987 में मिला जब बीएचयू या असके आसपास गया था। वह भारतीय विज्ञान अकादमी की सभा थी। अलबत्ता, मुझे याद नहीं है कि हमारे बीच क्या बातचीत हुई, लेकिन वह मेरे व्याख्यान (जो केऑस सिद्धांत के कुछ पहलुओं पर था) से संबंधित ही रही होगी। स्वाति की दिलचस्पी उस विषय में थी और भौतिक शास्त्र तो उनका अपना क्षेत्र ही था।

उनके पास हमेशा सवाल होते थे। कई साल बाद बीएचयू की दूसरी यात्रा में मैं कंप्यूटेशनल बॉयोलॉजी के क्षेत्र में अपने नए काम के बारे में व्याख्यान दे रहा था और स्वाति के पास एक नहीं, अनेक सवाल थे। इत तरह वे जेएनयू पहुंची, जहां मैं पढ़ाता था और जल्दी ही वे पूरी तरह नए विषय बॉयो-इन्फॉरमेटिक्स में एक सेमिस्टर (या एक साल?) बिताने की व्यवस्था कर पाईं। जल्दी ही वे स्कूल ऑफ इन्फॉरमेशन टेक्नोलॉजी (जैसा उसे तब कहा जाता था, अब उसे स्कूल ऑफ कंप्यूटेशनल ऐंड इंटीग्रेटिव साइंसेज कहा जाता है) के सभी छात्रों के साथ घुल-मिल गईं और जितना संभव हो सीखने लगीं।

यही स्वाति का विशेष गुण था। वे अपने सीखने में कभी उम्र, वरिष्ठता, या पद को बाधा नहीं बनने देती थीं। उन्हें कभी नई चीजें सीखने में कोई झिझक नहीं हुई। इससे उनके संबंध अनेक लोगों से बने। उन्होंने जेएनयू के कई छात्रों को पढ़ने की दुविधाएं दूर करने में मदद की। वे वाकई एक प्रभावी गुरु थीं। मेरा मानना है कि यही अनुभव उन्हें महिला महाविद्यालय में काम आया। वे जब इस विभाग को आकार दे रही थीं तो मैं उनकी मदद को वहां गया था। उससे उनके गहरे लगाव का पता छात्राओं की बातचीत से भी लग रहा था।

हाल के वर्षों में संपर्क घट गया था। हमारा आना-जाना भी घटा और मौके भी घट गए। वे हमेशा ही उन दिनों मुझे शुभकामनाएं दिया करती थीं, जो मुझे प्रिय हैं। शायद तकरीबन साल भर पहले मेरी स्वाति से आखिरी बातचीत हुई थी। मेरे अकादमिक क्षेत्र से इतर कुछ सवाल थे और उन्होंने फौरन उसका जवाब दिया। उनका उत्साह, विनम्रता, गर्मजोशी मुझे याद आता रहेगा।

(विजिटिंग प्रोफेसर, रसायन शास्त्र, आईआईटी, दिल्ली)

स्वाति दीदी आपके सपनों को मंजिल तक पहुचायेंगे।

स्वाति दीदी से पहली मुलाकात विद्या आश्रम में एक बैठक के दौरान हुई शिक्षा पर आधारित कई बैठकों में मैंने उनको सुना। समान शिक्षा पर बहुत ही अच्छी समझ थी दीदी की। एक देश समान शिक्षा अभियान शुरू होने के बाद दीदी से लगातार बातचीत और वाद संवाद होता था। समान शिक्षा पर आज जो मेरी समझ है उसमे स्वाति दीदी का बहुत योगदान है। एक देश समान शिक्षा अभियान को समय समय पर दीदी का मार्गदर्शन मिलता रहता था। जब दीदी की तबियत खराब होने की खबर अफलातून भाई के माध्यम से मिली तो विश्वास नही हो रहा था कि अभी कुछ महीने पहले ही तो दीदी दीदी से मुलाकात हुई थी तो वह बिल्कुल स्वस्थ थी और आज ऐसा के सब कैसे हुआ। हम सभी को उम्मीद थी कि दीदी एक बार फिर हम लोगों के साथ नारे लगाएंगी और हम सामाजिक लड़ाई को आगे बढ़ाएंगे। दीदी अपनी बीमारी से भी उसी मजबूती के साथ लड़ाई लड़ी। पर दीदी का साथ सभी के साथ यहीं तक था, पर कोई बात नहीं दीदी हमारे विचार और सोच में हमेशा जिंदा हैं और रहेंगी। दीदी के विचारों और संघर्ष को हम आगे बढ़ाएंगे।

दीन दयाल सिंह, एक देश समान शिक्षा अभियान, उत्तर प्रदेश

एक महान शिक्षक डॉक्टर स्वाति की स्नेहिल स्मृति में

डॉ. शिखा सिंह

हम लोग उन्हें स्वाति मैम के नाम से संबोधित करते थे। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के कालेज महिला महाविद्यालय में डॉक्टर स्वाति ने नए कोर्स बायोइन्फोरमेटिक्स की स्थापना की। हम लोग महिला महाविद्यालय से बायोइन्फोरमेटिक्स में स्नातकोत्तर डिग्री पानेवाले पहले बैच थे। उन्होंने सुनिश्चित किया कि हमारा परिचय इस विषय की सही संकल्पनाओं से हो ताकि हम बाहर की दुनिया की चुनौतियों को झेल सकें। नए पाठ्यक्रम को समझाने के लिए वह बी.एच. यु. के मुख्य विभाग के शिक्षकों से समन्वय करतीं और बाहर से अतिथि शिक्षकों को आमंत्रित करती थीं। हमने उनसे ही वेब और इन्टरनेट पर उपलब्ध पाठ्यक्रम से परे जो ज्ञान है उसे प्राप्त करना और उपयोग में लेना सीखा। और बाद में हमने इस अर्जित ज्ञान का अपने शोध और प्रशिक्षण में उपयोग किया। वह एक अच्छी शिक्षक होने के साथ-साथ अनुशासन प्रिय भी थीं। अगर कोई अनुशासन तोड़ता तो वह अपनी अप्रसन्नता व्यक्त करतीं। वह सख्त मिजाज़ थीं लेकिन छात्र/छात्राओं के प्रति उनके मन में हमेशा सहानुभूति रहती इसलिए हम उनको अपनी चिंताए और सवाल बेझिझक बता सकते थे। वो दया और सख्ती का एक मिश्रण थीं इसलिए हम उनसे बेझिझक बात करते पर साथ ही एक शिष्टाचार बनाए रखते।

शायद हमारे बायोइन्फोरमेटिक्स के पहले बैच होने के कारण, स्वाति मैम हमारे बी. एच. यू. से निकल जाने के बाद भी हमारे भविष्य के उद्देश्य और लक्ष्य को हासिल करने में अपना पूरा मार्गदर्शन देती रहीं। वो हमारी समस्याओं को सुनने के लिए हमेशा उपलब्ध रहती या तो मिलकर या ईमेल के द्वारा। और वो चाहे कितनी भी व्यस्त क्यों ना हो पर ईमेल का हमेशा जवाब देतीं। उनकी बीमारी का पता चलने के कुछ दिन पहले ही उन्होंने मेरे एक ईमेल का उत्तर दिया था।जो उनके अन्य ईमेल की तरह उनके सदाबहार कौतूहल और मदद करने की इच्छा से भरा हुआ था। वह हमारे दिल में हमेशा रहेंगी। और उनके द्वारा पढ़ाया गया विज्ञान और जीवन के सबक दोनों ही हमें दिशा दिखायेंगे जब हम खुद अन्य वैज्ञानिकों के भविष्य को मूर्त रूप दे रहे होंगें।

2007 की कक्षा की ओर से प्रेषित—

(एसोसिएट रिसर्च असिस्टेंट, डिपार्टमेंट ऑफ़ बायोलॉजिकल साइंसेज,
कोलंबिया यूनिवर्सिटी, न्यू यॉर्क सिटी,
संयुक्त राज्य अमरीका)

उनका जीवन एक बड़े लक्ष्य के लिए पूंजी की गिरफ्त में जकड़ी मनुष्य की सृजनात्मकता की लड़ाई के लिए समर्पित था। मैं साक्षी हूँ कि जब भी उनकी राजनीति को देखा तो वे किसी भी तरह की सामंती और पितृसत्तात्मक सोच का पुरजोर विरोध करती रही, चाहे किसी तथाकथित बाहरी के समक्ष अपनी पार्टी के ही किसी वरिष्ठ सदस्य की आलोचना क्यों न हों। उनका यह आचरण ही मेरे मन में उनके और उनके राजनीतिक दल समाजवादी जन परिषद के प्रति एक विश्वास पैदा करता रहा आज भी जब मेरी दृष्टि कई मायनों में अलहदा विकसित हुई है और मैं एक समझ से दुनिया में शोषण के वस्तुगत पड़ताल कर रहा हूँ। मेरे जीवन में यदि मेरे समक्ष सुनीलजी, स्वातिजी, अफ़लातून जी, फागराम भाई, जैसे संघर्षशील व्यक्तित्व न होते तो शायद थोड़ा बहुत जो ठहराव और अंतर्मन के गहरे से सत्य के प्रति जो आस्था विकसित हुई है वे शायद नहीं ही होती। यह हमारी जिम्मेदारी है कि साथी स्वातिजी के संघर्षों को ओर आगे बढ़ाएं। उनकी मुक्ति (भौतिकवादी अर्थ में मुक्ति) इस संघर्ष के सामान्यीकरण में ही है। उनकी मुक्ति ही हमारी भी मुक्ति है। सब मेहनतकशों की मुक्ति है।

- अनूप बाली, शोधछात्र, अम्बेडकर विश्वविद्यालय, दिल्ली

श्रद्धापूर्ण श्रद्धांजलि

अंजुम महताब

स्वाति मैडम मेरे लिए मेरी शिक्षिका ही नहीं बल्कि मेरी मित्र भी थीं। उनके साथ बिताए हुए दिन अनमोल हैं। उनके साथ बीते दिनों की कुछ यादें आप सबके साथ बांटती हूं।

बीएससी में दाखिला लेने से पहले से ही मेरा स्वाति मैडम से परिचय रहा है। उनका बेटा हमारे केन्द्रीय विद्यालय में ही पढ़ता था और कई बार उन्हें रिक्शे में आते-जाते देखा करती थी। मिलने का मौका पहली बार बीएससी –1 के दाखिले के दौरान मिला।

बीएससी के तीनों सालों के दौरान वे हमारी टीचर रहीं, किसी साल क्लास लिए तो किसी साल प्रैक्टिकल्स लेती थीं। दोनों के दौरान उनका पढ़ाने का अंदाज़ बेबाकी था और साथ ही सरल भाषा का प्रयोग विषय को और भी दिलचस्प बना देता था। खासतौर पर प्रैक्टिकल्स के दौरान जो चर्चा होती थी वह काफी रोमांचक व खुलकर होती थी। हम सभी छात्राएं काफी सवाल करते थे और वे बड़े शौक से सभी के जवाब देती थीं। कभी सुस्त नजर नहीं आती थीं। उन्हें हर जवाब को समझाने में जैसे बड़ी खुशी मिलती थी। जब बीएससी के तीसरे साल में मैंने Physics (Pons.) लिया तब हमारा आपसी संपर्क और भी बढ़ गया। Optics और Electricity के प्रैक्टिकल्स करने में कुछ खास मजा आता था। प्रैक्टिकल्स के दौरान हम लड़कियां कभी-कभी डार्क रूम में बहुत सी बातचीत व हंसी मजाक भी करते थे। तब वो अच्छी डांट भी लगाती थीं। हम लोग थोड़ी देर के लिए चुप हो जाते मगर फिर से हो-हल्ला करने लगते थे। कभी महसूस ही नहीं हुआ कि इतनी मस्ती करते हुए Physics के इतने कठिन व रोचक विषय समझते गए। बीएससी के तीन साल कैसे बीत गए पता ही नहीं चला।

स्वाति मैडम के पढ़ाने के अंदाज के अलावा हम सब उनकी उन्मुक्त विचारधारा से बहुत अधिक प्रभावित थे। वे सामाजिक समानता की पहल दिखाते हुए अक्सर समाज के कमजोर वर्ग के लिए कुछ करने की इच्छा रखती थीं। एक टीचर के अलावा उनका अपना एक अलग व्यक्तित्व हमारे लिए प्रेरणादायक था।

एमएससी के दौरान उनके साथ मिलना जुलना काफी कम हो गया था। लेकिन, बीच-बीच में जब भी मुलाकात हुई बहुत सारी बातें हुईं। एमएससी के बाद जब मुझे इसरो में एक वैज्ञानिक के पद पर नौकरी मिली, तब मैं यह खबर लेकर उनके घर पहुंची मगर जल्दी में मिठाई ले जाना भूल गई। खबर सुनते ही बोलीं कि बड़ी अच्छी खबर लाई हो, चलो तुम्हारा मुंह मीठा कराती हूं। गुड़ खिलाकर बहुत सारी बातें की। मैं बनारस छोड़ने के बाद उनके ज्यादा संपर्क में नहीं रह पाई। अगली मुलाकात 1998 में मेरी शादी के दौरान हुई। बहुत संक्षेप में, फिर बहुत सालों तक मिलने का मौका नहीं मिला। एक बार जब बनारस गई तो उनकी ई-मेल आईडी लेकर आई। बीच-बीच में हमारे बीच ई-मेल द्वारा बातचीत होती रही। 2014 में मैं, अपनी बेटियों व पति के साथ अपने महिला महाविद्यालय गई। तब उनके साथ मुलाकात हुई, वे कुछ दिनों पहले ही सेवानिवृत्त हुई थीं। मुझे तो उनमें कोई बदलाव नहीं दिखा, हमेशा की तरह उड़ीसा की संबलपुरी साड़ी में मुस्काती हुई, मेरी बेटियों से बात की। यही हमारी छोटी सी और आखिरी मुलाकात थी। फिर बीच-बीच में व्हाट्सएप पर बात हुई मगर मेल-मिलाप नहीं हो पाया।

24 जुलाई 2020 को उनके पति श्री अफलातून जी के संदेश में स्वाति मैडम के निधन की खबर आई। बहुत दुखद खबर थी, यकीन नहीं हो रहा था। उनके अंतिम समय में उनसे नहीं मिल पाने का दुख हमेशा ही रहेगा। वो हम सबके दिलों में हमेशा रहेंगी, एक अच्छी याद बनकर।

मेरी खुदा से दुआ है कि उनके शिष्यों, जान-पहचान वालों व परिवार जनों को इस दुख से उबरने की शक्ति प्रदान करें। वे जहां भी हों, हम सबको उसी मुस्कान के साथ देखती रहें।

(वरिष्ठ वैज्ञानिक, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान)

लाजवाब दोस्त

मैरी करासको

स्वाति के बारे में बहुत कुछ कहा जा सकता है और बहुत कुछ कहा जाएगा। वे तीक्ष्ण प्रतीभासंपन्न, दयालु, हंसमुख, सुरीली आवाज की धनी, पलक झपकते काम आसान कर देने वालीं और बहुत कुछ उनकी शख्सियत में समाया हुआ था। वैसे, मेरे लिए सबसे महत्व का यह था कि वे लाजवाब दोस्त थीं।

अच्छे दोस्तों की यह खासियत होती है कि चाहे उन्हें बीते कल देखो या महीनों पहले या वर्षों पहले, उनका एहसास हमेशा सुखकर होता है। स्वाति के बारे में मेरे मन हमेशा यही भाव रहा है। हमेशा मुझे वे एक अच्छी दोस्त लगीं। पीछे मुडक़र देखती हूं तो एहसास होता है कि हम एक ही शहर में तकरीबन 17 महीने या कुछ कम रहे और हम वर्षों एक-दूसरे के संपर्क में नहीं रहे। अलबत्ता अक्सर मेरे मन में उनका ख्याल आता रहता था। हाल ही में जब हम संपर्क में आए तो लगा कि कोई वक्त बीता ही नहीं, जबकि दशकों गुजर चुके थे। मुझे उनकी कमी गहरे खलेगी।

(चिकित्सक मित्र : पिट्सबर्ग, अमेरिका)

स्त्रियों के लिए उनकी कोशिशें बेमिसाल

बिशाखा भट्टाचार्य

हमारी कॉलेज की पढ़ाई में स्वाति मैम ही सबसे साफ और बारीक समझ वाली अध्यापक थीं। वे बिना कोई संदर्भ नोट देखे एकदम शांत होकर धाराप्रवाह पढ़ाया करती थीं।

हालांकि विविध गतिविधियों में उनकी शिरकत और अपने करियर तथा परिवार के इतर सोचने की उनकी समझ ने ही हम लोगों पर अमिट निशान छोड़ी। बाहर कदम बढ़ाने की ख्वाहिश रखने वाली बनारस की लडक़ी के लिए यह वाकई प्रेरणादायक था। मुझे यह भी कबूल करना चाहिए कि लैबोरेटरी में हमारी बार-बार चुहलबाजियों से वे (काफी!) झुंझला उठतीं लेकिन उनकी धीरे-से कोई चुभती-सी टिप्पणी हमें दोबारा अपने हाथ का काम पूरा करने की याद दिला देती।

एक बार 2012 में मेरी उनसे संयोग से दिल्ली में भेंट हो गई तो उन्होंने अपने नए शोध का विषय बताया। स्त्रियों के नए क्षेत्र में शोध और अध्ययन की उनकी कोशिश और खरापन मेरे दिल को छू गया। उन्होने एक निजी विफलता को अवसर में बदल लिया था और छात्राओं के लिए अध्ययन और शोध के नए क्षेत्र खोलने में जुट गई थीं।

मैं हमेशा ही भौतिक शास्त्र और कक्षा की बाहर की ढेरों चीजों के लिए उनकी मुरीद रही हूं। समाज में वंचित वर्ग के लिए काम करने की उनकी प्रतिबद्धता, बड़े सामाजिक मुद्दों पर सोचने और काम करने की उनकी क्षमता और इसके साथ उनकी विशेष अकादमिक उपलब्धियां हमेशा लुभाती रही हैं। सबसे बढक़र, दूसरों के कहने-सुनने की परवाह न करने का उनका रवैया बीएचयू परिसर में हमेशा चर्चा का विषय रहा है।

मैंने ठहर कर सोचा कि आखिर मैं उनके न रहने पर इतना भावुक क्यों हूं तो एहसास हुआ कि वाकई वे हमेशा यही कोशिश करती रहीं कि हम बाहर निकलें और अपनी उन्नति की आकांक्षा को साकार करने की दिशा में बढ़ें। उनका साथ पाना वाकई मेरा सौभाग्य था, उनके परिवार के लिए इतना बड़ा झटका सहना आसान नहीं है, लेकिन उन्हें उनके जीवन और उपलब्धियों पर यकीनन गर्व होना चाहिए।

(बी॰एससी. बैच 1988-91, सम्प्रति दिल्ली में कार्यरत)

स्पष्टवादी प्रेरणादायक नेता

स्मिता मिश्रा

मैं उन जैसी जीवंत और ताकतवर महिला से आज तक नहीं मिली। वे एकदम स्पष्टवादी थीं, जो बहुतों को पसंद नहीं आता था, लेकिन छात्र-छात्राओं के लिए यह बेहद जरूरी था। उनके इसी स्वभाव से असल में मुझमें यह कहने का साहस आया कि मैं उन्हें गलत साबित कर दिखाऊंगी। मुझे याद है कि वे क्लास में नियमित न रहने के लिए मुझे डांटा करती थीं। वे कहा करती थीं, ''आइआइटी में जाना तुम्हारे बस में नहीं है।'' मुझे मालूम था कि मुझे अपनी क्षमता में इजाफे पर जोर दे रही थीं और वास्तव में मैंने वह किया भी। आखिरकार मैं आइआइटी में पहुंची और उन्हें बताया तो उन्होंने कहा, ''मैं जानती थी कि तुम्हारे अंदर वह काबिलियत है। मुझे तुम पर बहुत गर्व है।''

मेरे कड़ी मेहनत करने में एक वजह वे भी थीं। वे नेता थीं और मेरी ख्वाहिश है कि उनकी तरह हमेशा सकारात्मक ऊर्जा से भरपूर बन पाऊं।

एक बार मैंने उन्हें अपने पति के साथ स्कूटर पर देखा। प्रोफेसर होने के बावजूद वे अपने पति के साथ स्कूटर पर पहुंची थीं। कितना सुंदर और भावुक दृश्य था। उससे पता चलता है कि कितने सरल, सहज स्वभाव की थीं, उन्हें इसकी कतई फिक्र नहीं थी कि लोग क्या कहेंगे।

मैं पिछली बार 2017 में बीएचयू में गई तो उनसे मिलना तय था। काश! मैं उनसे मिल पाती। मैं थोड़ी देर से पहुंच पाई।

यह सोचकर बड़ा दुख होता है कि अब वे नहीं हैं। मैं हमेशा विशेष मौकों पर उनसे संपर्क किया करती थी। उनकी कमी हमेशा खलती रहेगी।

छात्रा– काहिविवि 2009 से 2012, एप्लाइड जीओ फीजिक्स, आईआईटी बम्बई

उनकी विरासत बढ़ती ही जाएगी

निष्कल तिवारी

जब मैं अपने विश्वविद्यालय के दिनों की ओर मुड़कर देखती हूं तो मुझे हमेशा ही डॉ. स्वाति की ही याद साफ-साफ आती है। दूसरों की बनिस्बत उनकी याद ज्यादा साफ आने की एक वजह यह भी है कि मेरी बहन का भी यही नाम है और वह भी वैज्ञानिक है। मुझे सबसे ज्यादा उनका हमेशा हंसमुख चेहरा, उनकी सुंदर साडियां और तीखी आंखें याद आती हैं। वे फौरन ताड़ जाती थीं कि शरारती लड़कियों की सात की टोली अब आएगी, जिन्हें वे 1990-91 में भौतिक शास्त्र पढ़ाया करती थीं। हमारी शरारतें भुलाकर वे हमें भौतिक शास्त्र की अनोखी दुनिया मैं सैर कराने लगतीं।

वे सिर्फ शिक्षक ही नहीं, हमारे लिए प्रेरणास्रोत थीं.. .. सबसे अच्छी बात यह है कि उनके पास हमेशा हमारी बात सुनने का वक्त होता था।

मैंने भौतिक शास्त्र में एमएससी तो किया लेकिन बाद में निवेश बैंकिंग के क्षेत्र में चली गई और मैंने एसएससीआइएल, नॉदर्न ट्रस्ट और आइसीआइसीआइ के साथ काम किया। हालांकि एक बार मैंने अपने बच्चे के बारे में महसूस किया कि पारंपरिक स्कूल बच्चों में वैज्ञनिक नजरिया विकसित करने में मामूली ही मदद करते हैं। मैं चाहती थी कि मेरा बच्चा सिर्फ दुनिया की खूबसूरती ही न देखे, बल्कि विज्ञान के चश्मे से भी देखे-समझे। एक दिन मुझे डॉ. स्वाति का वह कहा भी याद आया कि हर किसी को सवाल करना सीखना चाहिए। अचानक मैंने तय किया कि मैं अपने बच्चे उसी तरह बड़ा करूंगी। इस तरह मैंने बच्चों के लिए एसटीईएम (स्टेम) सेंटर स्थापित करने की नए सफर की शुरुआत की।

मेरे मन में डॉ. स्वाति का ख्याल अक्सर आता रहता था और जब भी ऐसा होता तो उनका हंसमुख चेहरा, उनकी मुस्कुराती आंखें मेरी नजरों के सामने नाचने लगतीं। मुझे उम्मीद है वे जहां भी होंगी, खुश होंगी, यह जानकर कि उनके सभी विद्यार्थी विज्ञान की उनकी विरासत को जितना संभव हो, आगे ही बढ़ाएंगे...

छात्र, बी.एससी. 1988-1991, संप्रति हैदराबाद में शिक्षा केन्द्र का संचालन

अविस्मरणीय संस्मरण

प्रज्ञा दास

पिछले तीस-चालिस साल से स्वाति मैम से अपने जुड़ाव को याद करने की कोशिश कर रही हूं तो कई पुरानी धुंधली यादें आ-जा रही हैं, मगर कुछ एकदम तरोताजा हैं, जैसे कल की ही बात हो। मेरे स्नातक और स्नातकोत्तर पढ़ाई के वे दिन कितने उथल-पुथल भरे थे! मैडम स्वाति ही संकटमोचन साबित हुई थीं। मैंने बी.एससी. अंतिम वर्ष का रिपोर्ट कार्ड बस हाथ में लिया ही था। मुझे पूरी उम्मीद थी कि मैं पहले स्थान पर रहकर गोल्ड मेडल की हकदार बनूंगी। लेकिन मैंने रिपोर्ट कार्ड खोला तो अवाक रह गई। मैं दुखी और निराश हो गई। मुझे सबसे अधिक अंक के बावजूद पहले स्थान से वंचित कर दिया गया था। मैं उस अन्यायी व्यवस्था की शिकार थी जिसमें हजारों छल-छिद्र थे। मेरे कई अध्यापकों और दोस्तों ने मुझसे सहानुभूति जताई। इससे मैं और उलझन में पड़ गई और समझ नहीं आ रहा था कि इसके खिलाफ कैसे लड़ूं। ऐसे वक्त में मुझे वाकई डॉ. स्वाति ही जैसे की जरूरत थी। जब मैंने उस अन्याय के बारे में बताया तो उनकी जैसी प्रतिक्रिया हुई, उसे आज भी मैं बखूबी याद कर पाती हूं। मुझे सबसे ज्यादा इससे दिलासा मिली कि उन्होंने पूरी जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली। चिट्ठी तैयार किया और अफलातून से कहा कि इसे परीक्षा नियंत्रक के पास ले जाओ। मैंने कभी अपने को अकेला नहीं समझा। उनके मजबूत सहारे से मैं साहस और उम्मीद जुटा पाई। हम लगभग 2 साल तक लड़ने के बाद मामला जीत गए।

मेरे मन में स्वाति मैम के लिए इस कदर आदर और भरोसे का भाव पैदा हो गया कि हर आड़े वक्त में मेरे मन में ख्याल ही आता कि उनकी सलाह ले ली जाए। ऐसी ही कोई इच्छा लेकर मैं 1985 में उनके पास गई जब मैं पी.एचडी. के लिए टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च (टीआइएफआर, मुंबई) में जाने वाली थी। मैं यह देखकर फिर हैरान हुई कि उन्होंने मुझे टीआइएफआर में कई लोगों के संपर्क दिए। वे वाकईं संपर्कों की धनी थीं।

दूसरा वाकया जिसकी याद ताजा है, वह है नब्बे के दशक में अचानक उनके बेटे का आईआईटी बांबे के मेरे ऑफिस में पहुंचना। मैं उसे देखकर खुश हुई। वह स्नातकोत्तर के लिए नए संस्थान में जाने के खातिर मुंबई से गुजर रहा था तो आ गया था। मैं उसे इतना बड़ा देखकर पहचान नहीं पाई क्योंकि बारह वर्ष बाद देख रही थी। मैं उससे अपनी बी.एससी. की पढ़ाई के दौरान स्वाति मैम के घर पर मिली थी, जब वह स्कूल में पढ़ा करता था। वह अपनी माँ और अपने बारे में आत्मीयता से बात कर रहा था।

मेरी स्वाति मैम से आखिरी मुलाकात दस-बारह वर्ष पहले बीएचयू के महिला कॉलेज में हुई थी। मैंने तय किया था कि बनारस में थोड़ी देर ही रुकना पड़े, उनसे मिलकर ही जाना है। वे हमेशा की तरह पूरे उत्साह से मिलीं। उन्होंने बॉयो-इनफारमेटिक्स के क्षेत्र में कॉलेज में में अपना काम दिखाया। हमने तय किया कि फिर मिलेंगे और ईमेल के जरिए संपर्क में रहेंगे लेकिन वह कभी नहीं हो पाया। पिछले दस साल से उनके संपर्क में रहने का दुख अब साल रहा है। आखिर अब कभी भेंट नहीं हो पाएगी। उनकी आत्मा को शांति मिले!

प्रज्ञा दास, फैकल्टी सदस्य, आइआइटी बांबे

अनुवाद– हरिमोहन

डॉ. स्वाति के प्रति शोध छात्रों की
श्रद्धांजलियाँ

एक शोध छात्र के जीवन में उसके शोध मार्ग-दर्शक का विशेष महत्व होता है। डॉ स्वाति मेरी शोध मार्ग-दर्शक थीं। उनके मार्ग-दर्शन में, 2007 से 2013 तक, रहने का जो सौभाग्य मिला उससे मैं धन्य एवं कृतार्थ हुआ। उन्होंने शोध छात्र के रूप में मुझ को हमेशा मान दिया। मेरे और अन्य शोध छात्रों के भले बुरे के बारे में हमेशा सजग रहतीं थीं। हमारे ज्ञान के विभिन्न स्तरों एवं आयामों में प्रगति की अवस्था का उन्हें हमेशा भान रहता था। हमारी व्यक्तिगत जीवन की अच्छी बुरी सभी घटनाओं को पूरी तन्मयता से सुनती, समझती और उसका व्यावहारिक समाधान देती थीं। उनका मातृवत स्नेह सदैव हम पर बना रहा। वह हर परिस्थिति एवं काल में संजीदा, सकारात्मक, विवेकशील एवं विकासोन्मुखी रहती थीं। उन्होंने हमें धैर्य, निरंतरता एवं एकाग्रता का पाठ सिखाया। चैरेवेति-चरैवेति की, डॉ स्वाति, जीती-जागती मिसाल थीं।

ईश्वर से उनके सद्गति के लिए आग्रह करता हूं।

डॉ आलोक मिश्र

पीएचडी, भौतिकी, alokmishra8@gmail.com

Mob. 9795490976

आज मन बहुत व्याकुल व व्यथित है समझ नहीं पा रहा हूँ कि मन की भावनाओ को इस पत्र पर कैसे लिखूं। अगर लिखता हूँ भी तो पता नहीं मन और लेखन के मध्य तारतम्य स्थापित कर भी पाउँगा या नहीं। लेकिन यह तो समय का चक्र है इसमें होकर सभी को गुजरना है। आज हम सभी की आदरणीय, नित-वन्दनीय, चिर-स्मरणीय डॉ स्वाति मैडम हमारे बीच नहीं है। काल के क्रूर चक्र ने उन्हें हमसे छीन लिया है।

मैडम के साथ गुरु-शिष्य के रिश्ते की सारी घटनाये मानो एक फिल्म की तरह मानस पटल से गुजर रही है। मुझे याद आ रहा है वह पल जब मुझे बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय मे पीएचडी में प्रवेश मिला और स्वाति मैडम से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। लग रहा है जैसे कल की ही बात हो जब मैडम ने मुझे अपने सानिध्य में शोध करने का अवसर प्रदान किया था। उस समय मैडम से मिलकर लगा कि आज मैडम के रूप में मुझे एक संरक्षक, गुरु व् अभिभावक तीनो ही मिल गए है। मैडम के आभामंडल को शब्दों में बयान करना बेहद ही कठिन काम है, फिर भी उस समय मुझे कबीरदास जी का यह दोहा याद आ रहा था-

'गुरू गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागूं पांय।
बलिहारी गुरू अपने गोविन्द दियो बताय।।'

यह 'था' शब्द भूतकाल से निकलकर वर्तमान से होते हुए भविष्य मे भी सारगर्भित प्रतीत होता है। जैसे जैसे मेरा शोध आगे बढ़ता गया वैसे-वैसे मेरी अपने गुरु के प्रति आदर-भावना कबीरदास जी के उपर्युक्त दोहे में छिपी हुई भावनाओं की तरह और भी प्रगाढ़ होती चली गयी। शोध कार्य करते हुए बहुत बार उतार- चढ़ाव के दौर आये, हमने हमेशा मैडम को ऐसे समय अपने शोध छात्रों के साथ खड़ा पाया। हमेशा ही उन्होंने हमें सांत्वना दी, हमारी गलतियों को सुधारा और हमें नित नए आयाम छूने के लिए प्रेरित किया। पुरानी कहावत है शोध कार्य करते करते गुरु-शिष्य का सम्बन्ध भगवान्-भक्त के सम्बन्ध में परिवर्तित हो जाता है और मैडम के साथ काम करते हुए मुझे ऐसा ही प्रतीत हुआ। आज मै जो कुछ भी हूँ उसमे मैडम का शत प्रतिशत योगदान है।

मैडम का व्यक्तित्व ही अनूठा था, या यूँ कहे कि मैडम एक सच्ची कामरेड थी, उनके सान्निध्य में रहकर मैंने शोध की बारीकियो के साथ साथ जीवन जीने के उद्देश्य को भी जाना, समझा और परखा। गरीब के प्रति मैडम की सहानुभूति, गरीबों के अधिकारों के लिए नित नए संघर्ष को देखकर मेरे जीवन को नयी दिशा मिली।

मैडम से मेरी आखिरी मुलाकात राजीव गाँधी कैंसर हॉस्पिटल, दिल्ली में हुई। वहा मैंने मैडम को एक वीर योद्धा के रूप में पाया, कैंसर जैसे गंभीर बीमारी भी मैडम के कॉन्फिडेंस को तनिक भी डिगा नहीं पाई थी। इतनी गंभीर बीमारी के बावजूद मैडम हमसे (मै और डॉ रतनेश्वर सर से) अपनी चिरपरिचित व चिर-स्मरणीय मुस्कान के साथ मिली, और मुझे सपतनीक बनारस

आने का न्योता दिया। मुझे तनिक भी इल्म नहीं था वह हमारी आखिरी मुलाकात होगी। मुझे मालूम है कि मृत्यु ही जीवन का अंतिम लक्ष्य है, फिर भी स्तब्ध हूँ, इस दुखद घडी में मै भगवान से अपने गोविन्द रूपी गुरु की आत्मा की शांति और मोक्ष की प्रार्थना करता हूँ। स्वाति मैडम के बताये मार्ग पर चलकर मै हमेशा उन्हें एक सच्ची श्रद्धांजलि देने का प्रयास करता रहूँगा।

डॉ मनोज कुमार यादव

सहायक प्राध्यापक

एस आर एम यूनिवर्सिटी, सोनीपत

Email: manojiids@gmail.com

Contact: 7581911917

कुछ लोगो की चित निर्मलता हमारे मानस पटल पर एक अमिट छाप छोड़ती है। अपने छात्रों के प्रति पुत्रवत स्नेह, समर्पित निर्देशन एवं अपने मृदुल स्वभाव की वजह से वह हमेशा हमारे लाइट प्रेरणा श्रोत बनी रहेंगी। आज के समय में हमारे विश्वविद्यालयों में बहुत ही कम प्रोफेसर्स है जो अपनी विचारधारा को अपने छात्रों पे जबरन थोपने का कुत्सित प्रयास न करते हो। गुरु शिष्य के विचारो में विरोधाभास होना आम बात है। फिर भी शिष्य के विचारों को भी महत्व देना एक महान शिक्षक की पहचान है, डॉ स्वाति का चरित्र इस गुण से ओत-प्रोत था। अपने चार साल के BHU प्रवास के दौरान हमेशा उन्होंने हमारे हित एवं विकास को सबसे ऊपर रखा भले ही इसके लिए उन्हें अपने सहकर्मियों और अधिकारियो की आलोचना झेलनी पड़े। हमारी छोटी से छोटी उपलब्धि पर भी उनकी खुशी एवं संतोष हमेशा यह एहसास करता था की हम एक ही परिवार के सदस्य है। यद्यपि काहिविवि छोड़ने के पश्चात उनसे संपर्क बहुत कम हो गया फिर भी वह हमेशा हमारा उन्नयन एवं विकास जानने के लिए लालायित रहती थीं। इसमें लेशमात्र भी संदेह नहीं कि आज मैं जो भी हूँ वह स्वाति मैडम के आशीर्वाद एवं कुशल निर्देशन का ही फल है। आज जब वह हमारे बीच नहीं हैं हमें हमेशा यह दुःख रहेगा कि हमने अपने शुभेच्छु मातृवत छाया को खो दिया। अपने महान व्यक्तित्व कि वजह से वह हमेशा हमारी प्रेरणा स्रोत बनी रहेंगी।

डा के के ओझा, सहायक प्राध्यापक, सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ़ साउथ बिहार, गया

krisiids@gmail.com 9795802746

मैडम को मेरा सहृदय प्रणाम है। उनके साथ एक विद्यार्थी के रूप में 2007 से 2015 तक बिताये गए प्रत्येक क्षण स्मरणीय हैं। मैडम एक प्रभावशाली, सराहनीय, अभिभावक स्वरुप अपने कर्तव्यों के प्रति एक जिम्मेद्दार शिक्षिका थी। प्रत्येक विद्यार्थी को किसी प्रकार की समस्या आने पर मैडम पूरी तरह से सहयोग करती थीं एवं उसके कार्य के प्रति रुचि उत्पन्न करना और उसे उसके कार्य को संपन्न करने तक मार्गदर्शन प्रदान करती थीं तथा कार्यक्षमता को एक मुकाम तक पहुँचाती थीं। उनके अंदर सुसंगठित प्रबंधन की नीतिया विद्यमान थीं। वह एक साफ हृदय, सामाजिक, दयावान और प्रेम से परिपूर्ण स्त्री थीं। जिस प्रकार गुरु द्वारा शिष्य को दिए गए ज्ञान के इस ऋण को पृथ्वी पर उपलब्ध किसी भी प्रकार से नहीं चुकाया जा सकता, उसी प्रकार मैं भी जीवन पर्यन्त उनके इस ज्ञान रूपी ऋण की ऋणी रहूंगी।

मैं उनकी दिवंगत आत्मा की शांति के लिए भगवान् से प्रार्थना करती हूँ।

डॉ. मयंक रश्मि

विभाग बायोइन्फरमेटिक्स

इलाहाबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय

mayankrashmi6@gmail.com

डॉ. स्वाति एक ऐसा नाम है जिसका स्मरण होते ही एक ऐसी स्त्री की छवि मन में आती है जिसने जीवन को अपनी शर्तो पर जिया। जो बेबाकी से गलत को गलत और सही को सही बोलती थीं। मेरा और स्वाति मैडम का साथ 2010 से 2018 तक रहा। इन आठ सालों में मैंने मैडम से बहुत कुछ सीखा। सिर्फ पीएचडी विषय ही नहीं बल्कि निजी जीवन में भी उन्होंने मार्गदर्शन किया। उनकी आखिरी पीएचडी विद्यार्थी होने के कारण मुझे उनके साथ अधिक समय बिताने का अवसर मिला। डॉ स्वाति का व्यक्तित्व बहुत ही प्रेरणादायक और प्रभावशाली था। शिक्षा के साथ साथ वो सामाजिक गतिविधियों में भी काफी सक्रिय थीं। उनकी इस प्रभावशाली छवि को मै आजीवन याद रखूंगी। उनका इस तरह संसार को छोड़ कर चले जाना बहुत दुखद है। विश्वास नहीं होता कि स्वाति मैडम अब हमारे बीच नहीं है। उनकी डांट , उनके निर्देश , उनकी बाते सभी याद आती हैं। उनके साथ बहुत सारे खट्टे मीठे अनुभव रहे हैं जो हमेशा ही मन में रहेंगे।

डा. एंजेला गुप्ता

लूनावड़ा की अनाम बहन के नाम

डॉ. स्वाति

(गुजरात में 2002 में हुए नरसंहार के दरमियान एक रक्त रंजित महिला का चित्र देश भर में छपा था। चित्र उत्तर गुजरात के लूनावडा का था। उसी वर्ष दैनिक हिंदुस्तान के वाराणसी संस्करण के पत्रकार मित्र साथी सुशील त्रिपाठी ने साथी स्वाति से महिला संगठनकर्ता के नाते अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के लिए संदेश मांगा था। साथी स्वाति ने यह पत्र लिखा। 7 मार्च 2002 के दैनिक हिंदुस्तान,वाराणसी में यह छपा।)

बहन,

हम महिला आंदोलन से जुड़ी बहनें हर साल 8 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाते हैं।यह दिन इंग्लैण्ड की मजदूर महिलाओं की सम्मानजनक मजदूरी व समान वेतन की लड़ाई, उनके शोषण व शोषण पर जीत की याद में व अपने अंतर की शक्ति को पहचानने, एकजुटता बनाने के लिए होता है। किसी की भी लड़ाई (अगर वह सामाजिक रूप से सही और बुलंद हो) से खुद को जोड़ने से बेगानापन या मानसिक गुलामी के हालात नहीं बनते। मगर आज अपने रहनुमाओं ने औरत को देशों, जातियों, धर्मों,वर्गों में बांटने के नजरिए को पुख्ता कर दिया है। भुला दी गई है वह पुरानी कहावत , 'औरत चाहे किसी भी जाति की हो,अपने घर की कहारिन है'।इस कहावत में भी हमारे समाज की जाति व्यवस्था, उसके श्रम के बंटवारे व शारीरिक श्रम से जुड़ी अप्रतिष्ठा की भावना निहित है।यह सच्चाई है कि आज भी घर के अंदर व बाहर दोनों जगह औरत चाहे व किसी भी अंचल की व समाज की किसी भी श्रेणी की क्यों न हो,दबायी जाती है। अपवाद स्वरूप कुछ महिलाएं मिलेंगी जो अपनी जिंदगी के बारे में स्वयं निर्णय ले सकें,पर वह महज अपवाद ही होंगी।

भाजपा के नेतृत्व वाली राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन सरकार ने वर्ष 2001 को नारी सशक्तिकरण वर्ष घोषित किया। सेमिनारों के व्याख्यान और प्रसार माध्यमों की घोषणाओं से प्रतीत होने लगा कि नारी आंदोलन की कोई आवश्यकता अब भारतीय समाज को नहीं रही क्योंकि नारी आंदोलन के प्रमुख मुद्दों – कन्या भ्रूण हत्या,पारिवारिक हिंसा, व राजनीतिक शक्तिकरण (विधायिकाओं में 33% आरक्षण का महिला बिल)- को सरकार ने अपना लिया है व अपना मन बना लिया है कि वह इन पर शीघ्र ही कार्रवाई करेगी।

2001 के अंत तक स्पष्ट हो गया कि महिलाओं को बरगलाने के अलावा इनमें से किसी पर भी कारगर कानून बनाने की इच्छा शक्ति सरकार की नहीं है।उदाहरण के लिए कन्या भ्रूण हत्या का व्यापक कानून 1996 में ही बन गया था परंतु उस पर अमल नहीं किया गया-कड़ाई से अमल की बात तो दूर रही।मई 2001 में संशोधन हेतु सरकार ने जिस तरह की जांच समितियों का गठन किया उनकी सिफारिशों के लागू होने पर इस कानून के शिकंजे से बच निकलना ज्यादा आसान हो गया है।

दरअसल मनुवादी समाज की स्थापना को आदर्श मानने वाले संघ परिवार के राजनैतिक प्रतिनिधि स्त्री के शक्तिकरण हेतु ठोस उपाय कैसे लागू करेंगे। वादों की मृगमरीचिकाओं में जनता को भटका जरूर सकते हैं। औरतों के संदर्भ में इनकी मूल दृष्टि पर गौर करें। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तत्कालीन प्रमुख श्री गोलवलकर ने हिंदू स्त्री को पारिवारिक संपत्ति में बराबर का हिस्सा देने वाले कानून का विरोध किया था।भाजपा महिला मोर्चा की पूर्व अध्यक्ष विजयराजे सिंधिया ने सती निरोधक कानून का विरोध करते हुए कहा था,'हिंदू स्त्री को सती होने का बुनियादी अधिकार है चूंकि इससे हमारी गौरवमयी परंपरा और संस्कृति संरक्षित होती है। भाजपा महिला मोर्चा की एक अन्य पूर्व अध्यक्ष व वर्तमान में केंद्रीय समाज कल्याण बोर्ड की अध्यक्ष श्रीमती मृदला सिन्हा ने 1993 में 'द टेलिग्राफ' से साक्षात्कार में निम्नलिखित बातें कहीं थीं। जिस जिम्मेदार पद पर आज वे आसीन हैं उसके मद्देनजर स्त्री-कल्याण के भाजपाई रवैये का अंदाज लगाया जा सकता है। मृदुला सिन्हा के शब्दों में—

- स्त्री को घर के बाहर कार्य नहीं करना चाहिए। परिवार अत्यंत गरीब हो तब ही वह घर के बाहर काम पर जाए।
- स्त्रियों पर घरेलु हिंसा में क्या बुराई है? अक्सर इन

मामलों में स्त्री की ही गलती होती है।

- मैं स्त्री मुक्ति की विरोधी हूं क्योंकि स्त्री मुक्ति अनैतिकता का दूसरा नाम है।
- मैंने दहेज दिया था और दहेज प्राप्त भी किया था।
- स्त्री-पुरुष के समान अधिकारों का हम विरोध करते हैं।

भाजपा के पूर्व अध्यक्ष कुशाभाऊ ठाकरे ने एक उपचुनाव के दौरान सभी दलों द्वारा 3 से 7 प्रतिशत महिला उम्मीदवारों की संख्या के बारे में पूछे जाने पर कहा कि महिलाएं सही ढंग से चुनाव तभी लड़ सकती हैं जब सीट महिलाओं के लिए आरक्षित हो। कोई भी दल प्रतिनिधि बनाने का जुआ नहीं खेलना चाहता। स्पष्ट है कि राजनैतिक आरक्षण के बिना औरतें ज्यादा संख्या में सत्ता की गलियों में नहीं पहुंचेंगी। नजमा हेपतुल्ला या सुषमा स्वराज जैसी इक्की-दुक्की 'टोकेन', दिखाने भर के लिए प्रतिनिधि ही बनेंगी,जिसमें सत्ता चाहे किसी पार्टी की हो नियम कानून पुरुषसत्तात्मक समाज बनायेगा।

आज जब गुजरात दंगों की आग में,सांप्रदायिकता के ईंधन से दावानल सा धधक रहा है तब महिलाओं का राजनैतिक सशक्तिकरण (आरक्षण) सामाजिक परिवर्तन बलात करने के लिए एकमात्र कारगर औजार के रूप में दिखता है। महिलाएं ऐसा कानून बनाएंगी कि जिस राज्य में तीन दिन से अधिक दंगे चलेंगे वहां संविधान की एक नयी सृजित धारा के अंतर्गत राज्य के प्रशासन को पंगु मानते हुए सरकार को बरखास्त किया जाएगा और पहले चरण में राष्ट्रपति शासन होगा तथा छः महीने के भीतर विधानसभा चुनाव कराए जाएंगे। राज्य शासन की अकर्मण्यता पर जनता अपना निर्णय व्यक्त कर देगी जैसे कि उत्तर प्रदेश के भाजपा-गठबंधन की सरकार पर हालिया चुनाव ने प्रश्न खड़े किए हैं। इस चुनाव परिणाम से उपजी हताशा भाजपा के आनुषंगिक संगठनों को मंदिर निर्माण की मांग को तेज करने व बलवा फैलाने की तरफ मोड़ा है।

लूनावाड़ा (गुजरात) की अनाम बहन! यह सब तथ्य, यह विश्लेषण तुम्हारा खून से सना दुखी व लाचार चेहरा देख कर तुम जैसी दुखी बहनों के लिए संदेश है। माना कि आज तुम्हारे परिवार, पड़ोसी, साथी, किसी को भी बचाने में गुजरात की सरकार या हम देशवासी नाकामयाब रहे। मगर तुम्हें इस दरिंदगी भरी जिंदगी से हमें उबारना ही होगा। उबारना ही होगा अपने देश को,समाज को अपने बच्चों के लिए जो जन्म ले चुके हैं वे भी जो अजन्मे हैं उनके लिए भी।

गोधरा से लेकर लूनावाड़ा तक, नेल्लि (असम) से लेकर दिल्ली तक सियासी खेल औरतों की इज्जत लूट कर ही खेले जाते हैं। रघुवीर सहाय ने ठीक ही कहा है कि 'औरत की देह ही उसका देश है। इसी से वह गढ़ती भी है-इसी से वह बांटी भी जाती है जाति, धर्म, वर्ग, देश व संस्कृति के कटघरों में।

हमको अपनी बंटी हुई जिंदगियों, बंटे हुए अहसासात को महसूस कर एकजुटता बनानी होगी-ताकि हम लड़ सकें। उन हालात से जो हमें तोड़ते हैं और हमारे देश को भी।

शिवपती की त्रासदी

डॉ0 स्वाति

विगत दिनों देश के कई हिस्सों में एक विशेष प्रकार की कई घटनाएं हुई हैं। ऐसी घटनाओं का ढर्रा यह है कि दो समूहों में, जिनमें एक समूह प्रायः हरिजनों का होता है, जमीन या किसी अन्य सम्पत्ति का झगड़ा-फसाद होता है। झगड़े में दबंग समूह अपनी वीरता के सबसे बड़े कृत्य के तौर पर निर्बल समूह की एक स्त्री को निर्वस्त्र करके गांव भर में घुमाता है। जाहिर है कि एक स्त्री और यदि झगड़ा हरिजन तथा गैरहरिजन ऐसे दो समूहों के बीच हो तो प्रायः एक हरिजन स्त्री सामाजिक हिंसा का सर्वाधिक शिकार होती है। इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि झगड़े का विषय क्या है तथा वह किस ढंग से चल रहा है। दूसरे पक्ष से बदला लेने या उसे सबक सिखाने का जैसे यही सबसे प्रभावी तरीका हो कि उस पक्ष की स्त्री को सार्वजनिक रूप से जलील किया जाए। इलाहाबाद के घूरपूर कस्बे के पास दौना गांव में एक हरिजन स्त्री शिवपती के साथ इस साल जनवरी में ऐसा ही हादसा हुआ। शिवपती का बीस साल का बेटा अपने मटर के खेत में गोड़ाई कर रहा था तभी कुछ स्कूली बच्चे उसके खेत से मटर की फलियां तोड़कर खाने लगे। जब उसने मना किया तो एक तेरह वर्षीय (कुर्मी) बालक ने उसे चौधराहट दिखाते हुए डाँटा कि उसने टोका-टाको करने को हिम्मत कैसे की। साधारण तू-तू, मैं-मैं हुई। मगर उसी रात उस तेरह वर्षीय बालक के परिवार के बड़ों ने

आकर शिवपती के परिवार के लोगों को धमकाया कि अपनी सीमा में रहें, नहीं तो उनके घर की औरतों को नंगा कर गाँव में घुमायेंगे। हरिजन परिवार धमकी की इस घटना के बाद जब घूरपुर थाने में रपट लिखवाने गया तो थानेदार ने यह समझाकर लौटा दिया कि कुछ नहीं होगा। कुर्मी परिवार भी थाने गया। इस परिवार के लोग मारपीट की रपट लिखवाना चाहते थे। ऐसा कहा जाता है कि पुलिस ने उन्हें 'कुछ कर दिखाने को' उकसाया। खानापूरी के लिए एक सब इंस्पेक्टर दूसरे दिन दौना गांव गया तथा घूमकर चला आया; मगर उसी दिन शाम को जब शिवपती (उम्र 45 वर्ष) अपने परिवार की अन्य औरतों के साथ खेत से लौट रही थी तो एक दिन पहले उसके परिवार को धमकी देनेवाले परिवार के पुरुष उसे खींचकर ले गए और उसके कपड़े फाड़कर नंगा करके पूरे गांव में घुमाया। एक महिला पत्रकार से रोती हुई हताश शिवपती ने कहा कि गांव के एक भी व्यक्ति ने मेरी लाज बचाने की कोई कोशिश नहीं की, उल्टे सब खड़े-खड़े देखते रहे; 'मैं किसो को मुंह दिखाने लायक नहीं रही'। बगल में बैठा उसका बेटा मूक व स्तब्ध था कि अपने खेत को रखवाली करने का ऐसा अकल्पनीय अंजाम हुआ।

इस घटना से यह बात साफ तौर से उभरती है कि सदियों से दबाए गए लोग जब अपने मालिकाना हक के साथ या आत्मसम्मान की भाषा बोलते हैं तो उनके परम्परागत शोषकों को यह असह्य लगता है और वे उन पर तरह-तरह के अत्याचार करते हैं। आंध्र प्रदेश के श्रीत्सुन्दुर को घटना को याद करें। तकरीबन दो साल पहले आंध्र प्रदेश के एक गाँव श्रीत्सुंदुर का एक हरिजन लड़का बगल के कस्बे में सिनेमा देखने गया। हॉल में अंधेरे में उसका पांव सामने की सीट से टकरा गया। सामने बैठे लड़कों ने जब उसे डांटा तो उसने यह कहकर प्रतिवाद किया कि गलती से पाँव लग गया, जान-बूझकर ऐसा नहीं हुआ। सामने के लड़के उसी के गांव के सम्पन्न रेड्डी परिवारों के थे। उन्होंने उसे भला-बुरा कहा। सिनेमा देखकर गांव लौटने पर दबंग रेड्डियों ने हरिजन लड़के के पिता को बुलवाया जो उसी गाँव के स्कूल में मास्टर हैं तथा इन रेड्डो लड़कों के भी शिक्षक रहे थे। उनको बुलाकर धमकाया व अपमानित किया गया। उनको इधर-उधर धकियाने तथा धमकाने में उनके भूतपूर्व छात्र भी थे। हरिजन शिक्षक को अपने लड़के को सीमा में रखने की चेतावनी देकर छोड़ दिया गया। गाँव के हरिजन परिवारों तथा स्थानीय दलित संगठन के कुछ लोग थाने में रपट लिखाने गए। गाँव में पुलिस तैनात की गई। इस पर चौधरी लोगों का गुस्सा और भड़का और ये आक्रमण करने निकले। उनके अचानक आक्रमण से घबड़ाये व भयभीत हरिजन परिवारों के पुरुष जब भाग रहे थे तो तैनात पुलिस ने यह कहकर कि आक्रमणकारी उल्टा दिशा में घूम गए हैं, उन्हें नहर को तरफ भागने को कहा। नहर तक पहुँचने पर वहाँ घात लगाकर बैठे रेड्डी लोगों ने निहत्थे भागते लोगों में से करीब तोस लोगों की हत्या कर लाशें नहर में डाल दीं। इस घटना पर देश भर में हल्ला मचा और केस चला। दो समूहों के बीच ऐसी तकरार रोजमर्रा की जिन्दगी में साधारण बात हो सकती है और हल्की चखचख के बाद प्रायः भुला दी जाती है। मगर जब इसमें से एक समूह किसी ऐसी जाति का है जिसे सदियों से बोलने का अधिकार नहीं और वह 'ऊँचे लोगों' के सामने बोलने की जुर्रत करता है तो सदियों से कुंडली जमाये जातिवादी सांप फुफकार उठता है और अपने जहरीले दांत गडा देता है। जो पढ़े-लिखे शहरी लोग मण्डल कमीशन को सिफारिशें लागू किए जाने की घोषणा के पहले देश में जातिवाद के समाप्त हो जाने की बात कहते हैं, उन्हें ऐसी घटनाओं पर मनन करना चाहिए। एक बात साफ है कि ऐसी घटनाओं में पुलिस की भूमिका निष्पक्ष राज्यबल तथा न्यायसंगत - हस्तक्षेप की नहीं ही होती है। कभी वह अत्याचार को मूकदर्शक बनकर और कभी अत्याचार करने वाले समूह की सहायक बनकर ऐसी घटनाओं के होने में मदद करती है तथा उनकी संभावना को भी बढ़ाती है।

जिस पक्ष को सबक सिखाना हो उस पक्ष से सम्बद्ध स्त्री को सरेआम नंगा करके घुमाना अब शायद एक प्रवृत्ति के रूप में हो रहा है। सबसे शोचनीय बात यही है। यों तो द्रौपदी के चीरहरण के देश में यह एकदम नयी बात नहीं है। मगर कृष्ण को पूजनेवाले समाज की हया कहाँ मर गई है? 11 साल पहले 1983 में बागपत के चर्चित माया त्यागी कांड में दो पक्षों के झगड़े में होश खो बैठे एक पक्ष ने नहीं, बल्कि खुद वहाँ की पुलिस ने माया त्यागी को निर्वस्त्र कर सड़क पर घुमाया था। तब नारी संगठनों व राजनीतिक दलों ने भो काफी हंगामा किया था। क्या नारी संगठनों की सक्रियता या तेजस्विता में पिछले एक दशक में कमी आई है? राजनीतिक दल तो अब केवल मन्दिर, मण्डल जैसे वोट बैंक वाले मुद्दों पर ही अपनी शक्ति लगा सकते हैं। हमने ऊपर स्त्री को सरेआम नंगा करके घुमाए जाने को एक प्रवृत्ति का रूप लेने को बात कही है या इसकी आशंका प्रकट की है इसलिए दो और घटनाओं का जिक्र कर दें। पिछले साल उ0 प्र0 के सहारनपुर जिले में एक हरिजन (धोमन) परिवार व एक ठाकुर परिवार के बीच जमीन का विवाद चल रहा था जो अदालत तक भी पहुँच चुका था। उसी केस में कचहरी गई उषा धोमन को सहारनपुर को सड़कों पर ठाकुर परिवार के

पुरुषों ने नंगा कर घसीटा। पुलिस मूकदर्शक रही। महिला संगठनों के प्रदर्शनों व महिला आयोग के हस्तक्षेप के बाद अपराधियों के खिलाफ केस दर्ज हुआ। न्याय देखिए कब होता है?

इस साल के अप्रैल की शुरुआत में राजस्थान के अलवर जिले को एक पंचायत ने एक हरिजन महिला व उसके परिवार के एक पुरुष को मुंह काला कर गाँव से निकाल देने का आदेश दिया। महिला के पति की शिकायत थी कि उसके (पति के) नाना से उसका 'नाजायज' सम्बन्ध था। आरोप को झूठा मानते हुए उस आरोप के आधार पर पंचायत के आदेश का उस महिला ने प्रतिवाद किया। मगर पंचायत ने केवल पति को शिकायत को सही मानकर दोनों को गांव से निकाल दिया। पुरुष को (पति के चाचा को) सिर्फ गांव निकाला मिला, जबकि औरत को निर्वस्त्र कर गांव भर में घुमाने के बाद निकाला गया। भाजपा ने दौना गांव (इलाहाबाद) को घटना पर खूब हल्ला किया क्योंकि उ0 प्र0 में सपा-बसपा की सरकार है, मगर वह अलवर (राजस्थान) की घटना पर चुप्पी साधे बैठी है। इससे कम दोमुँहा आचरण इलाहाबाद को घटना पर बसपा का नहीं है। इलाहाबाद के बसपा विधायक श्री पटेल ने कहा कि दौना गांव को घटना सपा-बसपा सरकार को बदनाम करने के लिए कराई गई। यह मामले को उलझाने, लीपापोती करने और अपनो नैतिक जिम्मेदारी से भागने की प्रवृत्ति का ही द्योतक है। ब्राह्मणवाद की धुरविरोधी और दलितों के समर्थन से सत्ता में हिस्सेदार बनी बसपा के विधायक से एक हरिजन स्त्री को सरेआम नंगा करके घुमाए जाने की घटना पर ऐसी प्रतिक्रिया की उम्मीद किसने की होगी! शायद बसपा के विधायक का यह रवैया इसलिए था, क्योंकि वह इस घटना पर अपराधियों के खिलाफ उग्र होकर कुर्मियों का जातीय समर्थन खाना नहीं चाहता था। ज्ञातव्य है कि दोना गांव की हरिजन औरत को नंगा कर घुमाने वाले अपराधी कुर्मी जाति के और विधायक महोदय भी उसी जाति के हैं। यह जातिवादी आचरण है या 'जाति तोड़ो समाज जोड़ो' के नारे पर अमल?

नारी संगठन, दलित संगठन व तमाम प्रगतिशील संगठन और समूह औरत का नंगा कर धुमाए जाने की बढ़ती हुई घटनाओं पर उत्तेजित क्यों नहीं है? हममें स्त्री की पीडा और अपमान के प्रति अक्षम्य उदासीनता है। हमारी सामाजिक मान्यताओं के ढाँचे में एक औरत को सरेआम नंगा कर घुमाना उसके लिए बलात्कार की शिकार होने के बराबर की क्रूरता झेलना है। ऐसे कुकृत्यों के अपराधियों के खिलाफ दंड का विशेष प्रावधान हो, ऐसे कानून की मांग हमें करनी चाहिए। ऐसी घटनाओं को रोकने को दिशा में यह एक प्राथमिक कदम होगा।

स्त्री के बारे में समाज में एक स्वस्थ चिन्ताधारा विकसित करने की जरूरत महसूस करने की संवेदन. शीलता हममें होनी चाहिए। ऊपर उल्लिखित घटनाओं में जब दो समूहों में झगड़ा बढ़ा तो निर्बल सम्ह के किसी पुरुष को क्यों नहीं निर्वस्त्र किया गया? इसलिए कि पुरुष के स्वैच्छिक रूप से या जबरदस्ती नंगा होने को शीलहरण की घटना नहीं माना जाता। **शील की रक्षा क्या केवल स्त्री शरीर को करनी है?** अगर हमारा समाज स्त्री-शरीर को पुरुष-शरीर को तरह बिना किसो शील-कुण्ठा के अपना रहा होता, उसे स्त्री तथा उसके सगे-सम्बन्धियों को जलील करने का माध्यम न समझ रहा होता तो सरेआम स्त्री को निर्वस्त्र करने की घटनाएँ धड़ल्ले से न होती। मगर स्त्री की संपूर्ण हैसियत को उसके शरीर की हदों में ही बांध दिया गया है। स्त्री का शरीर हो उसकी जिन्दगी है। बलात्कार का अपराध चाहे एक व्यक्ति ने किया हो या सामूहिक रूप से हुआ हो, बलात्कार की शिकार स्त्री से यह अपेक्षा की जाती है कि वह बलात्कार को रोकने में अक्षम थी तो आत्महत्या कर ले। वह स्वयं भी बलात्कार या शीलहरण की घटना के बाद मृत्यु की कामना करती है और कभी-कभी जान भी देती है। किसी और अपराध में अपराध की शिकार को भी अपराधी नहीं माना जाता। न वह स्वयं (अपराध का शिकार) अपराध-बोध से ग्रस्त होता है। बलात्कार या निर्वस्त्र किये जाने के अपराध की शिकार होने के बाद स्त्री को लगता है कि वह अब समाज व परिवार में किसी को मुंह दिखाने के काबिल नहीं है। उसके आत्मीय रहे सगे-सम्बन्धी भो उस पर इस अपराध-बोध को थोपते हैं। सामाजिक विषमता के सबसे क्रूर हमले को शिकार शिवपती कहती है कि वह किसी को अपना मुंह नहीं दिखा सकती। यह हमारे समाज का यथार्थ भी है और उस पर टिप्पणी - भी। शिवपती की व्यथा हमारे मानस को झकझोरती क्यों नहीं? हम मर्माहत क्यों नहीं होते? जिसे सदियों से सर्वाधिक दबाया गया है उसे अर्थात् स्त्री को भी अगर सामाजिक न्याय में भागीदार बनाना है तो उसकी दुहाई देनेवाले हर दल व संगठन को समाज में यह चेतना फैलानी होगी कि स्त्री के साथ दुष्कर्म हो जाने से वह समाज से बहिष्कृत व लांछित नहीं होनी चाहिए। वह सिर उठाकर जीने की हकदार है। वह अपराधी नहीं; अपराधी वह है जिसने उसको इज्जत या शरीर पर हमला किया है। स्त्री के शरीर से खिलवाड़ एक घोर गैरजनतांत्रिक प्रवृत्ति है और इसलिए इसके खिलाफ जनमत बनाना हमारा एक राजनीतिक उत्तरदायित्व होना चाहिए।

लक्ष्मण रेखा के पार

डॉ. स्वाति

जुलाई-अगस्त 1996 की 'सामयिक वार्ता' में साथी स्वाति की यह टिप्पणी छपी थी। वार्ता बनारस से छपती थी।

मेरे सामाजिक-राजनैतिक जीवन के शैशव काल में 'लोकायन-लोकनिधि' संस्था की ओर से आदरणीय श्री पंकज जी ने मुझे 'भारतीय समाज में स्त्री की स्थिति' पर पर्चा पढ़ने के लिए आमंत्रित किया था।यह मेरा इस विषय पर पहला पर्चा था जो हमारे समाज में श्रम विभाजन,जाति प्रथा व परिवार तथा समाज में स्त्री की प्रतिष्ठा पर केंद्रित था। इसके बाद उस गोष्ठी मुझसे कई प्रश्न पूछे गए अधिकांश ऊलजलूल। कंझावला (दिल्ली से सटा हरियाणा का एक गांव) से दो किसान भाई भी थे। उनमें से एक ने अपने वक्तव्य में में कहा था कि अगर औरतें घर से बाहर निकलेंगी तो उन्हें बसों में,सार्वजनिक जगहों में धक्का-मुक्की तथा शरीर को स्पर्श करती हुई मर्दों की अश्लील हरकतों को सहना ही होगा। तब डी.टी.सी. बसों में औरतों के लिए आरक्षित सीटें नहीं हुआ करती थीं। अगस्त 1988 में जब श्रीमती रूपन देवल बजाज,जो कि पंजाब कैडर की आई.ए.एस. अधिकारी हैं, ने पंजाब के तत्कालीन सर्वशक्तिमान, ख्यातनामा पुलिस महानिरीक्षक कंवरपाल सिंह गिल पर आरोप लगाया कि उन्होंने अफसरों की एक पार्टी में उनके नितंब थपथपाने की अश्लील हरकत की तो ज्यादातर अखबारों ने कहा कि यह सब तो होता ही रहता है व श्रीमती बजाज को ऐसे मामलों को सार्वजनिक नहीं करना चाहिए। विशेषतः (1) जब किसी विशिष्ट व्यक्ति द्वारा हरकत हुई हो (2) जब, वह शराब के नशे में हो। श्री कपूर (पंजाब के वित्त सचिव जिनके यहां पार्टी थी) व राज्यपाल श्री सिद्धार्थशंकर राय दोनों ने हीं श्री गिल से माफी मांग कर मामले को रफा-दफा करने की सलाह दी।मगर श्रीमती रूपन देवल बजाज व उनके पति ने न्यायालय में आई.पी.सी. धारा 354 एवं 509 के तहत मुकदमा दायर किया।इनमें से धारा 354 औरत के साथ अभद्र व्यवहार करने की है। आठ साल बाद चण्डीगढ़ की एक अदालत के मुख्य न्यायाधीश श्री दर्शन सिंह ने श्री गिल को तीन महीना सश्रम कारावास व 700 रु जुर्माना की सजा दी है। उन्हें तीन दिन की मोहलत ऊपरी अदालत में अपील के लिए दी है।कुछ लोगों को शंका है कि अब ऐसे मुकदमों की बाढ़ आ जाएगी, कुछ को लगता है कि श्रीमती बजाज ने व्यक्तिगत खुन्नस के कारण अदालत के दरवाजे खटखटाए परंतु मुझे तो लगता है कि सामाजिक कुंठाओं और वर्जनाओं के कारण जो पुरुष की आखेटक प्रवृत्ति बरकरार है समाज में उस पर रोक लगेगी। अश्लील हरकत करने से पुरुष डरेंगे तथा महिलाओं व लड़कियों के समाज में स्वच्छंद घूमने में सुविधा होगी।

इस मामले में श्रीमती रूपन देवल बजाज को गलत ठहराने में दो प्रमुख स्तंभकार महिलाएं थीं –तवलीन सिंह व नीलम महाजन सिंह।उनकी चर्चा का स्तर यह था कि जिस समाज में पार्टियों में एक दूसरे के गले लोग पड़ते हैं, उसमें जो गिल ने किया वह सामान्य था। श्रीमती बजाज तिल का ताड़ बना रही हैं।

संसद के इसी सत्र में कांग्रेस की सुश्री सरोज खापर्डे ने राज्यसभा में एक विधेयक रखा है जिसमें हर गृहणी को एक साप्ताहिक अवकाश देना जरूरी हो ऐसी मांग की गई है। प्रसिद्ध वकील रानी जेठमलानी ने कहा है कि यह विधेयक अधूरा है,विवाह के समय पति की संपत्ति का आधा हिस्सा पत्नी को मिलना चाहिए। कम्युनिटी ऑफ प्रॉपर्टी (संपत्ति का आधा हिस्सा) नाम से यह फ्रांस,इंग्लैण्ड आदि कई देशों में दिया जाता है ताकि पत्नी के परिवार चलाने के योगदान की प्रतिष्ठा हो।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक - अतुल कुमार प्रसाद सिंह द्वारा 14, समसपुर जागीर, पांडवनगर, दिल्ली-110091 से प्रकाशित और दीप कलर स्कैन (प्रा.) लिमिटेड, एफ-5, गली नं. 4ए, फ्रेंड्स कॉलोनी इंडस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली-95 से मुद्रित। संपादक : अफलातून